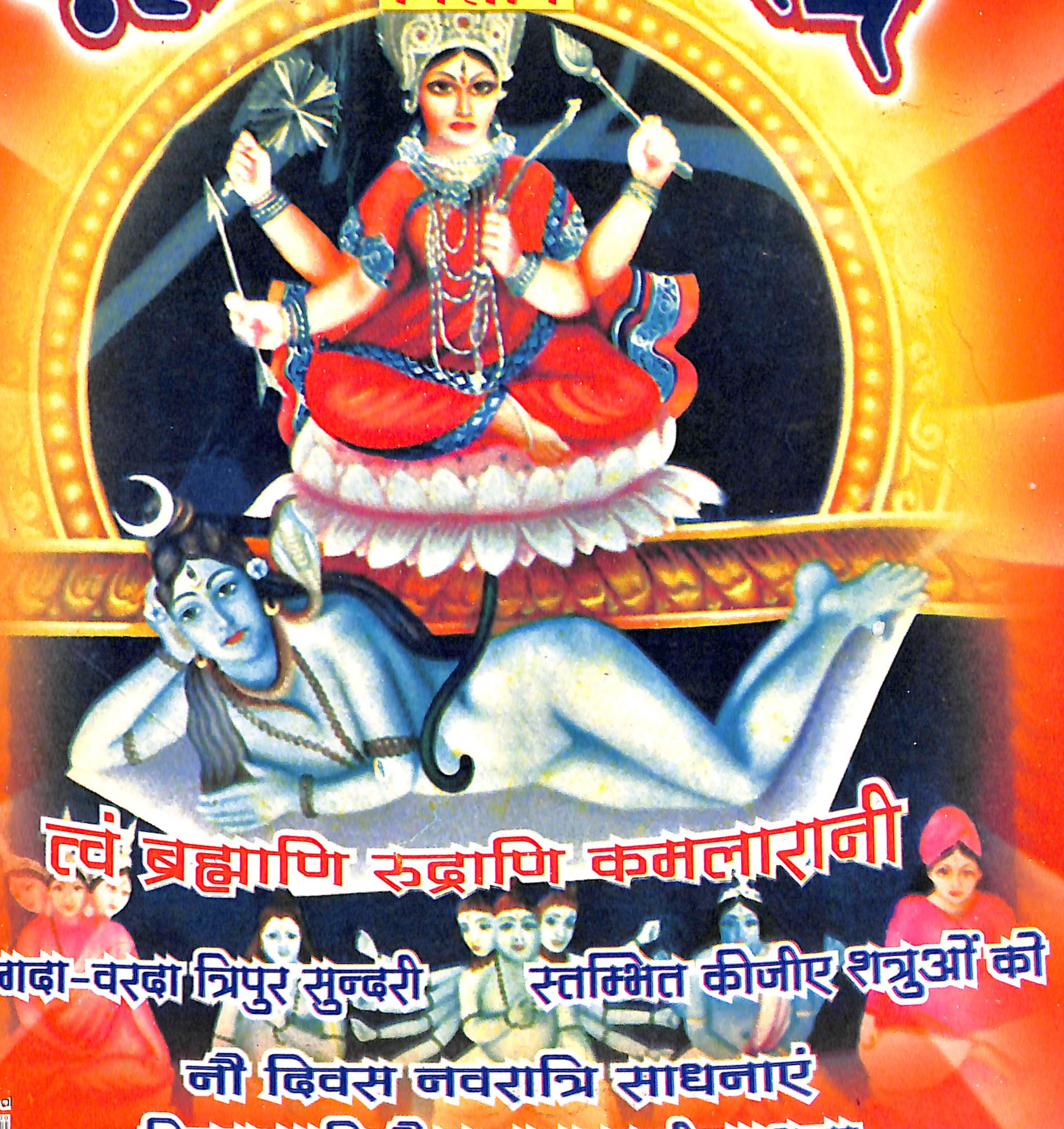
वरदे वरदे अम्बे जगदम्बे

सितम्बर 2007

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान



त्वं ब्रह्माणि रुद्राणि कमलारानी

भोगदा-वरदा त्रिपुर सुन्दरी

स्तम्भित कीजीए शत्रुओं को

नौ दिवस नवरात्रि साधनाएं

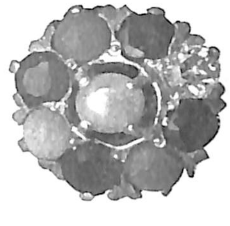
विजय प्राप्ति भैरव-महाकाली साधना

Monthly Journal

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त

नवग्रह सिद्धि युक्त

नवरत्न मुद्रिका



- क्या आपके जीवन में निरन्तर बाधाएं आ रही हैं?
- क्या आपको मान-हानि, बीमारी का भय हर समय रहता है?
- क्या आपको किसी ग्रह की विपरीत दशा चल रही है?
- क्या आपको शानि की साढ़े साती चल रही है?

ये सब ग्रह बाधा के लक्षण हैं और अनिष्टकारक ग्रहों को शांत करना और शुभ ग्रहों का उत्थान आवश्यक है। इस हेतु एक ही उपाय है - नवरत्न मुद्रिका

वर्तमान जीवन में क्यों समस्याएं इतनी अधिक बढ़ रही हैं? आपस में स्नेह की कमी, धोखा-धड़ी, रोगों में वृद्धि, मानसिक अशांति इत्यादि घटनाएं तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अंग ही बन गई हैं, इसका क्या कारण है? ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि है लेकिन समस्याएं सुलझने के बजाय उलझती ही जाती हैं।

इन सबका मूल कारण ग्रहों की उपेक्षा ही है। हमने उस आधार भूत तथ्य को ही छोड दिया है, जो कि जीवन की गति को निर्धारित करता है, पल-पल जिन ग्रहों का प्रभाव उसके जीवन की घटनाओं, उसके मन, उसके विचारों पर पड़ता है, वातावरण जिस प्रकार से ग्रहों से प्रभावित होता है, उसे ही छोड़ दिया है।

प्रत्येक ग्रह के दो स्वरूप होते हैं, प्रथम स्वरूप ग्रह जो दिखाई देता है, और दूसरा उस ग्रह के देवता का स्वरूप, ये दोनों किसी भी रूप में अलग-अलग नहीं हैं। यदि प्रति रूप में उस ग्रह-देवता के सम्बंध में पूजा-पाठ, जप-साधना सम्पन्न की जाए और इस भाव से की जाए कि अमुक ग्रह मुझ पर पूर्ण रूप से प्रसन्न हो कर मुझे आशीर्वाद प्रदान करे, तो निश्चित रूप से उसका विपरीत प्रभाव शान्त हो जाता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे पूरे शास्त्रों में यह उक्ति *'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'* प्रसिद्ध है, अर्थात् जो कुछ पिण्ड अर्थात् शरीर में है, वही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है वही शरीर में भी है, इससे अधिक ग्रहों तथा शरीर का परस्पर विवेचन क्या हो सकता है?

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। जब कोई ग्रह विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन के सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि इन्हीं ग्रहों पर आधारित होते हैं।

नवग्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप रावण को पूरे कुटुम्ब सहित समाप्त होना पड़ा, कंस का वध हुआ, राम को वन-वन भटकने के लिए मजबूर होना

पृष्ठ संख्या 30

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥



आओ! मेरे बन्धु
ध्यान के मानसरोवर में उतरें

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधना

पूजन



विशेष

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक

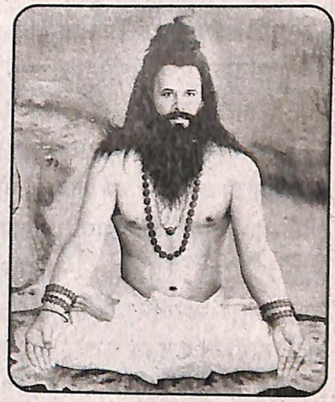
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

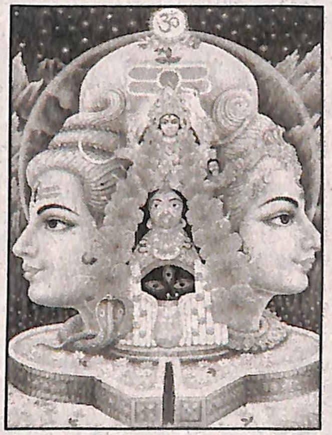
कार्यवाहक सम्पादक

श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक

श्री अरविन्द श्रीमाली





प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रतिः 18/-

वार्षिकः 195/-

वर्ष 27	अंक 09
सितम्बर 2007	पृष्ठ 88



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोनः 011-27352248, टेली फैक्सः 011-27356700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोनः 0291-2432209, टेली फैक्सः 0291-2432010

WWW address – http:/www.siddhashram.org E-mail add. – mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद–विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

दिव्यामाभां च दधतीं परितः विलसत् दिव्यकन्यावराभिः,
सिंहस्थां पूजितां तामसुरसुरगणैः भक्तभाग्यैकधात्रीं।
सौभाग्यं भावयित्रीं जनिभयहर्त्रीं भावगम्यां भवानीं;
वन्दे चन्द्रार्कबिम्बां भगवति दुर्गां पुण्यपुष्पैः परीतां॥

दिव्य आभा से युक्त अनेक दिव्य कन्याओं के घिरी हुई, सिंह के ऊपर विराजमान सुर और असुरों द्वारा संपूजित, भक्तों के भाग्य की अनुप्राणित करने वाली, सौभाग्य को उत्पन्न करने वाली, सभी भक्तों के समस्त भय को दूर करने वाली, केवल भावों से जानने योग्य, सूर्य तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, अनन्त पुण्य समूह से पावनतम भगवती दुर्गा का भावपूर्ण हृदय से मैं नमन करता हूं।

अटल विश्वास से विजयश्री मिलती है

भगवान शिव के परम भक्त थे श्वेत मुनि। वे पर्वतों की निर्जन गुफाओं में अटल आत्मविश्वास से भरे अपनी आयु के उत्तरार्द्ध में शिव उपासना करते रहते थे। एक दिन वे रुद्राध्यायी का पाठ कर रहे थे कि सामने एक विकराल आकृति देख चौंक पड़े। देखा यमदूत उन्हें लेने के लिए पहुंचा है। श्वेत मुनि ने पहले उसे नमस्कार किया और फिर अपनी पूजा में लीन हो गए। यमदूत ने उन्हें टोका। पूजा में निरन्तर विघ्न अनुभव कर मुनि ने यमदूत को समझाया - मैं मृत्युंजय महाकाल की आराधना कर रहा हूं। ऐसे में विघ्न करना ठीक नहीं है, लेकिन आज्ञा से बंधा यमदूत सुनने को तैयार न था। यमदूत ने मुनि से कहा - शिवलिंग शक्ति - शून्य है। पाषाण में शिव की कल्पना करना मूढ़ता है। अतः तत्काल चलने की तैयारी करो। अब मेरे लिए यहां प्रतीक्षा करना कठिन है।

श्वेत मुनि दूत के तर्क से सहमत नहीं थे। बोले-पाषाण भी परमात्मा ही है, क्योंकि भगवान तो कण-कण में व्याप्त है। मुनि का इतना कहना था कि दूत ने तलवार उठा ली। तलवार उठाते ही श्वेत मुनि ने अटल विश्वास के परिणामस्वरूप तत्क्षण पाषाण से भगवान प्रकट हो गए। शिव को साक्षात् देख यमदूत भाग खड़ा हुआ। मृत्यु को सम्मुख पाकर भी श्वेत मुनि ने अपने विश्वास को डिगने नहीं दिया, अतः पुण्य के भागी बने और यश के भी। संदेश दिया **विश्वास रखो और अपने कर्म पर अटल रहो, परिणाम में विजय ही मिलेगी।**

दरअसल, विश्वास अटल हो तो पाषाण से भी परमात्मा प्रकट हो जाता है। विश्वास बड़ी पूंजी है। कोई भी काम करें यदि विश्वास रखने की कला आ गई तो विजय श्री मिलकर ही रहेगी।



आओ! मेरे बन्धु
ध्यान के मानसरोवर में उतरें

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद–विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

दिव्यामाभां च दधतीं परितः विलसत् दिव्यकन्यावराभिः,
सिंहस्थां पूजितां तामसुरसुरगणैः भक्तभाग्यैकधात्रीं।
सौभाग्यं भावयित्रीं जनिभयहर्त्रीं भावगम्यां भवानीं;
वन्दे चन्द्रार्कबिम्बां भगवति दुर्गां पुण्यपुण्यैः परीतां॥

दिव्य आभा से युक्त अनेक दिव्य कन्याओं के घिरी हुई, सिंह के ऊपर विराजमान सुर और असुरों द्वारा संपूजित, भक्तों के भाग्य की अनुप्राणित करने वाली, सौभाग्य को उत्पन्न करने वाली, सभी भक्तों के समस्त भय को दूर करने वाली, केवल भावों से जानने योग्य, सूर्य तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, अनन्त पुण्य समूह से पावनतम भगवती दुर्गा का भावपूर्ण हृदय से मैं नमन करता हूं।

अटल विश्वास से विजयश्री मिलती है

भगवान शिव के परम भक्त थे श्वेत मुनि। वे पर्वतों की निर्जन गुफाओं में अटल आत्मविश्वास से भरे अपनी आयु के उत्तरार्द्ध में शिव उपासना करते रहते थे। एक दिन वे रुद्राध्यायी का पाठ कर रहे थे कि सामने एक विकराल आकृति देख चौंक पड़े। देखा यमदूत उन्हें लेने के लिए पहुंचा है। श्वेत मुनि ने पहले उसे नमस्कार किया और फिर अपनी पूजा में लीन हो गए। यमदूत ने उन्हें टोका। पूजा में निरन्तर विघ्न अनुभव कर मुनि ने यमदूत को समझाया – मैं मृत्युंजय महाकाल की आराधना कर रहा हूं। ऐसे में विघ्न करना ठीक नहीं है, लेकिन आज्ञा से बंधा यमदूत सुनने को तैयार न था। यमदूत ने मुनि से कहा – शिवलिंग शक्ति – शून्य है। पाषाण में शिव की कल्पना करना मूढ़ता है। अतः तत्काल चलने की तैयारी करो। अब मेरे लिए यहां प्रतीक्षा करना कठिन है।

श्वेत मुनि दूत के तर्क से सहमत नहीं थे। बोले–पाषाण भी परमात्मा ही है, क्योंकि भगवान तो कण–कण में व्याप्त है। मुनि का इतना कहना था कि दूत ने तलवार उठा ली। तलवार उठाते ही श्वेत मुनि ने अटल विश्वास के परिणामस्वरूप तत्क्षण पाषाण से भगवान प्रकट हो गए। शिव को साक्षात् देख यमदूत भाग खड़ा हुआ। मृत्यु को सम्मुख पाकर भी श्वेत मुनि ने अपने विश्वास को डिगने नहीं दिया, अतः पुण्य के भागी बने और यश के भी। संदेश दिया **विश्वास रखो और अपने कर्म पर अटल रहो, परिणाम में विजय ही मिलेगी।**

दरअसल, विश्वास अटल हो तो पाषाण से भी परमात्मा प्रकट हो जाता है। विश्वास बड़ी पूंजी है। कोई भी काम करें यदि विश्वास रखने की कला आ गई तो विजय श्री मिलकर ही रहेगी।



आओ! मेरे बन्धु
ध्यान के मानसरोवर में उतरें



सद्गुरुदेव गंभीर विषयों को भी सरल भाषा में इस प्रकार उद्बोधित करते है कि प्रत्येक व्यक्ति उनकी बात को समझ लेता है और वह इस प्रकार एकाकार हो जाता है मानो सारा प्रवचन केवल उसी के लिये कहा जा रहा है, 'ध्यान' जैसा गंभीर विषय जिसे सामान्य जन में मंत्र जप अथवा पालथी मारकर बैठना अथवा शक्ति चक्र या बिन्दु को एकटक देखना समझ जाता है, सद्गुरुदेव कहते है - 'ध्यान' तो इन सबसे ऊपर ज्ञान का वह स्तर है, सात चरणों की यह यात्रा है जिसमें सद्गुरुदेव अपने शिष्य को एक-एक कदम आगे बढ़ाते हैं। सद्गुरुदेव का यह सारगर्भित प्रवचन बार बार पढ़कर मनन-चिन्तन योग्य है -

जब से मानव सभ्यता ने आंख खोली, जब से ऋषियों ने सिन्धु नदी के किनारे वेदों की ऋचाओं का अध्ययन किया, जब से आर्यों ने इस ब्रह्माण्ड को देखना, परखना, प्रारम्भ किया... यह सूर्य क्या है... यह चन्द्र क्या है... ये तारे कौन से हैं... इस पृथ्वी के अलावा भी और कौन से ग्रह हैं... मनुष्य क्या है... इस मनुष्य का सृजन क्यों हुआ है... मनुष्य की उत्पत्ति का हेतु क्या है?

जब से यह सब सोचना विचारना प्रारम्भ किया है, तभी से 'ध्यान' की उत्पत्ति हुई है, क्योंकि ध्यान सम्पूर्ण मानव जाति का इतिहास है। ध्यान एक रास है, महारास है, महानृत्य, जीवन की एक उमंग, जीवन का उल्लास, जीवन का सौभाग्य... और सही अर्थों में कहा जाए तो, जीवन की पूर्णता है।

-क्योंकि मनुष्य केवल जन्म लेकर श्मशान तक की यात्रा कर अपने-आप को समाप्त कर लेता है... एक पर्दा गिर जाता है और एक दूसरा जन्म प्रारम्भ हो जाता है... इस पर्दे के पहले जो जीवन था, उस जीवन का हमें कोई होश, कोई ज्ञान, कोई चेतना नहीं रह जाती।

जिस क्षण हम जन्म लेते हैं, उसी क्षण से सिर्फ एक ही जीवन हमारे सामने होता है। यह प्रभु की कृपा है कि उसने वर्तमान जीवन और पिछले जीवन के बीच में एक पर्दा डाल दिया है, जिससे कि उस जीवन का बोझ, दुःख, दर्द इस जीवन में नहीं झेल सकें; परन्तु -

- यह जीवन क्या है?



- इस जीवन का मर्म, चेतना क्या है?

- इसको समझने के लिए कोई शास्त्र, वेद, उपनिषद्, पुराण नहीं बना है, कोई विश्वविद्यालय नहीं बना, कोई ऋषिकुल नहीं बना, किसी गुरुकुल में इसकी शिक्षा नहीं दी जा सकती... क्योंकि यह शरीर का भाग नहीं है... यह शरीर की विषय वस्तु नहीं है... यह तो आन्तरिक उल्लास है।

मन के अन्दर उतर कर जिस चेतना को स्पर्श किया जाता है उसे 'ध्यान' कहते हैं - इसका बाह्य जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता... शरीर एक अलग तथ्य है और मन बिल्कुल उससे अलग तथ्य है... सही अर्थों में देखा जाए तो शरीर और मन का कोई पारस्परिक सम्बन्ध नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य के शरीर से रश्मियां निकलती हैं और वे रश्मियां दूसरे मनुष्य के शरीर को स्पर्श करती हैं। इस रश्मियों के आदान-प्रदान से सुख-दुःख, हानि-लाभ, जीवन-मरण, प्रेम-घृणा, यश-अपयश सबकी उत्पत्ति होती है।

- मैं किसी से प्रेम करता हूं, यह केवल एक रश्मि, पहले मनुष्य के शरीर से दूसरे मनुष्य के शरीर तक पहुंच कर इस भाव की उत्पत्ति करती है। इसका मन से कोई सम्बन्ध नहीं होता, क्योंकि शरीर का शरीर से जो सम्बन्ध स्थापित होता है, वह केवल विषय-वासनाओं से सम्बन्धित है - काम, क्रोध, लोभ और अहं से सम्बन्धित है। यह वैसा ही है जैसे किसी तालाब के ऊपरी तल पर हम लहरें देख रहे हों।

वास्तविकता जानने के लिए जब तक उस सरोवर की गहराई में कूदेंगे नहीं, उसके अन्दर प्रवेश नहीं करेंगे, तब तक उसकी गहराई का अन्दाजा भी नहीं लगा सकेंगे... अन्दर के रहस्य लोकों को भी नहीं देख सकेंगे। समुद्र के गर्भ में जो मोती हैं, उनको भी नहीं परख सकेंगे... और मानव जीवन रूपी समुद्र में मोतियों की परख करने के लिए शरीर के अन्दर पहुंचना आवश्यक है, शरीर के अन्दर उतरना आवश्यक है...

और जब तक हम शरीर के अन्दर उतर नहीं सकते, जब तक हमें शरीर के अन्दर का ज्ञान नहीं है, तब तक केवल हम जीवन-मृत्यु के बीच में जूझते रहते हैं... हम रोज पैदा होते हैं, रोज मरते हैं... कभी प्रसन्न हो जाते हैं, कभी उदास हो जाते हैं... कभी चिन्तित हो जाते हैं, कभी उलासित हो जाते हैं... कभी कुछ नोट बटोर लेते हैं... कभी किसी से प्रेम कर लेते हैं और हम अपने-आप में खुश होते हुए उस श्मशान तक की यात्रा करते रहते हैं, जहां सब कुछ समाप्त हो जाना है।

- जब सब कुछ समाप्त हो जाना है, तब एकत्र किस लिए करें?

- यह एकत्र करने की क्रिया क्यों है?





– क्या एकत्र किया जाता है?

सही अर्थों में मानव भ्रम में है, एक भूल-भुलैया में है, क्योंकि मानव वह सब कुछ एकत्र कर रहा है – जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है, जिससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। वह जो धन, पुत्र, पत्नी, बन्धु-बान्धव एकत्र कर रहा है उसकी उसे जरूरत नहीं है, क्योंकि यह सब उसके साथ नहीं जा सकता। ऐसा करके वह जो असल में चीज प्राप्त करने की आवश्यकता है – उसे खो बैठता है, और जो नहीं एकत्र करने की आवश्यकता है – उसे एकत्र करता रहता है। व्यर्थ के कचरे को एकत्र कर रहा है... असल मोतियों को छोड़ रहा है।

– और असल मोतियों की पहचान अन्दर उतरने की क्रिया के द्वारा ही संभव हो सकती है... गहराई के अन्दर... मझधार में कूद कर... अपने-आप को शरीर से परे हटा कर।

'आज मैं 'ध्यान' की उन गोपनीय विधियों को, उन गोपनीय रहस्यों को ही स्पष्ट कर रहा हूं, जो 'जीवन के हीरे' हैं, जो 'जीवन की पूंजी' है, जो 'मनुष्य की वास्तविकता' है, जिसके माध्यम से मनुष्य, मनुष्य कहलाता है।'

मनुष्य को 'मन' शब्द से जोड़ा गया है... मन शब्द से मनुष्य की उत्पत्ति हुई है, शरीर शब्द से मनुष्य की उत्पत्ति नहीं हुई हैं इसका तात्पर्य यही हुआ कि 'शरीरस्य' कहना चाहिए 'मनुष्य' नहीं कहना चाहिए... और मनुष्य कहते हैं तो हमको मन को पहचानना आवश्यक है।

... जब तक हम मन को नहीं पहचानेंगे तब तक हम मनुष्य कहलाने के काबिल नहीं है, जैसे – किसी को गाय, भैंस, शेर, सियार कह सकते हैं, ठीक उसी प्रकार मनुष्य कह सकते हैं, क्योंकि जब तक हम मन और उस मन की मूल धारणा को नहीं समझेंगे, चिन्तन नहीं करेंगे तो पशु में और हममें कोई अन्तर रह ही नहीं सकता।

'मननात्र मनुष्यः'

मनुष्य तब मनुष्य बनता है, जब मन से किसी को पकड़ने में सक्षम हो जाता है। इसलिए इसके पूर्व हम जो कुछ कार्य करते हैं, वह ऊपरी हिसाब से करते हैं, और कहते हैं यह कि – मैं मन से कर रहा हूं।

प्रेमी यह कह रहा है – 'मन से प्यार कर रहा हूं।'

किसी से प्यार करते समय वह कहता है – मन से तुम्हें चाहता हूं।

... मगर ये सब शब्दों का खिलवाड़ है... क्योंकि मन तो उसके नियन्त्रण में है ही नहीं... मन, उस मन को समझा ही नहीं... उस मन को पहचाना ही नहीं तो किस अधिकार से कहता है कि –

– मैं मन से तुम्हें चाहता हूं! – इस मन के माध्यम से तुम्हें प्यार करता हूं या स्मरण के माध्यम से तुम तक पहुंचना चाहता हूं! – इस मन से मैं सब कुछ कर रहा हूं! और मन उसके नियन्त्रण में नहीं है!

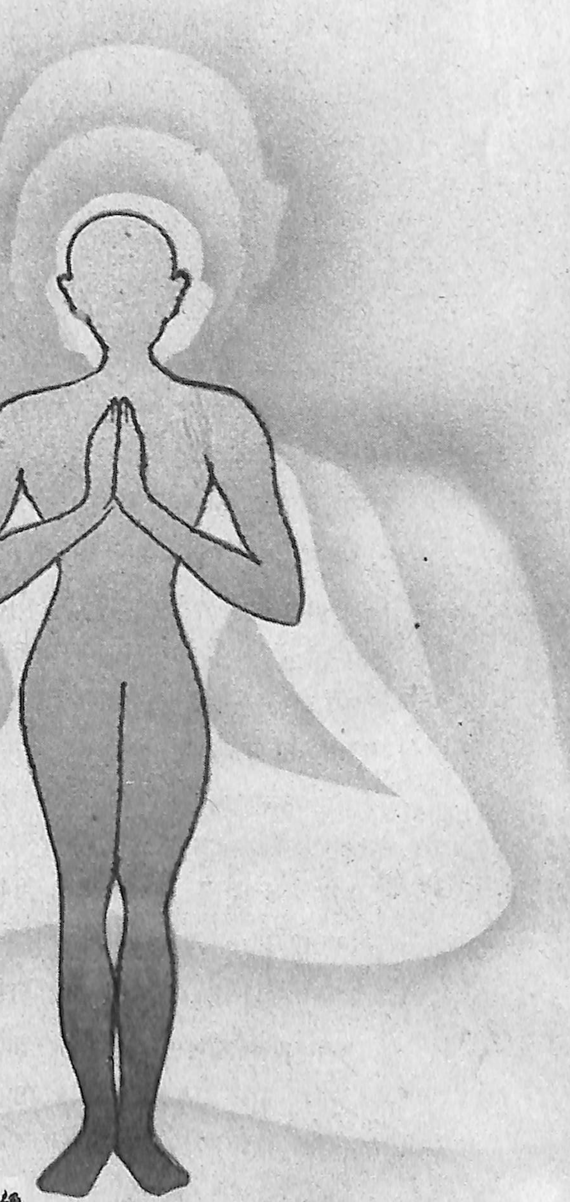
–ऐसा व्यक्ति सही अर्थों में मनुष्य नहीं बन सकता।

इस बात को समझने के लिए उन प्रश्नों का सहारा लेकर चलें, प्रश्नों के माध्यम से उत्तर दें जिससे कि यह गूढ़तम विषय सरलतम हो सके। यह इतना जटिल विषय है कि इसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता... हवा को बांधा नहीं जा सकता... तूफान को बांधा नहीं जा सकता... 'ध्यान' जैसे शब्द को बांधने के लिए 'शब्द' अपने-आप में बहुत छोटे रह जाते हैं। ध्यान अपने-आप में विस्तृत फलक है... पूरे आकाश को बांहों में नहीं भरा जा सकता... पूरे समुद्र को बांहों में नहीं समेटा जा सकता... ठीक उसी प्रकार से 'ध्यान' को भी करोड़ों पन्नों के माध्यम से भी स्पष्ट नहीं किया जा सकता... फिर भी इसे एक चिन्तन की गहराई के माध्यम से, एक विचार की आवश्यकता के माध्यम से - इसे समझना सम्भव हो सकता है।

'इसीलिए मैंने कहा कि प्रश्नों के माध्यम से उत्तरों के माध्यम से, मैं इस विषय को स्पष्ट करने का प्रयत्न करूंगा जिससे कि इसे समझा जा सके, सीखा जा सके, अहसास किया जा सके'-

प्रश्नः ध्यान क्या है?

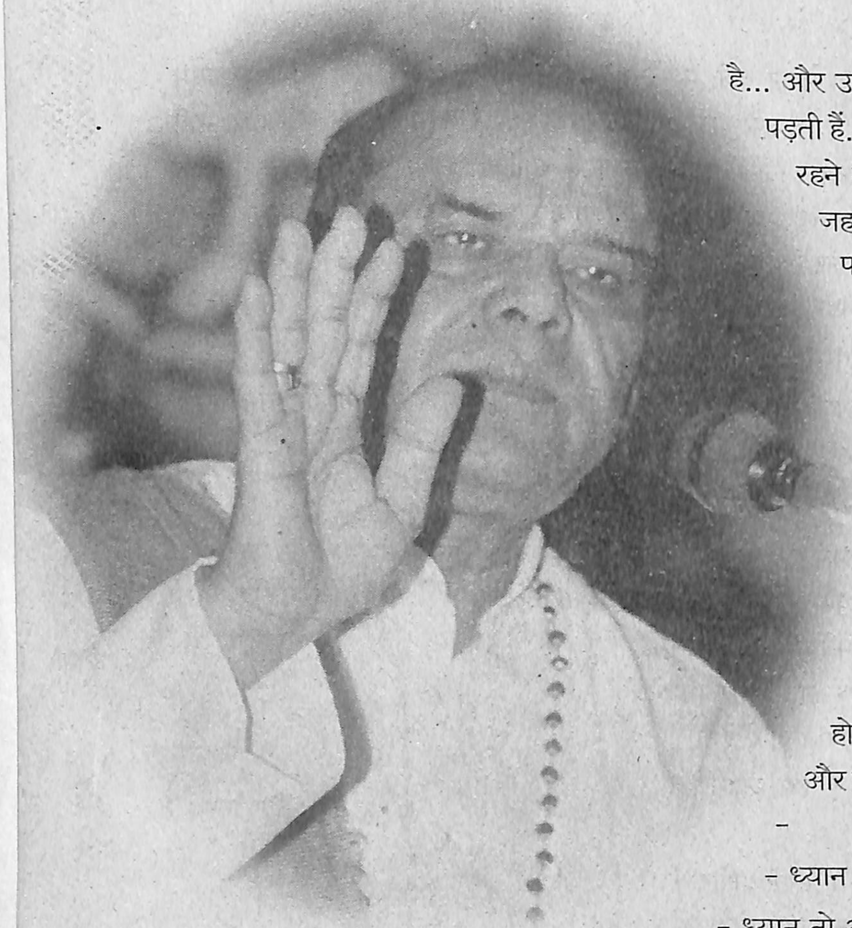
- शरीर और शरीर के भी नीचे एक ऐसी अवस्थिति है, एक ऐसी चेतना है, जिसको 'मन' कहा जाता है, उस मन को पकड़ने के लिए शरीर को छोड़ना होगा, इससे परे हटना होगा। जब हम अपने शरीर के लिए व्यर्थ का चिन्तन नहीं करेंगे... जब शरीर को सब कुछ नहीं मानेंगे... और शरीर से परे हट कर देखने का भाव पैदा करेंगे - तब हमारे सामने मन की स्थिति स्पष्ट हो पाएगी - तब एक चेतना उत्पन्न हो पाएगी... और उस चेतना को समझने के लिए आवश्यक है - हम ध्यान को समझें... बहुत गहराई से उतर कर समझें।



अपने अन्दर उतर कर, अपने जीवन को समझने के लिए, शरीर की सीढ़ी बना कर, जब पूरी तरह ऐसा समझें कि सब कुछ समाप्त हो गया है... जब हम एक 'द्रष्टा' मात्र बन जाते हैं, जो कुछ मैं देख रहा हूं - बन्धु-बान्धव, पुत्र, मान, यश, प्रतिष्ठा - ये सब कुछ ठीक वैसा ही है, जैसे -चित्रपट पर एक चित्र सा चल रहा है, हम प्रेक्षा गृह में केवल एक टिकट लेकर बैठे हुए हों... द्रष्टाभाव से।

जब व्यक्ति में द्रष्टाभाव पैदा हो जायेगा, तटस्थ रूप से देखने का भाव पैदा हो जायेगा, और देखते समय मन में न प्रसन्नता का भाव होगा, न विषाद का, न दुःख में दुखी होने का भाव होगा, न सुख में सुखी होने का भाव होगा... जब ऐसी स्थिति में पांव रखेंगे, जब हम ऐसी स्थिति में आयेंगे, जब हम तटस्थ बनने की क्रिया का प्रारम्भ करेंगे, तब 'ध्यान' का 'पहला चरण' प्रारम्भ होगा।

ध्यान, कोई वस्तु नहीं है जो बाहर से अन्दर आरोपित की जा सके। ज्ञान के माध्यम से, पुराणों के माध्यम से, वेद मंत्रों के माध्यम से ध्यान हीं किया जा सकता, क्योंकि ध्यान ऐसी चीज है ही नहीं कि - बाहर से अन्दर की ओर उतर सके। ध्यान तो अन्दर से बाहर आने की क्रिया है, अन्दर से उत्थित होने की क्रिया है, अन्दर से ऊपर उठने की क्रिया



है... और उस अन्दर तक पहुंचने के लिए हमें सीढ़ियां बनानी पड़ती हैं... सीढ़ियां बनानी पड़ती हैं - द्रष्टा भाव की, तटस्थ रहने की। सीढ़ियां बनानी पड़ती हैं - विदेह बनने की, जहां न हर्ष होता है, न विषाद होता है। सीढ़ियां बनानी पड़ती हैं - मन की, और उस मन के पास पहुंचने पर जो बिम्ब दिखाई देता है, जो चेतना जाग्रत होती है, जो विचार पैदा होता है, उसे 'ध्यान' कहते हैं।

'ध्य' इति 'न' स 'ध्यान'... बाहर का कुछ भी ध्यान न हो, बाहर कुछ भी हो रहा हो, हम सम भाव से रहें, हम तटस्थ होकर रहें, उस स्थिति को हम 'ध्यान' कहते हैं।

आंख मूंद कर बैठे रहने को ध्यान नहीं कहते। आंखें बंद कर लेने से ध्यान नहीं होता। हिमालय में जाकर बैठने से, समाधि लगाने से ध्यान नहीं होता। पातंजलि के योग दर्शन को पढ़कर, समझकर और सीखकर भी ध्यान को नहीं सीखा जा सकता, क्योंकि

- ध्यान सीखने की चीज है ही नहीं।

- ध्यान तो अनुभव करने की चीज है।

- ध्यान तो अन्दर उतरने की क्रिया को कहते हैं।

जो अन्दर उतरने की क्रिया को जान लेता है, जो मन के परे पहुंच जाता है, उसे ध्यान कहते हैं। जहां ध्यान है, वहां और कोई चीज नहीं रह सकती, या तो ध्यान रह सकता है या बाहर की कोई चीज ही रह सकती है। जब ध्यान रहेगा तो फिर पत्नी, पति, पुत्र, बन्धु-बांधव - कुछ नहीं रहेगा, दूसरे अर्थों में वह खुद भी अपने-आप में नहीं रहेगा, शास्त्र का कोई ज्ञान, चेतना, होश नहीं रहेगा। उस स्थिति में पहुंचने की क्रिया को ध्यान कहते हैं।

प्रश्न : ध्यान निराकार का किया जा सकता है या साकार का?

- हमारे यहां मूलतः शब्द हैं - एक निराकार, एक साकार... किसी ने राम को... किसी ने कृष्ण को... किसी ने ईसा को... किसी ने अन्य किसी को माना है। उनके सामने एक बिम्ब है, एक मूर्ति है, धनुष लिए हुए राम हैं, मुरली बजाते हुए कृष्ण हैं, सूली पर टंगे हुए ईसा हैं - इस प्रकार के चिन्तन करने की क्रिया को सगुण चिन्तन कहते हैं, साकार की उपासना कहते हैं।

और कुछ ऐसे चिन्तक हुए हैं, जिन्होंने सगुण और साकार की स्थिति से अपने चिन्तन को अलग हटा दिया है। वे बिल्कुल एक अलग स्थिति में खड़े हैं, 'कबीर' ऐसी पंक्ति में अग्रणी हैं, जो कहते हैं - ब्रह्म का कोई स्वरूप नहीं है, वह अजन्मा है, अविकार है, अचिन्त्य है -

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल,
लाली देखन में गई, मैं भी हो गई लाल।

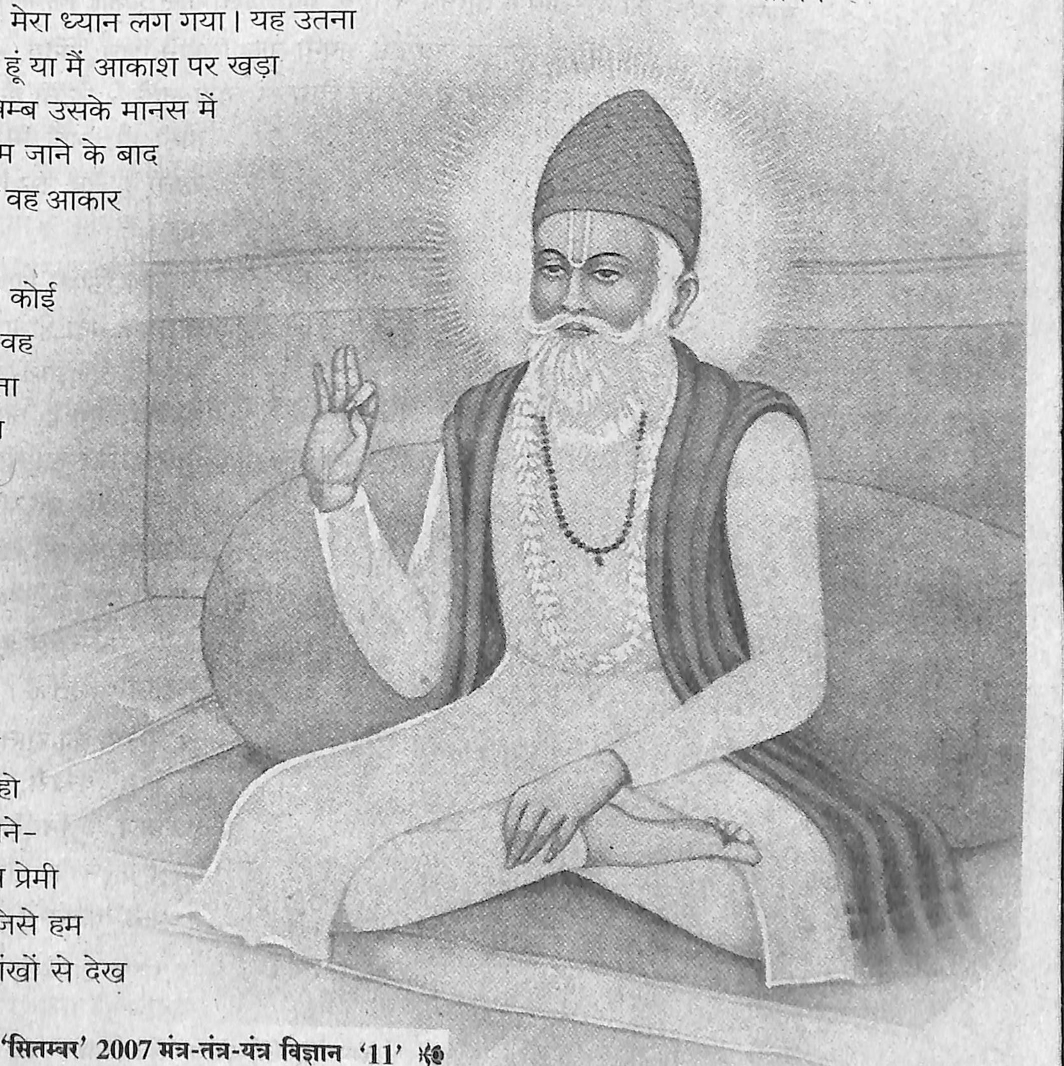
उसमें क्या खास बात है, उसे क्या कहूं, उस को क्या आकार दूं, उसका क्या रूप बताऊं - वह तो सर्वत्र व्याप्त है। प्रातः काल होने पर दसों दिशाओं में लाली भर जाती है, उस समय कोई धनुष लिए हुए व्यक्तित्व नहीं होता, बांसुरी बजाता हुआ कोई व्यक्तित्व खड़ा नहीं होता... वह तो सिर्फ एक दृश्य होता है... और वह चारों तरफ उस

दिव्य दृश्य को देखकर, बीच में अपने-आप को अवस्थित देखता है तो, वैसा ही अनुभव करता है, वैसी ही लाली जो दसो दिशाओं में होती है। जहां किसी प्रकार की मूर्ति नहीं है, किसी प्रकार का चित्र नहीं है, और किसी प्रकार का बिम्ब नहीं है - वह 'निराकार' है, जिसका कोई आकार ही नहीं है।

- ध्यान के लिए न निराकार की आवश्यकता है, न साकार की आवश्यकता है... जहां आकार है ही नहीं वहीं ध्यान है। आकार तो हमने बनाया है, हमने राम को देखा नहीं है, पोथी में जो लिखा है उसके अनुसार चित्र बनाया और उसको 'राम' की संज्ञा दे दी। हमने कृष्ण को देखा नहीं है, श्रीमद्भागवत में जो पढ़ा है, उसको एक आकार बनाकर 'कृष्ण' का नाम दे दिया - आकार के माध्यम से ध्यान की स्थिति नहीं हो सकती।

जब नव शिष्य होता है, जब नया-नया बच्चा लिखना सीखने के लिए बैठता है, उसको स्लेट पर 'क' लिख देंगे... और वह बच्चा अपने छोटे-छोटे हाथों में पेंसिल लेकर कागज पर लिखे अक्षर पर पेंसिल फेरता रहता है... कुछ दिनों के अभ्यास के बाद वह कागज हटा दिया जाता है, उसको कहा जाता है - अब तक तुमने पेंसिल से जो अभ्यास किया है, उसको तुम्हें लिखना है, और सफेद कागज पर वह उसे लिख देता है।

मनुष्य की भी ऐसी ही स्थिति है, जब वह ध्यान की ओर प्रवृत्त होता है तो, उसे एक आकार दे दिया जाता है निरन्तर देखते रहने के लिए... उस आकार को निरन्तर देखते रहने की जो क्रिया है, वह सगुण क्रिया है। उसके आंखों में 'कृष्ण' बस जाता है, उसके आंखों में राम बस जाता है, उसकी आंखों में 'नानक' या 'ईसा' बस जाते हैं... और वह बिम्ब उसके सामने स्पष्ट हो जाता है। उसकी आंख बंद होती है, तब भी अभ्यास वश वह बिम्ब ही उसके आंखों के सामने आ जाता है... और लोग मान लेते हैं कि मैंने आंख बंद की..., और इष्ट मेरे सामने साकार हो गए... और मान बैठते हैं - मेरा ध्यान लग गया। यह उतना ही बड़ा भ्रम हैं कि मैं ५००० वर्षों का हूं या मैं आकाश पर खड़ा हूं... क्योंकि निरन्तर देखने से वह बिम्ब उसके मानस में गहराई के साथ जम गया है, और जम जाने के बाद आंख बंद करने पर भी आंखों के सामने वह आकार दिखाई देता है।



यह तो ठीक ऐसी बात हुई - जब कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से बात करता है, वह निरन्तर उसके चित्र को निहारता रहता है, अपनी जेब में लिए हुए घूमता रहता है, रात को भी अपने सीने पर रखकर लेटता है... वह चित्र उसकी आंखों के सामने घूमता रहता है... और जब वह आंख बंद करके देखता है तो प्रेमिका का बिम्ब उसकी आंखों के सामने साकार हो जाता है... प्रेमिका का बिम्ब स्पष्ट होने से ऐसा नहीं हुआ कि वह प्रेमिका उसके सामने साकार हो गई, वह तो मात्र एक बिम्ब है, वह अपने-आप में प्रेमिका नहीं बन सकती। बिम्ब प्रेमी नहीं बन सकता-वह तो एक दृश्य है जिसे हम खुली आंखों से देख रहे थे या बंद आंखों से देख

रहे थे।

– और यही स्थिति निराकार की है जो साकार को नहीं मानते वे यही कहते हैं कि एक ज्योति है, एक दीपक की लौ है, एक लाली है... और एक दृश्य निरन्तर व्यक्ति के चित्त पर अवस्थित कर दिया जाता है... और वह आंख बंद करता है तो चारों ओर लाली सी दिखाई देती है – वह उसी को ध्यान समझ बैठता है... जबकि सही अर्थों में न वह पहले वाला ध्यान है, न यह ध्यान है।

ध्यान न सगुण का किया जा सकता है, न निर्गुण का किया जा सकता है। इन दोनों से परे हट कर जो अवस्थिति है, उस अवस्थिति में पहुंचने की जो क्रिया है – वह ध्यान है।

ध्यान तो बहुत आगे की स्थिति है, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि आपके सामने कोई बिम्ब हो या यह कोई आवश्यक नहीं कि – आप हिन्दू हों, मुस्लिम या सिख, ईसाई हों। यह आवश्यक नहीं कि आप राम, कृष्ण को पूजते हों। बस आप मनुष्य हैं, अतः अपने अन्दर उतर कर, सुदूर गहराइयों में पहुंच सकते हैं... और प्रत्येक मनुष्य पहुंच सकता है, यदि वह बुद्धि से परे हट सकता है तो, क्योंकि

–बुद्धि ही सगुण और निर्गुण में भेद करती है।

–बुद्धि ही साकार और निराकार में भेद करती है, ये साकार है... ये निराकार है... और जहां बुद्धि है वहां साकार और निराकार दोनों है। छल-झूठ, ढोंग और पाखण्ड भी है। इसलिए ध्यान न साकार का किया जा सकता है, न निराकार का किया जा सकता है।

प्रश्नः ध्यान का वास्तविक तात्पर्य क्या है, और उसे किस प्रकार किया जा सकता है?

– ध्यान का वास्तविक तात्पर्य जब हम अपनी बुद्धि, अपने चित्त, संदेह, भ्रम, राग, द्वेष इन सबसे परे हट कर, अन्दर की क्रिया का प्रारम्भ करते हैं – शांत चित्त से, जहां लहरें न उठती हों, जहां किसी प्रकार से तरंगें विवृत्त न होती हों, जहां निरन्तर अन्दर उतरने की क्रिया होती रहती है, तब उस स्थिति में पहुंचने की क्रिया को 'ध्यान' कहते हैं।



जहां ऊपरी भाव समाप्त हो जाता है, वहां एक नया आलोक पैदा होता है। जब हम एक छोटे कमरे से आगे बढ़ते हैं तो, आगे उससे बड़ा तेज रोशनी युक्त, एक दूसरा हॉल मिलता है, जब हम उससे आगे बढ़ते हैं तो, तीसरा और... निरन्तर गहराई में उतरते हुए... प्रकाश से प्रकाश तक... और प्रकाश से प्रकाश स्तम्भ की स्थिति तक... निरन्तर पहुंचते रहते हैं, और जब हम अन्तिम बिन्दु पर पहुंच जाते हैं, जहां बाह्य सब कुछ शून्य हो जाता है, अपने अस्तित्व का बोध भी समाप्त हो जाता है, उसे 'ध्यान' कहते हैं।

मनुष्य की सात अवस्थाएं होती हैं, जिसको कहा गया है – **१. वैखरी, २. मध्यमा, ३. पश्यन्ती, ४. अतल, ५.प्राण, ६.निर्बीज, ७. मनस** – इन सातों स्थितियों को प्राप्त करने के बाद हम जिस स्तर पर पहुंचते हैं, उसे 'ध्यान' कहते हैं।

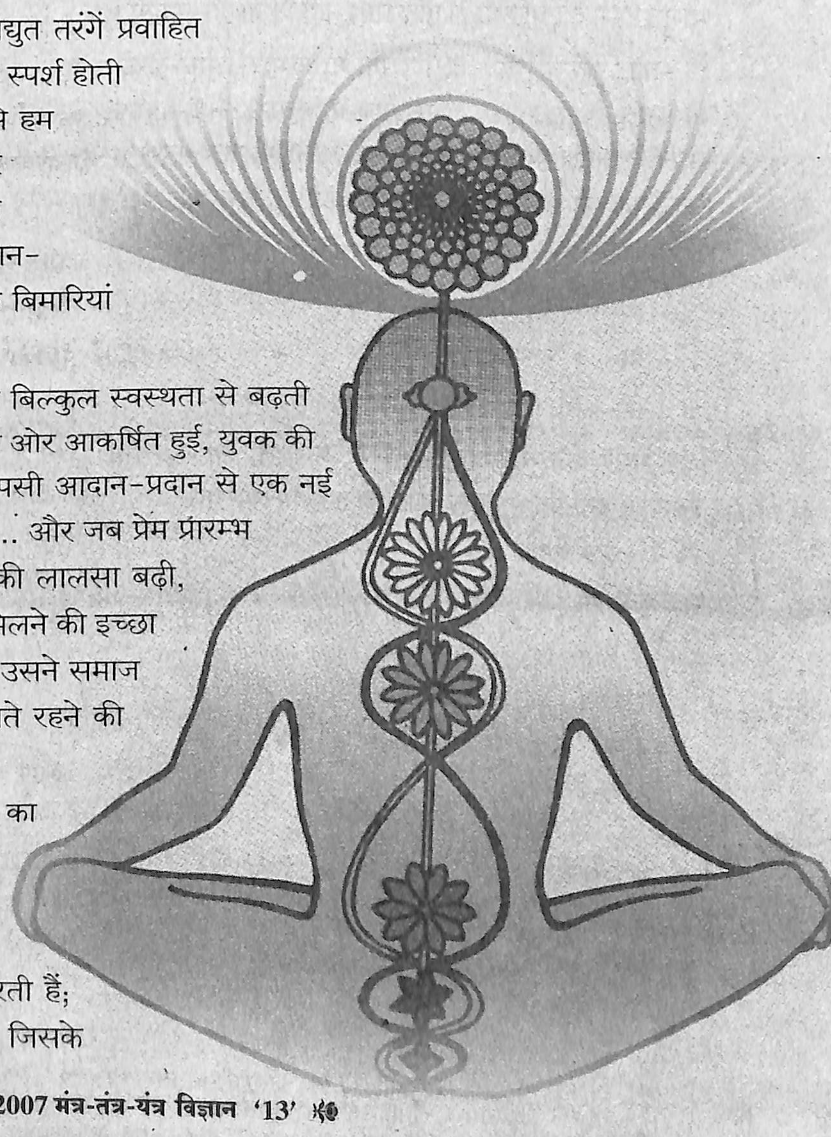
प्रथम अवस्था 'वैखरी' का तात्पर्य है – हम अपने देह

में है। वैखरी का तात्पर्य है - मैं जो कुछ कर रहा हूं, मुझे ज्ञात है कि मैं क्या कर रहा हूं... कहां आ रहा हूं?... मैं कौन हूं?... हिन्दू हूं?... या मुसलमान हूं? मैं जो कुछ कर रहा हूं वह ठीक कर रहा हूं या गलत कर रहा हूं?... इस बात का ज्ञान है कि, ध्यान भी कोई चीज है, मुझे इस बात का भी ज्ञान है कि मैं हिन्दू हूं या मुसलमान हूं।

यह अवस्था पशुओं में नहीं होती है, यह मनुष्यों में होती है। ऐसे कई पुरुष होते हैं जिनकी वैखरी अवस्था भी नहीं होती। जो पशुता और मनुष्यता में भेद समझते ही नहीं, निरन्तर पशुता की ओर अग्रसर होते रहे हैं, मगर जहां आदमी सोचने या विचारने की क्रिया प्रारम्भ करता है... और जिस समय वह यह अहसास करने लगता है, यह विचार करने लगता है कि - 'शरीर के अन्दर उतर कर, अपने-आप को भुला देने की जो स्थिति होती है, उससे अपूर्व आनन्ददायक तृप्ति प्राप्त होती है' - इतना जो सोच लेता है वह वैखरी अवस्था को प्राप्त कर लेता है, क्योंकि इतना सोचने के लिए व्यक्ति ने बाह्य संसार से परे हट कर, अन्दर उतरने के लिए अपना पांव बढ़ाया है, एक कदम आगे बढ़ाया है।

उसने यह अहसास किया है कि - बाहरी दुनिया, बाहरी सुख-दुःख... इन सबसे अलग हटकर स्वयं के अन्दर जो अपने-आप में एक अपूर्व आनन्ददायक स्थिति है, मुझे वहां तक पहुंचना है। इस स्थिति का भान होना, अनुमान होना कि मुझे उस अवस्था तक पहुंचना है जो मनुष्यता की श्रेष्ठतम स्थिति है। जिस समय ऐसे विचार मानस में उठेंगे, तब उसे वैखरी अवस्था कहा जाता है, क्योंकि उस समय वह- अपनी देह की अवस्था से परे हट कर, अन्दर की अवस्था में पहुंचने की क्रिया करते हुए अपना कदम बढ़ाता है।

मैंने तुम्हें बताया कि, शरीर से निरन्तर विद्युत तरंगें प्रवाहित होती रहती हैं, उनसे जब दूसरे शरीर की तरंगे स्पर्श होती हैं, तब उस दूसरे शरीर की तरंगों के स्पर्श से हम मालूम कर लेते हैं कि सामने वाला क्रोध कर रहा है या घृणा कर रहा है... प्रेम कर रहा है या हमें चाहता है... यह सब कुछ बाह्य तरंगों के आदान-प्रदान से ही ज्ञात होता है... इसलिए मानसिक बिमारियां बाहरी तरंगों के आदान-प्रदान से ही होती हैं।



एक व्यक्ति बिलकुल स्वस्थ था, एक लड़की बिल्कुल स्वस्थता से बढ़ती जा रही थी... तभी किसी युवक की तरंगें उसकी ओर आकर्षित हुई, युवक की तरंगें उन तरंगों से मिली... और तरंगों के आपसी आदान-प्रदान से एक नई विचार श्रेणी प्रारम्भ हुई, जिसे 'प्रेम' कहा गया... और जब प्रेम प्रारम्भ हुआ, तब नींद समाप्त हो गयी... और देखने की लालसा बढ़ी, उसकी चाहत बढ़ी, आगे बढ़ कर, ललक कर मिलने की इच्छा उत्पन्न हुई... और जहां ये तरंगें घनीभूत हुईं... उसने समाज की मर्यादाओं को तोड़ कर, निरन्तर उसमें डूबते रहने की क्रिया प्रारम्भ की।

ये बाहरी शरीर की तरंगें हैं, ये बाहरी चीजों का आदान-प्रदान है। इससे परे हट कर जो पहली बार यह सोचता है - इस बाहरी शरीर के अन्दर कुछ और क्रियाएं हैं, कुछ और तरंगे हैं, जो आन्तरिक तरंगें हैं... आन्तरिक तरंगें स्पर्श करती हैं; तब उसको भान होता है - कोई दूसरी वस्तु हैं, जिसके

माध्यम से आनन्द की उपलब्धि संभव है... क्योंकि बाह्य रूप से तो उसने सब कुछ करके देख लिया, उसने मकान बनाया, घर बसाया, पत्नी लाया, एक पत्नी, दो पत्नी, चार पत्नी, आठ पत्नी, दस औरतों से विवाह किया... पति बदले, प्रेमी बदले... तिजोरियां भरीं, बैंक बैलेन्स बनाया... उसके बावजूद उसे जो कुछ आनन्द अनुभव होना चाहिए - वह नहीं हुआ, और जब अनुभव नहीं हुआ तब उसके मानस में यह चिन्तन स्पष्ट हुआ कि - 'कोई ऐसा तथ्य है, कोई ऐसी चीज अवश्य है, जिसके माध्यम से ही आनन्द की अनुभूति हो सकती है।'

ये बाह्य सुख अपने आप में क्षण मात्र हैं। जो आज है, वह कल नहीं है। आज धन है, कल धन बचा नहीं रह सकता। धन के माध्यम से नींद नहीं प्राप्त हो सकती। धन के माध्यम से निश्चिंतता प्राप्त नहीं की जा सकती... भागते रहने की प्रक्रिया से कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता।

-कोई अलग चीज है, जिसके माध्यम से आनन्द की अनुभूति हो सकती है... और जब वे विचार उसके मानस में लहरें लेने लगते हैं, जब दृढ़ता आती है, जब मजबूती आने लगती है कि मुझे आनन्द प्राप्त करना ही है... लेकिन उसे यह पता नहीं है कि -

- आनन्द क्या चीज है?

-आनन्द कैसे प्राप्त होना है?

-इसे कहां से प्राप्त किया जा सकता है?

-मगर एक धारणा बन गई है, मजबूती आ गई, यह चिन्तन बना कि - जरूर कोई चीज है जिसके माध्यम से मैं आनन्द को प्राप्त कर सकता हूं - इस मजबूती को 'मध्यमा अवस्था' कहा गया हैं।

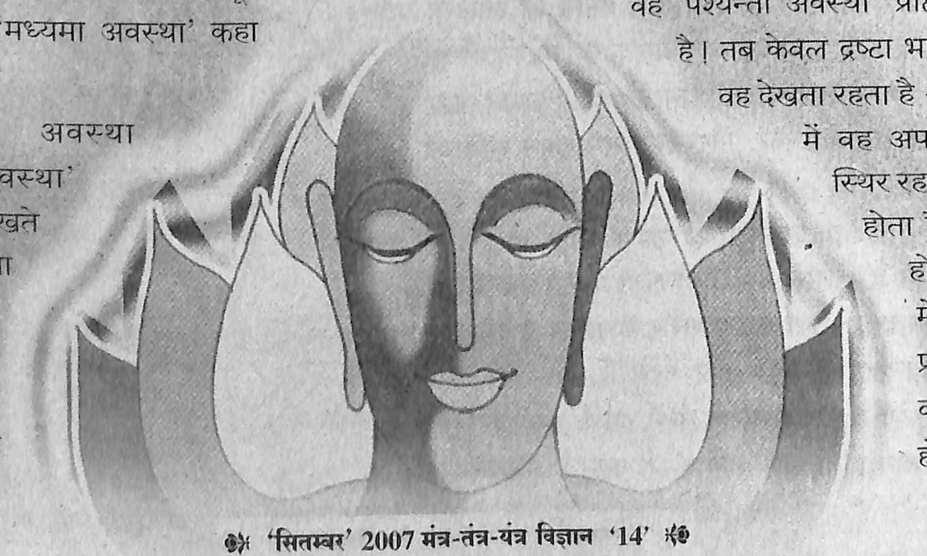
तीसरी अवस्था 'पश्यन्ती अवस्था' है। पश्यन्ती देखते रहने की क्रिया को कहते हैं। हम देख रहे हैं, मगर हम एक दूसरी आंख से देख रहे हैं, एक दूसरे तरीके से देख रहे हैं, भाव बदल गया है। हमारी धारणा और चिन्तन बदल गया है। ठीक ऐसा ही देखने का भाव हुआ, जैसे - टिकट लेकर हम सिनेमा हॉल में बैठे हैं।

सामने पर्दे पर एक पुरुष, स्त्री को भगा कर ले जा रहा है... और हमारे मन में कोई भाव उत्पन्न नहीं हो रहा है। किसी का पुत्र मर गया है... मन में कोई भाव नहीं उठ रहा है, दुख नहीं हो रहा है।

कोई लड़की बहुत सुन्दर नाच रही है... मन में कोई बहुत बड़ा विकार या विचार उत्पन्न नहीं हो रहा।

बस केवल देख रहा है... देखते-देखते तीन घंटे बीत जाते हैं, और वह कुर्त्ता झटक कर बाहर आ जाता है। मगर तीन घंटों में वह तटस्थ होकर देख रहा है। उसमें इन्वॉल्व नहीं हो रहा है। वह उस पर्दे पर जो कुछ दृश्य है, उससे अपनी तादात्यमता नहीं जोड़ रहा है। वह उस पुरुष को प्रेमिका के पीछे भागते हुए देख कर भी भाग नहीं रहा है। उस पर्दे पर लड़का मर गया है तब भी वह कुर्सी पर बैठकर छाती पीट कर रोने नहीं लग रहा है - वह केवल द्रष्टा है।

- और वास्तविक जीवन में भी वह द्रष्टाभाव आ जाता है... यदि रुपये आ गए, तब भी वह तटस्थ रूप से देखता रहता है, रुपये चले गये, तब भी तटस्थ रूप से देखता रहता है। घर में लड़ाई-झगड़ा हो गया, तब भी वह तटस्थ भाव में रहता है। उसको कोई गाली देता है, तब भी वह तटस्थ रहता है। उसकी कोई प्रशंसा करता है, तब भी वह तटस्थ रहता है... और यह तटस्थ रहने की क्रिया, उसके जीवन में उतर जाती है तो, वह 'पश्यन्ती अवस्था' प्राप्त कर लेता है। तब केवल द्रष्टा भाव रहता है, वह देखता रहता है - सभी रूपों में वह अपने-आप में स्थिर रहता है। न हर्ष होता है, न विषाद होता है... मन में किसी प्रकार की कोई चिन्ता होती ही नहीं।



वह केवल एक जगह खड़ा है, और देखता रहता है। अपने-आपको उसमें लिप्त नहीं करता, अपने-आप को उसमें जोड़ता नहीं। किनारे खड़ा होकर बराबर देखता रहता है।

समाज में चल रहा है, घर में रह रहा है। उसकी पत्नी भी है, पुत्र भी है, बन्धु-बांधव भी हैं, सामाजिक कार्य है, व्यापार भी करता है, नौकरी करता है, भगवान का भजन करता है, हरिद्वार में स्नान करता है, मगर ये सब केवल एक द्रष्टा भाव से करता है, उसमें लिप्त नहीं हो रहा है... और जब ऐसा भाव स्पष्ट हो जाता है, तो उसकी अवस्था को पश्यन्ती अवस्था कहा गया है।

अपने-आप से अलग हट कर देखने की जो क्रिया है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है, वह ध्यान की ओर बढ़ने का 'तीसरा कदम' है, एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि उसने अपने शरीर में से वह भाव ही हटा दिया जिससे सुख-दुःख विषाद पैदा होता है।

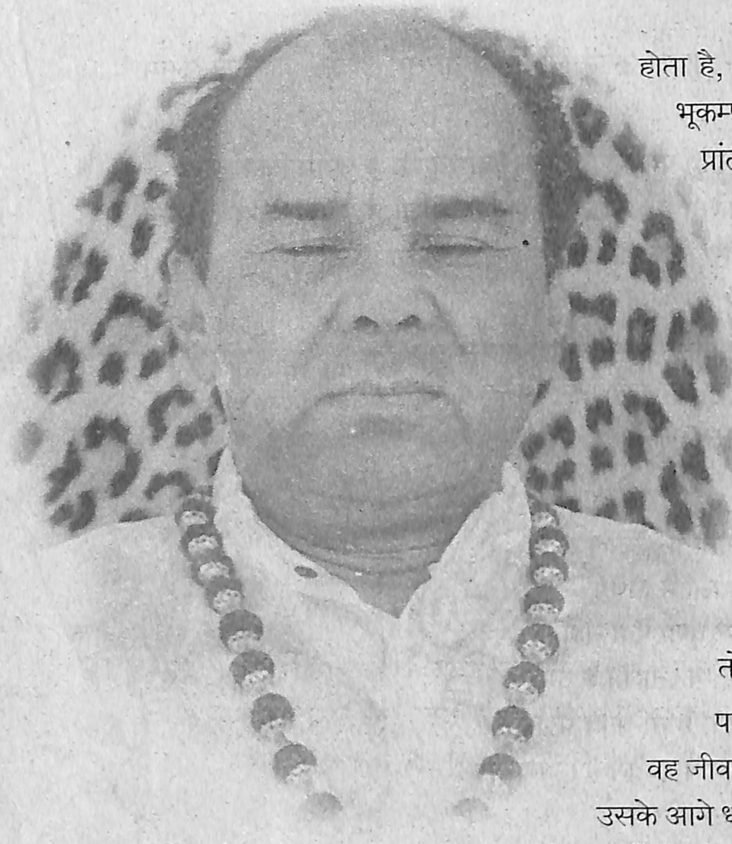


वह एक उन्मनी अवस्था में आने की क्रिया प्रारम्भ कर लेता है, उसके देखने का भाव बदल जाता है। किसी स्त्री को देखकर उसके मन में विषय-वासना पैदा नहीं होती। किसी रोगी को देखकर उसके मन में घृणा पैदा नहीं होती। वह काम वासना से प्रेरित होकर समागम नहीं करता... करता भी है तो एक निर्लिप्त भाव से करता है, और जब निर्लिप्त भाव से करता है तो ऋषि पैदा होते हैं। जब निर्लिप्त भाव से क्रिया होती है तो कृष्ण और राम पैदा होते हैं। जब निर्लिप्त भाव से काम क्रिया होती है तो बुद्ध और महावीर पैदा होते हैं।

चौथी अवस्था 'अतल अवस्था' है। अतल- जिसका कोई ओर-छोर नहीं है, वह इस संसार में होते हुए भी इस संसार का नहीं होता है। उसका परिवेश, उसका वातावरण, उसका जीवन पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है... पूरा ब्रह्माण्ड उसका साक्षीभूत बन जाता है, फिर मन में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और भाव तिरोहित हो जाता है। वह मन्दिर में भी उसी भाव से जाता है, मस्जिद में भी उसी भाव से जाता है, वह चर्च के सामने भी उसी भाव से झुकता है, वह राम के सामने भी उसी भाव से झुकता है।

- उसके मन में द्वैत का भाव धीरे-धीरे समाप्त होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, अत्यन्त गहराई में जाने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है, जहां न हिन्दू है, न ईसाई है... जहां किसी प्रकार का राग-द्वेष नहीं है। यदि कोई गालियां देता है, उसके मुंह पर थूक देता है तो, उसके चेहरे पर क्रोध का भाव पैदा नहीं होता। हर्ष, उल्लास के वातावरण में भी उसके चेहरे पर कोई विशेष भाव पैदा नहीं होता।

ऐसी जब स्थिति आती है, उस स्थिति को अतल स्थिति कहते हैं। यह ध्यान की ओर बढ़ने की अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थिति है। ऐसा व्यक्ति जीवन के सारे क्रिया-कलाप उसी ढंग से करता है, जिस ढंग से समाज का दूसरा व्यक्ति करता है। वह व्यापार भी करता है, नौकरी भी करता है, पत्नी के साथ भी रहता है... वह पति के साथ भी रहती है, मगर उसमें किसी प्रकार की हानि या लाभ की अवस्था नहीं होती... अपने-आप को वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से एकाकार कर लेता है। उसे पड़ोसी की मृत्यु पर दुःख होता है तो, वियतनाम में भी किसी व्यक्ति की मृत्यु पर दुःख



होता है, दोनों ही अवस्था में बराबर दुःख होता है। यदि बंगाल में भूकम्प आता है और उसको दुःख होता है तो अमेरिका के किसी प्रांत में भूकम्प आने पर भी उतना ही दुःख होता है।

उसके सामने देश की भावना मिट जाती है। उसके मन में यह भाव पैदा नहीं होता कि मैं भारत, पाकिस्तान, अमरीका या वियतनाम का निवासी हूं, उसके मन में यह भाव होता है कि - मैं सम्पूर्णता का एक कण हूं, और मनुष्यता का जहां भी क्षय होता है, जहां भी हनन होता है - उसको उतना ही दुःख व्याप्त होता है जितना उसके घर में क्षय होने पर व्याप्त होता है, क्योंकि वह अपने-आप को पूरे संसार में फैला देता है। वह किसी एक स्थान, एक देश, एक काल में बंधा हुआ नहीं होता, वह व्यापक हो जाता है, उसकी दृष्टि व्यापक हो जाती है... और जब ऐसी स्थिति आती है तो उसे अतल अवस्था कहा गया है।

पांचवी अवस्था **'प्राण अवस्था'** का तात्पर्य यह है कि - अब वह जीवन की उस ऊर्ध्वगामी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो रहा है, जहां उसके आगे ध्यान अवस्था है, जहां विकार नहीं है। वह किसी भी स्थान पर बैठा है, उसके मन में किसी प्रकार की भ्रांति नहीं है, क्योंकि फिर उसके लिए भूख और प्यास अपने-आप समाप्त हो जाते हैं, स्वाद समाप्त हो जाता है - मैं अचार खाऊंगा, मैं मिठाई खाऊंगा, यह भावना आती ही नहीं, कड़वा खाने पर उसे किसी प्रकार का बोध नहीं होता, मीठा खाने पर भी उसे किसी प्रकार का बोध नहीं होता... यह पागलपन की स्थिति नहीं है, यह अपने-आप से अलग हटकर निर्विकार होने की स्थिति है, जब वह मनुष्यता के माध्यम से जीवित रहता है, शरीर के माध्यम से जीवित नहीं रहता।

-यही वह अवस्था है, जहां शरीर समाप्त हो जाता है, और प्राण प्रारम्भ होते हैं।

-यही वह अवस्था है, जहां अन्नमय कोष समाप्त हो जाता है, और प्राणमय कोष प्रारम्भ हो जाता है।

-अन्नमय कोष से परे हटकर प्राणमय कोष में पहुंचने की जो क्रिया है, वह इसी तल से प्रारम्भ होती है... और जो प्राणमय कोष में पहुंच जाता है वह अपने-आप में एक संत कहलाने योग्य अवस्था में पहुंच जाता है, फिर वह वेद, पुराण, उपनिषद् और कुरान और बाइबिल इन सभी को समान रूप से देखता है - उसे रामायण में वही दिखाई देता है... क्यौंकि प्राण स्थिति के माध्यम से तो सर्वत्र प्राण एक साथ हैं... और ऐसी स्थिति में वह किसी घटना का साक्षीभूत बन जाता है, क्योंकि प्राण तो अन्दर से निकली हुई वह तरंग है जो पूरे ब्रह्माण्ड में फैली हुई है, अतः वह आंख बंद करके भी ब्रह्माण्ड में जो घटना घट रही है उसे चुपचाप देखता रहता है, उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता। किसी भी स्त्री या पुरुष को देखते ही उसका पूरा पिछला जीवन साकार हो जाता है, मात्र पिछला जीवन ही नहीं, कई-कई जीवन साकार और स्पष्ट हो जाते हैं - इस क्षण अमरीका में क्या हो रहा है; उसके सामने साकार है, क्योंकि प्राण सर्वत्र व्यापक है।

प्राण को भेद नहीं होता, प्राण तो वह तरंग होती है जो समय के एक सेकण्ड के हजारवें हिस्से में पूरे पृथ्वी के ५० चक्कर लगा लेता है... ५० चक्कर सेकण्ड के हजारवें हिस्से में, तो फिर... कहीं पर भी, कोई भी घटना है तो उसकी आंखों के सामने हो जाती है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार जैसे टेलीविजन के पर्दे पर हम कोई दृश्य देखते हैं।

वह कालातीत हो जाता है, वह काल से परे हो जाता है... जो प्रभु ने, ईश्वर ने पर्दा डाल रखा है - हमारे पिछले और इस जीवन के बीच में, जिसके कारण हमें अपना पिछला जीवन स्मरण नहीं है, परन्तु जब आदमी प्राणमय

अवस्था में आ जाता है तो, उसके सामने से पर्दा हट जाता है, पिछला जीवन उसे साफ-साफ दिखाई देने लग जाता है कि... मैं कौन हूं... मैं क्या था... मैं कहां था... किस अवस्था में किस प्रकार से था... यह जो मेरे सामने व्यक्ति खड़ा है, वह कौन सी अवस्था में है, किस अवस्था में था... इससे मेरा क्या सम्बन्ध था, इससे पहले किस जीवन में क्या सम्बन्ध था... आज से बीस जीवन पहले क्या सम्बन्ध था और ५० जीवन पहले क्या सम्बन्ध था... इससे अगले जीवन में क्या सम्बन्ध होगा... और इससे बीस जीवन आगे के जीवन में क्या सम्बन्ध होगा?

क्योंकि काल को फिर वह टुकड़ों में नहीं देखता। पूरे काल को समग्र रूप से एक साथ देखता है, और समग्र रूप से देखने की क्रिया का जो भान होता है - वह प्राणगत अवस्था में पहुंचने पर ही संभव होता है। इसीलिए प्राणगत अवस्था में पहुंचा हुआ व्यक्ति - एक उच्चकोटि का परमहंस अवस्था प्राप्त व्यक्ति कहलाता है, एक संत कहलाता है, एक तपस्वी कहलाता है, जीवन-मुक्त कहलाता है, क्योंकि - वहां जीवन की स्थिति नहीं है, एक प्राण की अवस्थिति है।

- वे प्राण जो समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं।
- वे प्राण जो अपने आप में निर्विकार, निर्विचार हैं।
- वे प्राण जो ब्रह्म का साक्षात् स्वरूप हैं।

प्राणगत अवस्था में पहुंचने पर ईश्वर उसके सामने उपस्थित नहीं रहता क्योंकि, जहां ईश्वर का बोध होगा - वहां राम, कृष्ण, नानक, ईसा का बोध होगा... इससे सर्वथा अलग हटकर वहां पर उसके सामने एक ब्रह्म की अवस्था प्रारम्भ हो जाती है - एकमात्र ब्रह्म होता है, जो सर्वत्र व्याप्त है।

प्राणगत अवस्था जीवन की एक उच्चतम अवस्था है, एक श्रेष्ठतम अवस्था है। जहां पर भूख, प्यास, नींद सुख-दुःख, विलाप कुछ महत्व नहीं रखता। जहां देश, काल, पात्र महत्व नहीं रखते। वह समस्त संसार को बैठा-बैठा निर्विकार भाव से देखता रहता है। वह समझ लेता है - कहां क्या हो रहा है, किस प्रकार से हो रहा है। उसका प्राण समय के हजारवें हिस्से में अमरीका, वियतनाम, अफ्रीका के घने जंगलों में पहुंच जाता है... उन घने जंगलों में शेरों की लड़ाई को देख लेता है... अफ्रीका में आदिवासियों में हो रहे युद्ध को देख लेता है - यह श्रेष्ठ स्थिति प्राण अवस्था में जाने पर ही संभव होती है।

अगला तल 'निर्बीज अवस्था' है। निर्बीज का तात्पर्य है - प्राणगत अवस्था से भी आगे पहुंचने की क्रिया। प्राणगत अवस्था में तो विश्व में या ब्रह्माण्ड में जो घटना घटित होती है, हम उसके साक्षीभूत मात्र होते हैं; हम केवल द्रष्टा होते हैं; केवल देखते रहते हैं - इस समय अफ्रीका में क्या हो रहा है, न्यूयार्क में क्या हो रहा है, वाशिंगटन में क्या हो रहा है... या मेरी पत्नी क्या कर रही है... वह चुपचाप उसी प्रकार देख सकता है जिस



प्रकार वह अपने आस-पास पड़ी वस्तुओं को देख सकता है।

जब वह इसके आगे बढ़कर **'निर्बीज'** अवस्था में पहुंचता है तो, उसमें क्षमता आ जाती है जिससे वह उन कार्यों में हस्तक्षेप भी कर सके, जहां गलत हो रहा है उसको सुधार सके, जहां हिंसा हो रही है उसे दूर करने की क्रिया कर सके, अपने मन की तरंगों के माध्यम से हिंसा की घटना को रोक सके, उनको परे हटा सके... उसमें वह स्थिति पैदा हो जाती है जब वह एक हिंसक पुरुष को भी अहिंसक बना सकता है। वह सर्प-विष को भी अमृतमय बना देता है, वह बिगड़े हुए सांड को भी अपने आप में शांत और सरल बना देता है, वह शेर को भी पूर्ण सदाचारी बना देता है, वह युद्ध प्रेमियों को भी शांत और सरल चित्त बना सकता है।

- क्योंकि उसमें क्षमता प्राप्त हो जाती है कि वह प्रकृति में हस्तक्षेप कर सके। मनुष्य के विचारों में हस्तक्षेप करके उस के अन्दर जो जहर है, जो विषैलापन है, जो हिंसा है, उसको दूर कर सके... और ऐसा व्यक्ति सामने वाले मनुष्य के अन्दर से काम की भावना को दूर कर सकता है, क्रोध की भावना को दूर कर सकता है। इतनी हिंसाएं होती हैं उन हिंसाओं को दूर करने की सामर्थ्य उसमें आ जाती है। लोभ के वशीभूत होकर जितनी हत्याएं हो रही हैं - उस लोभ को, उस पाशविक प्रवृत्ति को मनुष्य के अन्दर से हटाने की क्षमता, ऐसे व्यक्ति में आ जाती है। उसे यह क्षमता प्राप्त हो जाती है कि अन्दर की दुष्प्रवृत्तियों को परे धकेल कर उनको सही चिन्तन दे सके। हिंसक को अहिंसक बना कर उससे रचनात्मक काम ले सके।

एक हिंसक व्यक्ति चाकू से किसी को घायल कर सकता है और... यदि निर्बीज सम्पन्न व्यक्तित्व उसकी उस भावना को हटा कर उसके हाथ में पेंसिल और कागज दे देता है तो, वह एक अच्छा चित्र भी बना सकता है... उसमें हिंसात्मक प्रवृत्ति थी, पर हिंसात्मक प्रवृत्ति ही पेंसिल के माध्यम से सुन्दर चित्रकारी में परिवर्तित हो गयी... पूरा रूपान्तरण ही कर दिया... प्रवृत्ति तो रही पर प्रवृत्ति को रूपान्तरित कर दिया... - यह उच्चतम अवस्था है, यह महत्वपूर्ण अवस्था है क्योंकि, ऐसा ही व्यक्ति गुरु बनने का सामर्थ्य रखता है, यहीं पर सद्गुरु बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। अभी तक इसके पूर्व जो अवस्था थी, वह केवल गुरु की अवस्था थी। लेकिन इस तल पर एक सद्गुरु बनता है क्योंकि, उसकी भावना यही रहती है - 'मैं अपने शिष्य की काम, क्रोध की प्रवृत्तियों को रूपान्तरित करूं, उसको एक नया स्वरूप दूं, उसको एक नया चिन्तन दूं, एक नया विचार दूं... एक नयी धारणा दूं।'



इसके आगे की स्थिति 'मनस अवस्था' है। इस तल पर सम्पूर्ण रूप से मन को अपने हाथों में लीन कर देने की प्रवृत्ति है। इस जगह पर पूर्ण समाधि, पूर्ण निश्चिन्तता प्राप्त करने की अवस्था है, फिर उसके मन में कोई भावना नहीं रहती क्योंकि, मन उसके नियन्त्रण में है... फिर मन उसको नहीं नचा सकता है... वह मन को नचा सकता है। सातवें तल को जब वह स्पर्श करता है तब पूर्ण ध्यान अवस्था होती है... जहां अपना कोई होश नहीं रहता... होश में रहते हुए भी होश में नहीं रहता...

बिना होश में रहते हुए भी होश में रहता है...वह जाग्रत और चैतन्य होते हुए पूर्णता प्राप्त होता है। उसके मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह नहीं होता, उसके अन्दर किसी प्रकार की कोई प्रवृत्ति नहीं होती। वह तो तटस्थ भाव से इस संसार में रहता हुआ सभी कार्य करता रहता है... उसका मन पूर्ण रूप से उसके नियन्त्रण में होता है, अपना ही नहीं, सामने वाले व्यक्ति, शिष्य या मनुष्य जो भी हो, उसके मन पर भी वह नियन्त्रण प्राप्त कर सकता है। मन को रूपान्तरित कर, एक डाकू को वाल्मीकि बनाया जा सकता है... उसको ऊंचाई पर उठाया जा सकता है - उस जगह, उस गहराई में जाने की क्रिया को 'ध्यान' कहते हैं। जब मनुष्य उस जगह पहुंच जाता है फिर भले ही उसकी आंखें बंद हों, तब भी ध्यानावस्था में होता है। फिर भले ही उसकी आंखें खुली हों, तब भी ध्यानावस्था में होता है।

प्रश्नः इसे किस प्रकार किया जा सकता है?

- इसे प्राप्त करने के लिए जो रास्ता बताया गया है, इस रास्ते पर चलने की क्रिया को समझना आवश्यक है, क्योंकि यह निरन्तर, सतत चलने की क्रिया है। हो सकता है प्रारम्भ में यह पगडण्डी अटपटी हो या हो सकता है कि यह राह अपने आप में अस्पष्ट हो क्योंकि, मनुष्य को यह ज्ञान नहीं है कि - मैं एक अवस्था से दूसरी अवस्था में कैसे जाऊं?

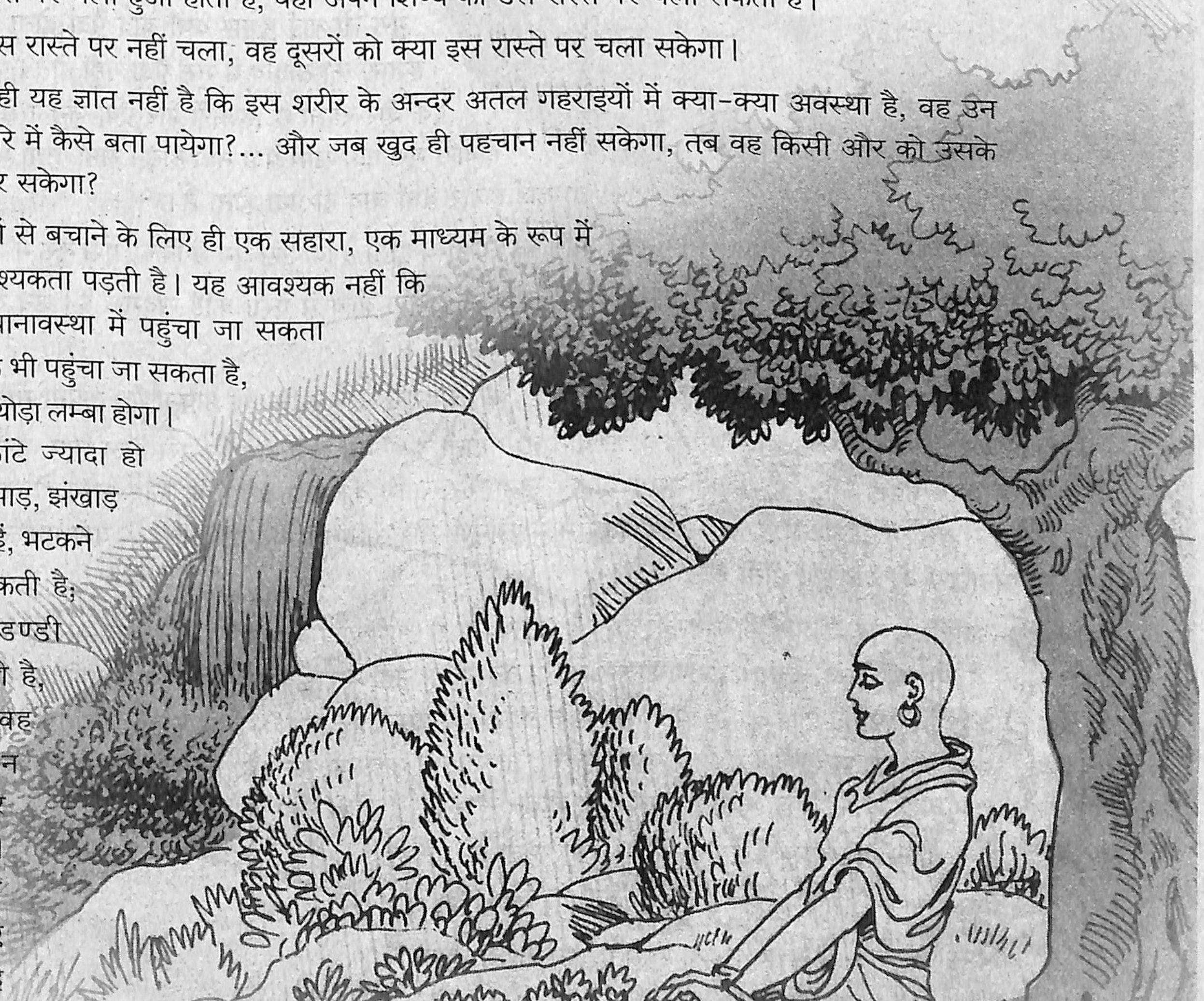
-यहां पर गुरु की आवश्यकता होती है... और गुरु, गैरिक वस्त्र पहने हुए व्यक्ति को ही गुरु नहीं कहते, जो इस अवस्था में पहुंचा हुआ होता है, उसे 'गुरु' या 'सद्‌गुरु' कहते हैं।

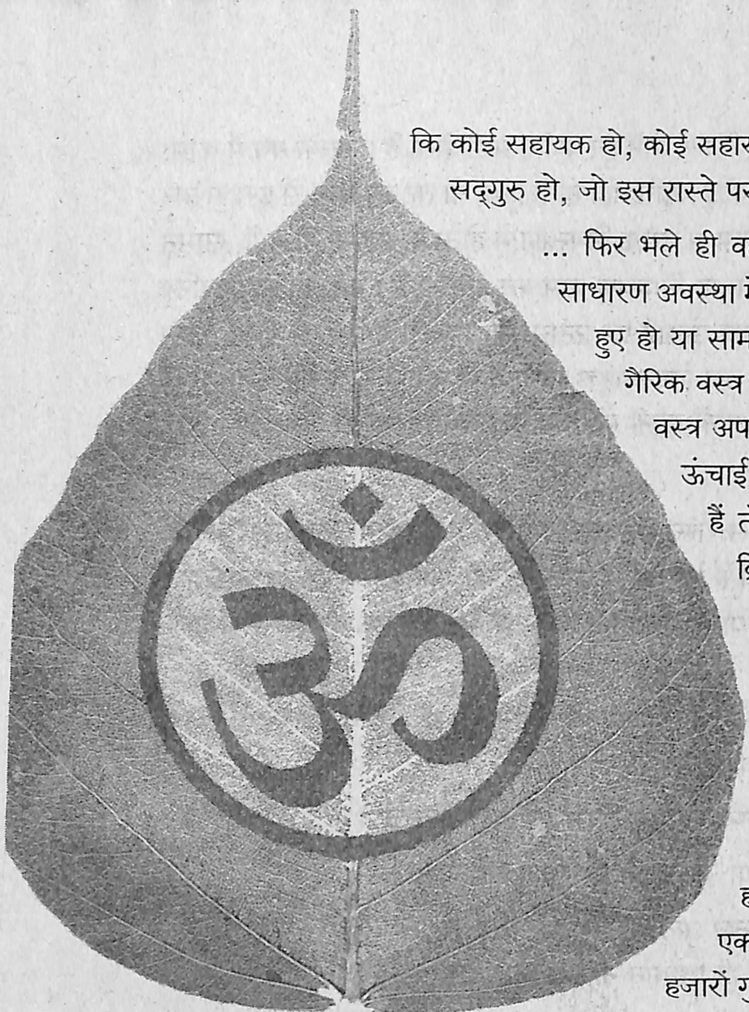
- जो इस रास्ते पर चला हुआ होता है, वही अपने शिष्य को उस रास्ते पर चला सकता है।

- जो स्वयं इस रास्ते पर नहीं चला, वह दूसरों को क्या इस रास्ते पर चला सकेगा।

जिसको खुद ही यह ज्ञात नहीं है कि इस शरीर के अन्दर अतल गहराइयों में क्या-क्या अवस्था है, वह उन अवस्थाओं के बारे में कैसे बता पायेगा?... और जब खुद ही पहचान नहीं सकेगा, तब वह किसी और को उसके अन्दर कैसे उतार सकेगा?

इन कठिनाइयों से बचाने के लिए ही एक सहारा, एक माध्यम के रूप में सद्‌गुरु की आवश्यकता पड़ती है। यह आवश्यक नहीं कि गुरु हो तभी ध्यानावस्था में पहुंचा जा सकता है... प्रयत्न करके भी पहुंचा जा सकता है, परन्तु वह रास्ता थोड़ा लम्बा होगा। उस रास्ते में कांटे ज्यादा हो सकते हैं; उसमें झाड़, झंखाड़ ज्यादा हो सकते हैं, भटकने की क्रिया हो सकती है; घबरा कर पगडण्डी बदली जा सकती है, हो सकता है वह गन्तव्य तक न पहुंचे, कहीं और चला जाए। इसलिए इसको प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है





कि कोई सहायक हो, कोई सहारा हो, कोई माध्यम हो, कोई गुरु हो जो सही अर्थों में सद्गुरु हो, जो इस रास्ते पर चल चुका हो, जो उस अवस्था में पहुंच चुका हो।

... फिर भले ही वह इस दुनिया में रहे या हिमालय में रहे। फिर वह साधारण अवस्था में रहे या दिखाई दे। फिर वह भले ही गैरिक वस्त्र पहने हुए हो या सामान्य अवस्था में रहे या दिखाई दे। फिर वह भले ही गैरिक वस्त्र पहने हुए हो या सामान्य श्वेत वस्त्र पहने हुए हो - वस्त्र अपने आप में कोई महत्व नहीं रखता। लम्बाई, मोटाई, ऊंचाई अपने आप में कोई महत्व नहीं रखता। महत्व रखता हैं तो - उसका चिन्तन, उसकी गहराई में उतरने की क्रिया, इस रास्ते पर चलने का भाव। इस रास्ते से परिचित होने की क्रिया।

जो इस रास्ते पर चल कर ध्यान की अवस्था तक पहुंच गया है, ऐसा कोई सद्गुरु मिल जाता है तो मनुष्य का सौभाग्य है, इस पूरी मनुष्य जाति का सौभाग्य होगा, यदि ऐसा व्यक्तित्व मिले; मगर ऐसा गुरु तो कई हजार वर्षों बाद पैदा होता है, सैकड़ों-हजारों की तादाद में गुरु पैदा नहीं होते। एक जंगल में एक शेर रहता है, हजारों शेर एक जंगल में नहीं रहते। हजारों गुरु एक साथ पैदा नहीं होते। सही अर्थों में तो सद्गुरु दो ढाई हजार वर्षों बाद ही पैदा होता है।

- और ऐसा गुरु मिल जाता है तो मनुष्य जाति का सौभाग्य होता है कि उस युग में किसी ऐसे गुरु ने जन्म लिया।

यह मनुष्यता का अपने-आप में सौभाग्य होता है कि उसके बीच में ऐसा कोई सद्गुरु है। उन व्यक्तियों को अपने-आप में सौभाग्य होता है कि वे ऐसे सद्गुरु की शरण में हैं।

- और यह उसके जीवन का अहोभाग्य होता है, यदि सद्गुरु उस व्यक्ति को अपना ले, अपना मान ले।

- और जीवन में श्रेष्ठतम सौभाग्य की स्थिति तभी होती है - जब ऐसा सद्गुरु उसे मिल जाए, उसे अपना ले, उसका हाथ पकड़ ले... और सही पगडण्डी पर खड़ा कर, आगे की ओर बढ़ाने के लिए प्रवृत्त हो जाए। जिसके जीवन में यह घटना घटती है, वह अपने आप में महत्वपूर्ण और अद्वितीय घटना होती है - यही महोत्सव होता है, यह महारास की अवस्था होती है।

यह जीवन में एक उछाल की अवस्था होती है, मनुष्यता से आगे चल कर पूर्णता की क्रिया प्राप्त होती है। जिसके जीवन में भी यह बिन्दु घटता है, उसकी तुलना तो देवता भी नहीं कर सकते। पूरी मनुष्य जाति उसकी ऋणी हो जाती है। यदि ऐसा ही कोई व्यक्ति मिले तो उसके बताये हुए रास्ते पर चल कर, इन सातों स्थितियों को प्राप्त करते हुए, अन्दर गहराई से उतर कर, उस जगह पहुंचें, जो सातवीं अवस्था होती है, जिसको ध्यान कहा गया है। जब व्यक्ति ध्यानावस्था में पहुंच जाता है, तब फिर जीवन में कुछ भी बाकी नहीं रह जाता -

- समस्त सिद्धियां उसके सामने नृत्य करती रहती हैं।

- विजय वर-माला लिए टुकुर-टुकुर निहारती रहती हैं।

- लाखों-करोड़ों अप्सराएं उसके सामने नृत्य करती रहती हैं।

- ऋद्धि और सिद्धि हाथ बांधे उसके सामने खड़ी रहती हैं।

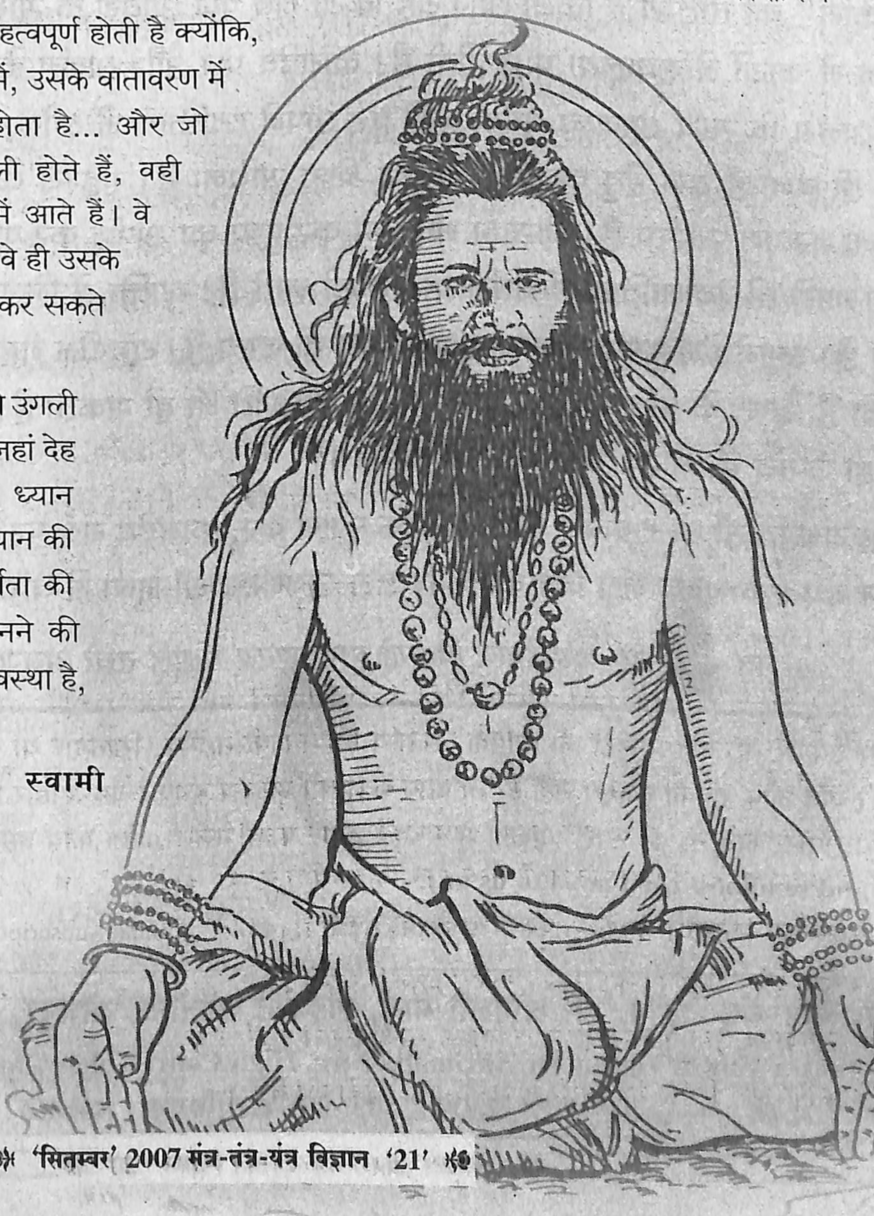
– तब उसके चरणों में हजारों-हजारों राज मुकुट बिखरे हुए पड़े रहते है।

– तब ऊंचे-ऊंचे श्रीमंत उसके चरणों में नमस्कार करते हुए दिखाई देते हैं।

– क्योंकि कई हजार वर्षों बाद ऐसा व्यक्तित्व अवतरित होता है... जन्म नहीं लेता, जन्म लेने का तो एक अहसास कराता है कि – जन्म लिया, सही अर्थों में तो वह अवतरित ही होता है। कई हजार वर्षों बाद एक ऐसी घटना घटती है। इसलिए ऐसे व्यक्ति का जिस पीढ़ी में भी अवतरण होता है, वही पीढ़ी भाग्यशाली होती है... न उससे पहले की पीढ़ी सौभाग्यशाली कही जा सकती है... न उसके बाद की पीढ़ी सौभाग्यशाली कही जा सकती है। उसी पीढ़ी को यह सौभाग्य प्राप्त होता है जिस पीढ़ी के समय एक सद्गुरु इस पृथ्वी तल पर अवतरण होता है।

बार-बार ईसा मसीह पैदा नहीं होते, हजारों वर्षों के बाद ईसा मसीह पैदा होते हैं। कई हजार वर्ष बाद एक महावीर, बुद्ध, कृष्ण पैदा होते हैं। हर वर्ष कृष्ण पैदा नहीं होते, राम पैदा नहीं होते, हर दस-बीस वर्ष बाद बुद्ध पैदा नहीं होते... कई हजारों वर्षों बाद पैदा होते हैं... और उनके जीवन काल में उनको नहीं पहचान करके मानवता ने अपना बहुत कुछ खोया ही है। हिंसा, द्वेष, मार-पीट, छल-कपट और लड़ाइयां बढ़ी हैं, शांति समाप्त हो गयी है... जब ऐसे व्यक्ति का अवतरण होता है, तब युग परिवर्तन की क्रिया सम्पन्न होती है।

...और यह इस पीढ़ी का सौभाग्य है... जिस पीढ़ी के पास ऐसा व्यक्तित्व होता है, वह पीढ़ी अपने-आप में महत्वपूर्ण होती है क्योंकि, उस के सम्पर्क में, उसके अहसास में, उसके वातावरण में रहने का एक अवसर उपस्थित होता है... और जो अहोभागी होते हैं, जो भाग्यशाली होते हैं, वही अनिवर्चनीय व्यक्तित्व के सम्पर्क में आते हैं। वे उसके पास की क्रिया कर सकते हैं, वे ही उसके सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।



– और ऐसा ही व्यक्तित्व मनुष्य की उंगली पकड़ कर उस जगह पहुंचा देता है जहां देह की सातों अवस्थाएं समाप्त होकर, ध्यान की अवस्था प्रारम्भ होती है। जो ध्यान की अवस्था है, वह अपने-आप में पूर्णता की अवस्था है, एक बूंद से समुद्र बनने की अवस्था है, प्रारम्भ से पूर्णता की अवस्था है, श्रेष्ठता की अवस्था है।

– सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी।

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

कामदेव यंत्र

"काम" का तात्पर्य है क्रिया और यह क्रिया जब पूर्ण आवेश के साथ सम्पन्न की जाती है तो जीवन में कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। कामदेव प्रेम और अनंग के देवता है और ये जीवन प्रेम-अनंग के साथ आनन्द पूर्वक जीते हुए अपने व्यक्तित्व में ओज, अपनी शक्ति में वृद्धि के लिये ही बना है इस हेतु कामदेव साधना श्रेष्ठ साधना है। गृहस्थ व्यक्तियों के लिये कामदेव साधना वरदान स्वरूप है। जिसका मंत्र जप कर पुष्प का अर्पण कर पंचोपंचार पूजन कर धारण किया जाये तो स्वाभाविक परिवर्तन प्रारम्भ हो जाते है। व्यक्ति में निराशा की भावना समाप्त हो जाती है। उसमें प्रेम रस का अवगाहन प्रारम्भ हो जाता है। यह प्रेम गृहस्थ जीवन के प्रति भी हो सकता है, इष्ट के प्रति भी हो सकता है, गुरु के प्रति भी हो सकता है। श्रेष्ठ व्यक्तित्व के लिये एक ही उपाय है, धारण कीजिये कामदेव यंत्र।

यह यंत्र किसी भी शुक्रवार को प्रातः गुरु पूजन कर, कामदेव यंत्र पर सुगन्धित पुष्पों की माला अर्पण कर एक माला मंत्र जप करें और इसे अपनी दायीं भुजा में बांध लें।

मंत्र - *॥ ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नो अनंगः प्रचोदयात्॥*

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/-. Annual Subscription 195/- + 45/- postage

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

मां भगवती जगदम्बे

शत् शत् नमन



जयतु जयतु जयतु जगत् जननी



मां अपने सम्पूर्ण ममत्व से समाहित हो जाओ

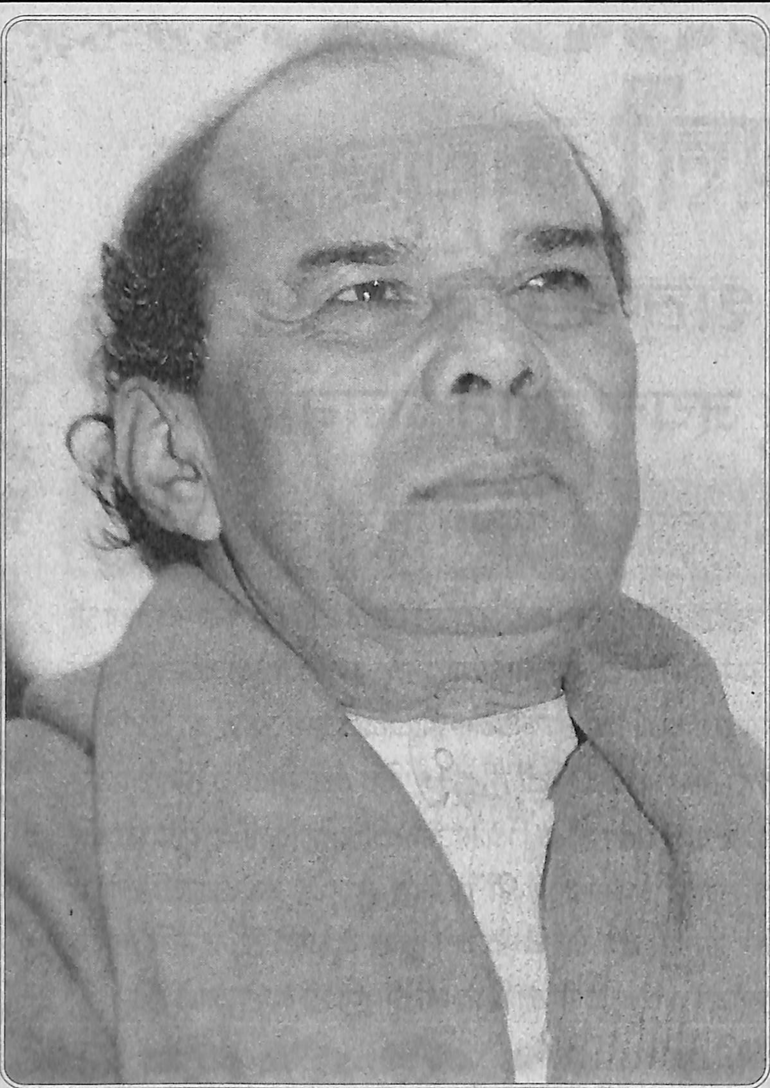
भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है, कि हमारी ऋषि परम्परा ने विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना और अर्चना के माध्यम से अपनी भौतिक या आध्यात्मिक मनोवांछित कार्य सिद्धि के लिए कई सोपान निर्मित किये हैं। भगवती दुर्गा की आराधना-साधना जिन उद्देश्यों के लिए इन निश्चित दिनों में करते हैं, वे हमारे लिए अभीष्टप्रद होती ही हैं। शक्ति की साधना हमारे लिए उतनी ही उपादेय है, जितना कि जीवन के लिए श्वास लेना। बिना उनकी आराधना के जीवन की पूर्णता संभव नहीं है। जो भी महापुरुष हमारी परम्पराओं में प्रसिद्ध हुए हैं या अपनी लोक कल्याणकारी भावना से ओत-प्रोत होकर समाज को या विश्व को कुछ दे पाये हैं, उसमें शक्ति आराधना का सम्पुट संकलित रहा है, क्योंकि शक्ति के बिना शिव भी अपूर्ण ही कहे जाते हैं।

भारतीय जीवन पद्धति में नवरात्रि पर्वों का जो महत्व है उसके पश्चात् नवरात्रि पर्वों के विषय में किसी परिचय की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती है, किन्तु क्या नवरात्रि पर्वों का उद्देश्य मात्र शक्ति तत्व की महत्ता से परिचित कराना ही होता है अथवा नवरात्रि पर्व वर्ष के दो महत्वपूर्ण संक्रमण कालों पर घटित होने वाले लोक उत्सव मात्र ही होते हैं? ये दोनों ही तथ्य अपने स्थान पर सही हैं, किन्तु नवरात्रि का पर्व तो इससे कही अधिक व्यापक भावभूमि को अपने में समाहित किए हुए **एक सम्पूर्ण वर्ष में (एक सम्वत् में) केवल एक बार ही नहीं वरन् चार बार, दो बार चैत्र एवं आश्विन प्रकट नवरात्रियों के माध्यम से तथा दो बार गुप्त नवरात्रियों के माध्यम से आषाढ़ माह एवं माघ माह में घटित होता है।**

इन नवरात्रियों का वर्ष में चार बार उपस्थित होना ही अपने आप में रहस्य एवं उसकी व्याख्या समेटे हुए है। सामान्य साधक के लिए जहां इनका अर्थ केवल नवार्ण मंत्र का जप करने अथवा कुछ शक्ति साधनाएं सम्पन्न करने तक ही विस्तारित होता है, वहीं सन्यासियों के मध्य इनके अर्थ वैशिष्ट्य लिए होते हैं। शक्तिमय होना यद्यपि जीवन की एक श्रेष्ठ अवधारणा है, किन्तु जीवन के, विशेषकर आध्यात्मिक जीवन के संदर्भ में मात्र शक्तिमय होना ही साधना की इतिश्री नहीं हैं। शक्तिमय होने के बाद ही तो अध्यात्म अथवा साधना के जगत में प्रवेश का द्वार खुलता है और संन्यासी साधक इसी प्रकार शक्तिमय होने के उपरान्त साधना की उन भावभूमियों की ओर उन्मुख हो जाते हैं, जिन्हें जीवन मुक्ति की, पूरिपूर्णता की भावभूमि, इत्यादि संज्ञाओं से विभूषित किया गया है और जो 'स्व' से परोन्मुखी होती है, लघु से विराट बनने की संक्रिया होती है।

शक्तिमय होने का अर्थ, शासन करने की मनोवृत्ति से युक्त हो जाना नहीं वरन् जगत के प्रति अनुचर बन जाना होता है। शक्तिमयता की पराकाष्ठा दम्भ में नहीं वरन् महाकरुणा में होती है और इसी कारणवश जहां देवी का स्वरूप एक ओर विविध

भाग्योदय मंत्रः *ॐ श्रीं ह्रीं सर्व भाग्योदय सिद्धये फट्*



इसके पश्चात् उनका दूसरा प्रश्न था, कि क्या कभी यह बात उन गतिशील व्यक्तियों को अन्दर तक मथ गई है या ऐसे अनेक पीड़ितजनों की व्यथा समझ कर उनका हृदय विदीर्ण होने की स्थिति में पहुंच गया है अथवा इस विषय पर सोचते-सोचते उनकी रातों की नींद भी उनकी पलकों से ओझल हो गई है?

स्वामी विवेकानन्द का तदुपरान्त अन्तिम और निर्णायक प्रश्न था, क्या वे ऐसे पीड़ितजनों के उत्थान हेतु अपना तन-मन-धन सर्वस्व न्यौछावर करने की स्थिति में आ गए हैं और उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं रह गई है, कि क्या इस प्रयास में उनका जीवन शेष रहेगा अथवा समाप्त हो जाएगा? स्वामी विवेकानन्द केवल इस स्थिति में आरूढ़ व्यक्ति को ही अध्यात्म में प्रवेश का अधिकार देते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों को अध्यात्म के विषय में चर्चा करने का अधिकार है क्योंकि इतने आग्रह के बाद ही अध्यात्म की भावभूमि प्रारम्भ होती है। जाड़े में गरीबों को कम्बल बंटवा देना या बाढ़ आने पर भोजन के पैकेट बंटवा देना सामाजिक दृष्टि से तो श्रेष्ठ कार्य हो सकते हैं, किन्तु वे अध्यात्म के अंग नहीं हो सकते। धर्मशाला बनवाना, प्याऊ लगवाना या किसी अस्पताल में अपनी दान की रकम घोषित करती संगमरमर की शिला लगवाना भी करूणा जनित अध्यात्म के अंश नहीं हो सकते। पुनः स्वामी विवेकानन्द का ही स्मरण करें तो ऐसी स्थिति ही क्यों आए, कि हमें किसी भूखे को भोजन देकर या अनाथ व्यक्ति के लिए अनाथालय बनवा कर अपनी सदाशयता को प्रकट करना पड़े। क्यों न हम ऐसे समाज के निर्माण में संलग्न हों जिसमें न कोई भूखा नंगा हो या अपने आप को जीवन भर अनाथ मानने की भावना से संतप्त रहे।

अध्यात्म की पराकाष्ठा विश्वजनित करुणा में होती है और यही शक्तिमयता की पराकाष्ठा भी है, जो किसी कंदरा या सुरम्य घाटी में किसी नदी के तट पर बने पांच सितारा आश्रमों में बैठे श्रद्धालुओं, भक्तों, रिटायर्ड अधिकारियों के द्वारा सम्भव हो ही नहीं सकती।

शक्ति का विस्फोट अपने जीवन के क्षुद्र द्वन्द्वों को मिटाने के लिए नहीं वरन् समस्त जगत की नैराश्य भावना को समाप्त करने के लिए आग्रहित होता है। इन्हीं भावनाओं की पुष्पाञ्जलि बनाकर ही वह जगतजननी के चरणों में अपना अर्ध्य चढ़ाता

आयुधों से युक्त माना गया है, वहीं उन्हें **'करूण्यवारांनिधिम्'** की संज्ञा से अनायास ही नहीं विभूषित किया गया है। शक्तिमय व्यक्तित्व में ही करुणा का विस्फोट होना संभव होता है, अन्यथा शेष सभी तो दुर्बलता के कारण केवल अपने ही जीवन की विसंगतियों में सिमट गए मनुष्य ही होते हैं। करूणा ही अध्यात्म का आधार और वही अध्यात्म का चरम विकास भी होती है, किन्तु क्या यह संभव है कि एक शक्तिमयता के अभाव से परिपीड़ित व्यक्ति में करूणा का उद्भव संभव हो सके?

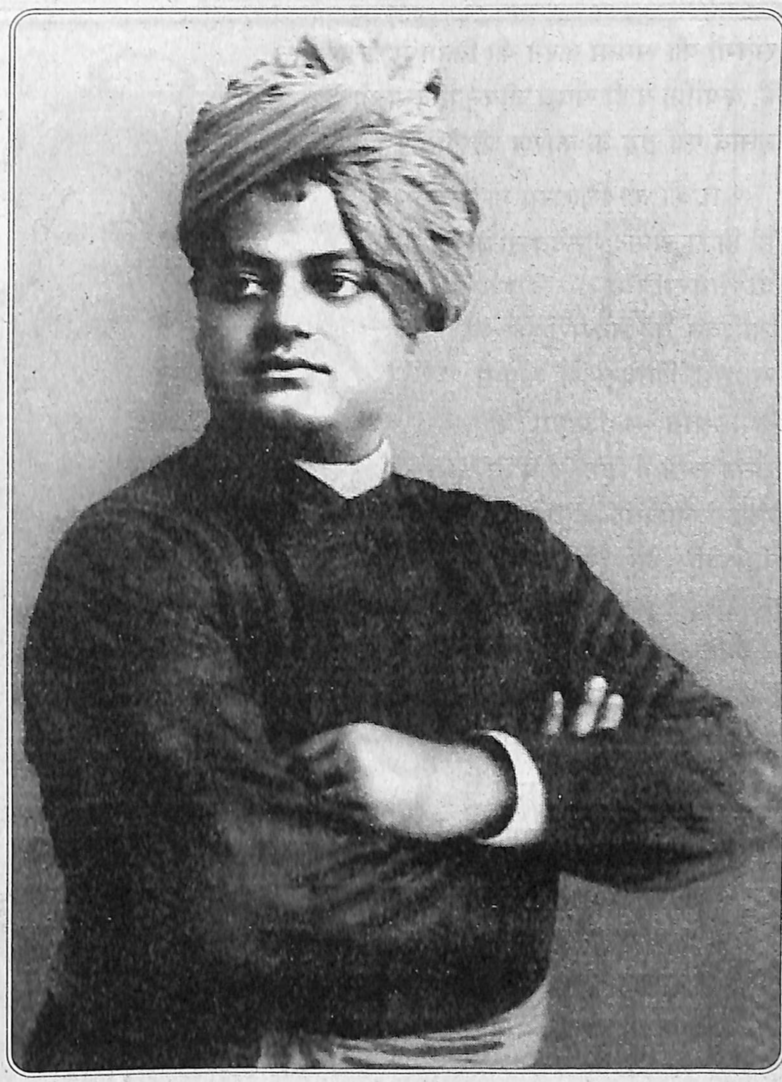
कभी स्वामी विवेकानन्द ने अध्यात्म के पथ पर बढ़ने के इच्छुक व्यक्तियों से तीन प्रश्न पूछे थे। उनका प्रथम प्रश्न था, कि क्या उन्हें (अर्थात् ऐसे इच्छुक व्यक्तियों को) यह बात उद्वेलित करती है, कि आर्यों की इस भूमि पर जो विविध दर्शनों की जननी रही है, आज बहुसंख्यक व्यक्ति दीन-हीन पतित स्थितियों में पशुओं से भी गया गुजरा जीवन व्यतीत करने को बाध्य हैं?

चाक्षुष्मती मंत्रः *ॐ ऐं चक्षुः तेजस्काय आदित्याय ऐं ॐ फट्*

है। जो शक्तिमय होगा वही 'मां' के ममत्व में पूर्ण मन-मस्तिष्क से निमग्न होगा।

श्री सद्गुरुदेव इसी निर्मलत्व की प्राप्ति हेतु अपने साधक-शिष्य को करुणा के महापथ पर अग्रसरित करने की क्रिया ही तो विविध उपायों से करते हैं। उनकी प्रत्येक दीक्षा, प्रत्येक शक्तिपात, प्रत्येक साधना का यही तो मर्म है। हम अपने क्षुद्रचिन्तनों से उनका स्वरूप किसी भौतिक समस्याओं को दूर करने वाले व्यक्तित्व के रूप में भले ही समझ लें, किन्तु उनकी क्रियाएं तो विश्व के रंगमंच पर किसी और प्रस्तुति की चेष्टाएं होती हैं। 'मां' को तो केवल शिशु ही प्राप्त कर सकता है, किन्तु श्री सद्गुरुदेव भौतिकता के पथ में लिपटे किसी भी साधक शिष्य के लिए सहज उपलब्ध होते हैं। क्या उनकी यह क्रिया 'मां' से भी अधिक उदात्त और ममत्व में आपूरित नहीं है?

प्रत्येक साधक की अभिलाषा होती है कि वह महाविद्या साधना करे, शक्ति साधना करे, क्योंकि साधना का मूल स्वरूप ही शक्तिमयता होता है, जिसकी पूर्णता इस प्रकार से सम्भव होती है, किन्तु क्या इसके रहस्य को समझने की कभी चेष्टा हो गई? **शक्ति साधना का सीधा सा रहस्य है, अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को कटिबद्ध हो जाना। 'सर्वस्व' का अर्थ धन-सम्पत्ति आदि नहीं, अपितु अन्तर्मन का सर्वस्व है। शक्ति साधना अर्जित करने की बात नहीं, अपितु निवेदित कर देने की बात है। शक्ति के चरणों में अपने को खाली करते ही अपार शक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है। हम जब शक्ति के स्वामी बनना चाहते हैं, तो कुछ-एक सिद्धियां ही हाथ लगती हैं, जबकि समर्पण कर देने पर विश्व की समस्त शक्तियां हमारी हो जाती हैं।**



... भगवतपाद आद्य शंकराचार्य ने जिस अवस्था में आकर ***'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'*** के वाक्य का स्फुरण किया था, उस अवस्था तक वे समस्त शास्त्रों का अध्ययन, विवेचन, सृजन करने के साथ-साथ आवागमन के साधक सुलभ न होने पर भी सम्पूर्ण भारत की अविजित यात्रा, सनातन धर्म की पुनर्स्थापना इत्यादि कार्य सम्पन्न कर चुके थे। जगतजननी की करुणा के साक्षीभूत हो चुके उन व्यक्तित्व को कदाचित यह पीड़ा शेष रह गई थी, कि वे तो 'मां' की करुणा के एक अंश का भी विस्तार न कर सके; अतः जब वे उपरोक्त वाक्य कहते हैं, तो उसमें उसका विगलित हृदय भी क्षमा याचना बन कर भगवती के चरणों में दी जाने वाली गंगा जल की धारा के अर्ध्य के समान निर्मल व पवित्र प्रतीत होती है।

साधक अपने प्रयासों से निर्मल हो ही नहीं सकता। केवल श्रेष्ठ विचारों, संकल्पों और कार्यों से भी वह निर्मलत्व नहीं आ सकता, जो कि 'मां' का अभीष्ट होता है। यथार्थ निर्मलत्व तो जीवन के उन छत्तीस संवेगों से मुक्त होने पर आ सकता है।

चार नवरात्रियों के दिन भी छत्तीस होते हैं और स्पर्श, संख्या, परिणाम, संयोग, वियोग, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, धर्म, अधर्म, शम, आलोक, तितिक्षा, रूप, गंध, रस, बल, भय, प्रयत्न, स्नेह, काठिन्य, लज्जा, कृपा, दम, मृदुत्व, द्रवत्व, गुरुत्व, गाम्भीर्य, सौन्दर्य, प्रेम, इच्छा, लिप्सा, द्वेष, क्रोध एवं संस्कार - छत्तीस ही संवेग भी होते हैं। श्री सद्गुरुदेव नवरात्रि पर्वों का आधार लेकर सूक्ष्म एवं मूक रूप में अपने शिष्यों के इन्हीं

कायाकल्प मंत्रः *ॐ मम् समस्त देह रोग अन्तर्बाह्य जाग्रय कायाकल्पाय फट्*

संवेगों को समाप्त करने की क्रिया में तत्पर होते हैं, क्योंकि ये ही संवेग जीवन में वृथा मोह, तनाव एवं द्वंद्व के कारण भी होते हैं।



साधकों को जिज्ञासा हो सकती है, कि पूज्यपाद गुरुदेव तो केवल दो नवरात्रियों - चैत्र एवं आश्विन के अवसरों पर ही साधना शिविरों में अपनी उपस्थिति से शिष्यों को धन्य करते हैं, फिर शेष दो गुप्त नवरात्रियों के प्रभावों की प्राप्ति कैसे संभव हो सकती है? इसके प्रत्युत्तर में ध्यान रखना चाहिए, कि श्री सद्गुरुदेव का व्यक्तित्व काल से आबद्ध नहीं होता। वे किसी एक नवरात्रि मात्र में सम्पूर्ण नवरात्रियों के प्रभाव को समाहित कर सकते हैं, यह तर्कगम्य नहीं, विश्वासगम्य बोध है। इसी से सुयोग्य साधक प्रत्येक नवरात्रि में उपस्थित होते हैं, कि पता नहीं किस अवसर पर गुरुदेव अपनी प्रसन्नता के क्षणों में उन्हें अपने शक्तिपात के माध्यम से पता नहीं क्या प्रदान कर दें, यही इस नवरात्रि का भी महत्व है।

यही वह अवसर होता है, जब जगज्जननी का साक्षात् या आभास होता है, तब मन अपार करुणा में भीग जाता है; द्वन्द्व, पीड़ा, चातुर्य और कभी-कभी तो स्वयं का बोध भी विलीन हो जाता है। हम अपने जीवन में जिस वस्तु को भी लेकर गर्वित हो रहे होते हैं - चाहे वह यौवन हो, रूप हो, धन हो या बुद्धिमत्ता हो, एक छोटे से खिलौने से अधिक नहीं लगती है... जब स्वयं 'मां' सामने आती हैं, तो किसी भी खिलौने का क्या मूल्य रह जाता है? भले ही यह कितना ही बेशकीमती क्यों न हो!

जिस प्रकार एक भरे पात्र में कुछ और नहीं भरा जा सकता उसी प्रकार अपनी अहंमन्यता से भरे शिष्य में श्री गुरुदेव भी तब तक कुछ नहीं भर सकते जब तक वह पात्र रिक्त न हो जाए। श्री गुरुदेव की क्रियाओं का रहस्य यही रिक्त करने की क्रिया ही तो है। उनके सम्पूर्ण शक्ति संचरण का प्रायः पचहत्तर प्रतिशत तो शिष्य को रिक्त करने, उसे संवेग रहित करने में ही व्यय हो जाता है शेष पच्चीस प्रतिशत ही साधक समाहित कर पाता है। इसी कारणवश साधना के जगत में आत्मालोचना और विपश्यना मात्र क्रियाएं नहीं वरन् सम्पूर्ण साधना के रूप में मान्यता प्राप्त है।

किन्तु जब एक बार शिष्य का पात्र रिक्त हो जाता है, तो उसे परिपूर्ण करने में गुरुदेव को कुछ पल ही पर्याप्त होते हैं। समुद्र में जल तो अथाह भरा है किन्तु जो लोटा लेकर जाएगा वह लोटा भर ही जल ला पाएगा और जो बाल्टी लेकर जाएगा वह बाल्टी भर जल ले आएगा! यही साधना के क्षेत्र में विनम्र होने का अर्थ है। जहां घट खाली होगा फिर वहीं जगदम्बा भी अपने सम्पूर्ण ममत्व एवं लालित्य के साथ साधक में समाहित हो सकेंगी। देवी के विविध भेद केवल भागवत ही हैं, मूलतः तो उसका स्वरूप एक ही है। जो भगवती जगदम्बा को समाहित करने में सक्षम हो जाएगा, फिर वही उनके महाकाली, महासरस्वती एवं महालक्ष्मी स्वरूपों का वरदायक प्रभाव भी ग्रहण कर सकेगा, क्योंकि -

कज्जल रूप तुहिकाली कहिए उज्जल रूप तुहि बानी।
रवि मंडल परचंडा कहिए गंगा कहिए पानी॥

भगवती जगज्जनी की इस प्रकार प्रति क्षण सूक्ष्म या स्थूल उपस्थिति मानना ही यथार्थ में 'आस्था' है और इस प्रकार मानते हुए सदैव प्रमुदित रहना ही 'साधना' या '**उपासना**' है, क्योंकि 'मां' को अपने शिशु से मुस्कान की अपेक्षा होती है, किसी आरती या धन्यवाद ज्ञापन की नहीं।

भगवती जगदम्बा इसी प्रकार हमारे जीवन में 'विदित होकर' समाहित हो सकें, हमारा स्वरूप समस्त संवेगों से रहित होकर गंगा की भांति निर्मल हो सके, मां जगदम्बा के चरणों में हमारी इस नवरात्रि में यही विनम्र याचना है।

पंचागुली मंत्रः *ॐ ह्रीं पंचागुलि! आगच्छ सिद्धये ऐं ह्रीं ऐं ॐ*

त्रिशक्ति सिद्धान्त





महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती

त्रिशक्ति ही जगत का आधार है

जगत में तीन लोक आकाश, पृथ्वी और पाताल हैं, जगत में तीन देव ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं, जगत में आधार भूत तीन शक्तियां महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती हैं। इन्हें ही आधारभूत कहा है, इन्हें ही शक्ति तत्व कहा गया है क्योंकि संसार में जो व्यक्ति शक्ति से रहित है उसे शक्तिहीन कहा जाता है, रुद्र की शक्ति, विष्णु की शक्ति और ब्रह्म की शक्ति के रूप में शक्ति ही विद्यमान है, इनके रहित होने पर कोई व्यक्ति रुद्रहीन, विष्णुहीन अथवा ब्रह्महीन नहीं कहलाता अपितु शक्तिहीन कहलाता है।

जानिये, शक्ति का मूल रहस्य क्या है? किस प्रकार शक्ति तत्व प्राप्त किया जा सकता है? किस प्रकार शक्ति का विकास किया जा सकता है? किस प्रकार प्राप्त त्रिशक्ति तत्व से जीवन को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् बनाया जा सकता है?

शक्ति तत्व विवचेना से युक्त यह आलेख -

जीवन का आधार ही शक्ति है। शक्ति के बिना जीवन शव हो जाता है। गतिमान पदार्थ और स्थिर पदार्थ दोनों ही शक्ति तत्व से युक्त अवश्य हैं, शक्ति और शक्ति तत्व को विभक्त नहीं किया जा सकता, भौतिक जीवन और आध्यात्मिकजीवन एक दूसरे के विपरीत न होकर एक साथ ही संयुक्त हैं। जिस प्रकार शक्ति अनन्त है वैसे ही शक्ति तत्व भी अनन्त है शक्ति को जाने अथवा बिना जाने भी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य ही अपने आप को शक्तिमान बनाना है, जीवन की उर्ध्व गति और नित्य प्रति की क्रियाएं शक्ति तत्व से ही सम्भव है।

शक्ति की चेतना के सम्बन्ध में विज्ञान भी कोई निरूपण नहीं कर सका है। वस्तु चाहे गतिशून्य हो अथा गतिशील हो, शक्ति विद्यमान अवश्य रहती है। अग्नि की ज्वलन्तता और प्रकाश अग्नि से भिन्न नहीं हो सकते, अचल वस्तु काष्ट लकड़ी को प्रज्वलित करने पर उसमें अग्नि और प्रकाश दोनों ही प्रकट हो जाते हैं, उसी प्रकार अचेतन शक्ति की चेतन शक्ति में सारी संसार शक्ति और शक्तिमान से परिपूर्ण है और इसी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार होता है। शक्ति सदैव शाश्वत होती है, जब तक चैतन्यता नहीं है तब तक शक्ति निष्प्रभावी है।

शक्ति - भारतीय सिद्धान्त

भारतीय सिद्धान्त के अनुसार शक्ति आदिरूप में स्थित है और इस सृष्टि में जो कुछ भी है विद्या, अविद्या, माया वह शक्ति का ही स्वरूप है। बुद्धि, श्री, कीर्ति, गति, श्रद्धा, मेधा, दया, लज्जा, क्षुधा, तृष्णा, क्षमा, कान्ति, शान्ति, स्पृहा सभी शक्ति के रूप हैं। संसार में जो व्यक्ति शक्ति से रहित है उसे शक्तिहीन

मनोकामना पूर्ति मंत्रः ***ॐ श्रीं ऐं मनोवांछितं सिद्ध्ये ऐं श्रीं ॐ ॐ श्रीं ह्रीं मम् मनोवांछित कार्य सिद्ध्यर्थ ह्रीं श्रीं नमः***

जो दुर्बल है उसका जीवन तो व्यर्थ है, जो अपने सामर्थ्य से शक्ति आराधना करता है, उसका घर धन-धान्य, पुत्र, स्त्री, लक्ष्मी से कभी रिक्त नहीं हो सकता। इसी प्रकार शक्ति तो दुर्बल के घर दरिद्रता के रूप में, विद्वानों के हृदय में वृद्धि रूप में, सज्जन लोगों में श्रद्धा रूप में, कुलीनों में यश रूप में निवास करती है। शक्ति का साकार रूप सब जगह सब में है, यह साधना आराधना ही आपके भीतर, आपके घर में इसकी स्थिति को इसके स्वरूप को प्रबल अथवा निर्बल करती है।

कहा जाता है, रुद्र की शक्ति, विष्णु की शक्ति और ब्रह्मा की शक्ति के रूप में शक्ति ही विद्यमान है, इनके रहित होने पर कोई व्यक्ति रुद्रहीन, विष्णुहीन अथवा ब्रह्महीन नहीं कहलाता अपितु शक्तिहीन कहलाता है।

मनुष्य का कार्य ही निरन्तर आगे बढ़ना है और उसे आगे वृद्धि करने हेतु निरन्तर शक्ति की आवश्यकता रहती ही है, जीवन में किसी भी वस्तु को ग्रहण करना और उस वस्तु को अपने उपयोग में लाना शक्ति से ही संभव है।

भारतीय शास्त्रों में शक्ति को स्त्री तत्व कहा गया है और त्रिशक्ति के रूप में महाशक्ति की आराधना की विशेष मीमांसा की गई है। चराचर जगत में जो कुछ भी है वह ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के साथ महासरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली से संयुक्त होकर त्रिमूर्ति है। ब्रह्म की शक्ति; जिससे सृष्टि होती है, वह महासरस्वती है, विष्णु की शक्ति; या विष्णु शक्ति; जो पालन करती है वह महालक्ष्मी है, रुद्र शक्ति; जिससे संहार होता है वह महाकाली है।

शंकराचार्य ने लिखा है कि -

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्॥

अर्थात् भगवान शिव भी अपनी शक्ति से युक्त होकर अपना कार्य करने में समर्थ होते हैं अतः स्पष्ट है कि इस त्रिगुण शक्ति से युक्त होकर ही जगत स्रष्टा, जगत पालक और जगत संहारक बनते हैं जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा जाता है।

शक्ति को माया कहा जाए अथवा अमाया, इसे कुण्डलिनी शक्ति कहा जाए अथवा चैतन्यता तो कहा जाए, मूल रूप से शक्ति प्रकृति है जिसमें सब उत्पन्न होकर सब विलीन हो जाता है। सगुण-निर्गुण किसी भी उपासना का आधार शक्ति ही है।

आदि शंकराचार्य केवल निर्गुण, निराकार, अद्वैत परब्रह्म के उपासक थे। एक बार काशी पधारे तो वहां उन्हें अतिसार हो गया जिससे वे अत्यन्त कृशकाय हो गये। उस समय भगवती त्रिपुरा ने उन पर कृपा करने के लिए एक गोपिका का रूप बनाकर दही का बड़ा घड़ा लेकर वह बैठ गई और कुछ देर बाद कहा कि हे स्वामी जी! मेरे इस घड़े को उठवा दीजिए।

शंकराचार्य ने कहा कि मां! मुझ में शक्ति नहीं है, मैं उठवाने में असमर्थ हूं। मां ने कहा कि तुमने शक्ति की उपासना की होती तब शक्ति आती, शक्ति की उपासना के बिना भला शक्ति कैसे आ सकती है?

यह सुनकर शंकराचार्य की आंखें खुल गई उन्होंने शक्ति की स्तुति में स्तोत्रों की रचना की। शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों पीठों चार शक्ति पीठ ही हैं। भगवती दक्षिणमूर्ति की स्तुति में उन्होंने सुन्दर श्लोक लिखे और कहा, जो ब्रह्म है वह शक्ति ही है, जो शक्ति है वह ब्रह्म है।

त्रिशक्ति का कार्य

त्रिशक्ति महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती का रूप और कार्य भी एक दूसरे से ही जुड़ा है, इन तीनों पर विचार कर इनकी व्याख्या का प्रयत्न किया जा रहा है।

महाकाली और रुद्र कार्य

सबसे पहले रुद्र जो संहार रूपी कार्य करते हैं और उसे सम्पन्न कराने वाली महाकाली रूपी रुद्र शक्ति अपने भयंकर कार्य के अनुरूप श्यामवर्ण की होती है परन्तु यह संहारक, संहार का कार्य संहार के लिए नहीं अपितु सारे संसार के रक्षण और कल्याण के लिए होता है अतः वह अधर्म अन्याय इत्यादि का संहार कर श्रेष्ठ वस्तु अपने भ्राता विष्णु के हाथों सौंप कर कहती हैं कि मैंने अपने पुरुष महादेव रुद्र की शक्ति की हैसियत से बुराई का संहार कर दिया अब हमारा कार्य पूरा हो गया है अब इस जगत का पालन करने का आपका कार्य है, उसे सम्पन्न करें।

महालक्ष्मी और विष्णु का कार्य

विष्णु, जो पालनकारी रूप में कार्य करते हैं, उसे सम्पन्न कराने वाली विष्णु शक्ति महालक्ष्मी स्वर्ण वर्ण की होती है परन्तु यह पालन का कार्य केवल पालन के लिए नहीं, जगत के पोषण

सरस्वती मंत्रः *ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः ॐ ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः*

और वर्धन करने के उद्देश्य से होता है और इस कार्य को पूर्ण कर इस जगत को अपने भ्राता ब्रह्मा को सौंपते हुए कहती हैं कि मैंने अपने पति महाविष्णु की शक्ति की हैसियत से इस जगत को पाला है और हमारा कार्य पूरा हुआ अब इस जगत को लेकर अपना कार्य जो नवीन वस्तुओं को उत्पन्न करना है, उसे सम्पन्न करो।

महासरस्वती और ब्रह्मा का कार्य

ब्रह्मा द्वारा जो नवीन वस्तुओं का निर्माण और सृष्टि रूपी कार्य करना है उसे सम्पन्न कराने वाली महासरस्वती रूपी ब्रह्म शक्ति अपने कार्य के अनुरूप श्वेत वर्ण की होती है और निरन्तर सृष्टि में सृजन, निर्माण होता ही रहता है और जगत का कार्य आगे बढ़ता रहता है। निश्चय ही निर्माण, पोषण वर्धन के कार्य के समय कुछ अनिष्ट पदार्थ भी सम्मलित हो जाते हैं, अतः अपना कार्य करने के पश्चात भगवती सरस्वती जगत को रुद्र के हाथ में सौंपते हुए कहती हैं कि मैंने अपने पति हिरण्यगर्भ ब्रह्मा की शक्ति हैसियत से निर्माण कार्य किया है, इसके निर्माण पोषण वर्धन के समय जो त्रुटियां आ गई हैं उनका संहार करना आपका कार्य है।

इस प्रकार रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा जगत माता भगवती महामाया के अन्तर्गत त्रिशक्ति सृष्टि-शक्ति, पालन-शक्ति, और संहार-शक्ति की क्रिया अनवरत रूप से चलती ही रहती है।

शक्ति तत्व

जिसके जीवन में सृष्टि-तत्व, पालन-तत्व और संहार-तत्व नहीं है वह जीवन ही नहीं है वह तो मृतक जीवन है और जहां इन तीन शक्तियों की साधना से व्यक्ति जीवन में इन तत्वों को निरन्तर उत्पन्न करता रहता है, वृद्धि करता रहता है वही मनुष्य है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मूल प्रकृति शक्ति का स्तवन करते हुए कहा है -

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवबाधा सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥
कार्यार्थ सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
पर ब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥
तेजः स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा॥
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला॥

तुम्हीं विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, तुम्हें सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्या शक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो, यद्यपि वस्तुतः



तुम स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। तुम परब्रह्मस्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो। परमतेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने के हेतु शरीर धारण करती हो, तुम सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। तुम सर्वबीज स्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रय रहित हो। तुम सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्वमंगलों की भी मंगल हो।

शाक्त साधनाएं किसी भी रूप में की जाएं, उसके लिए दक्षिण मार्ग और वाम मार्ग प्रमुख हैं। लौकिक सुखों की प्राप्ति अभीष्ट सिद्धि और दुःख निवृत्ति के लिए 64 कौल तंत्रों का विधान किया गया है और इसी मार्ग की उपासना व्यक्ति के लिए श्रेष्ठ है। सौन्दर्य लहरी में शंकराचार्य ने इसे सुगम मार्ग बताते हुए कहा है -

चतुष्षष्टचातन्त्रैः सकलमतिसंघाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैक घटना
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीरदिदम्॥

भगवान पशुपति शंकर ने सभी कामनाओं को प्रदान करने वाले चौसठ मंत्रों के माध्यम से समस्त संसार को व्यवस्थित करके स्वतंत्र रूप से एक अन्य ऊर्वरता युक्त पैंसठवे तंत्र की रचना की जो अलौकिक और परिपूर्ण है, जिसे श्री विद्या कहते हैं, शक्ति तत्व कहते हैं, जो सभी साधकों के अभ्युदय और निःश्रेयस का एक मात्र साधन बना।

अनंग मंत्रः ॐ हौं हूं अंनगाय फट्

।। अथ श्री सम्पूर्ण साधना विधान ।।

शारदीय नवरात्रि

जगदम्बा पूजन साधना

नवार्ण मंत्र, दुर्गा मंत्र और दक्षिणकाली मंत्र से युक्त

ऐसा नवरात्रि विधान, जो साधक जिस भावना, अभिलाषा, कामना, इच्छा से सम्पन्न करता है वे सभी कार्य अवश्य ही पूर्ण होते है, साधक त्रिविध शोक ताप-दुःख से दूर होता है तथा चतुर्वर्ग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जगदम्बा साधना अपने आप में ही एक परिपक्व और पूर्ण साधना है। यही तो उसकी विशेषता है, इसलिए तो साधना को जीवन का एक अद्भुत प्रयोग कहा गया है। मैंने अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया है, कि जो कार्य अन्य प्रकार से या अन्य देवताओं की साधना से सम्पन्न नहीं होता है वह भगवती जगदम्बा की कृपा द्वारा शीघ्र सहज और सामान्य तरीके से भी सम्पन्न हो जाता है। शरीर को किसी भी प्रकार से विचरण कर लेना, शत्रुओं के बीच में बने रहना और शरीर के चक्रों को जाग्रत कर देना, कुण्डलिनी के रहस्य को प्राप्त कर लेना, ब्रह्माण्ड भेदन कर ब्रह्माण्ड के रहस्यों को ज्ञात कर लेना भी इस साधना के द्वारा संभव है; भौतिक जीवन की कामनाओं की पूर्ति भी इस साधना के द्वारा सहज संभव है।

समस्त महाविद्याओं और साधनाओं में निष्णात हो जाना, उच्चतम भाव भूमि में स्थापित हो जाना, कंठ में सरस्वती को स्थापित कर हजारों-हजारों श्लोकों और ग्रंथों को स्मरण कर लेना, केवल मात्र जगदम्बा साधना से ही संभव है और साथ ही इस साधना के द्वारा वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जो प्रत्येक साधक, प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक उपयोगी और अनिवार्य है।

इसीलिए तो; शास्त्रों में जगदम्बा की साधना को जीवन की श्रेष्ठ साधना माना गया है, और मानव जाति के कल्याण के लिए इस साधना को प्राथमिकता दी गई है। वेदों से लेकर श्रीमद्भागवत और शुक्राचार्य, बृहस्पति ऋषियों से लेकर शंकराचार्य तक प्रत्येक ने जगदम्बा की साधना को महत्व दिया, अनुभव किया, विचार किया, कि इस साधना के द्वारा हम अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। समाधान ही नहीं कर सकते, उन बाधाओं से निजात पा सकते हैं और जीवन को ज्यादा सुखद, ज्यादा सरल और ज्यादा आनन्दमय बना सकते हैं।

इस वर्ष विक्रम सम्वत् 2064 में नवरात्रि 12 अक्टूबर 2007 को प्रारम्भ हो रही है और इसका समापन 20 अक्टूबर 2007 को हो रहा है। इन नौ दिनों में आप साधक हैं, शिष्य हैं तो शक्ति आराधना पूर्ण विधि विधान सहित नित्य सम्पन्न करें।

प्रथम दिन विशेष पूजन नीचे दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न करना है और बाकी दिनों में गणपति पूजन, गुरु पूजन सम्पन्न करके ही प्रत्येक दिन क्रमानुसार पूजन कर नवार्ण मंत्र, दुर्गा मंत्र और दक्षिणकाली मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

कुण्डलिनी जागरण मंत्रः *ॐ क्लीं ह्लीं कुलकुण्डलिन्यै फट्*

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री के साथ साथ नियमों का पालन विशेष आवश्यक है।

साधना नियमः

1. प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय के साथ उठ जायें और समय पर दैनिक क्रम सम्पन्न कर पूजन सम्पन्न करें।
2. यदि प्रातः पूजन संभव नहीं है तो स्नान इत्यादि कर गुरु मंत्र का एक माला जप कर सायंकाल पूजन सम्पन्न कर सकते हैं।
3. नवरात्रि के नौ दिनों में निराहार रहना आवश्यक नहीं हैं लेकिन सात्विक भोजन ग्रहण करें तो शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से चेतना रहेगी और अधिक से अधिक मंत्र जप कर सकते हैं।
4. ब्रह्मचर्य नियम का पालन अवश्य करें।
5. नवरात्रि में दुर्गा सप्तशती का पाठ करना विशेष फलप्रद रहता है। पूरा पाठ ना कर सकें तो एक-एक अध्याय का पाठ अवश्य करना चाहिए।
6. भगवती दुर्गा पर मांसादि भोग, शराब इत्यादि अर्पित करना अत्यन्त अशुभ है और जिन शास्त्रों में यह वर्णन आया है, उन टीकाकारों को वास्तव में शक्ति पूजा का महत्व ही मालूम नहीं है।
7. नवरात्रि में शक्ति से सम्बन्धित जितनी अधिक साधनाएं सम्पन्न कर सकते हैं उतनी अधिक साधनाएं सम्पन्न करें।

*कलियुग में दुर्गा और गणेश को प्रत्यक्ष और प्रधान देवता माना गया है। **'कलौ चण्डीविनायकौ'** के अनुसार कलियुग में मात्र ये दो देवता ही प्रत्यक्ष प्रधान और महत्वपूर्ण हैं। आज समस्त पृथ्वी तल पर दुर्गा की विविध रूपों में उपासना आदि प्रचलित है, जो भी साधक या गृहस्थ, श्रद्धा भक्ति से दुर्गा का पाठ, हवन, पूजा, स्मरण आदि करते हैं, उनके समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।*

8. वास्तविक शक्ति पूजन तो गुरु चरणों में गुरु के सन्निध्य में सम्पन्न किया जाता है, लेकिन यदि किसी कारण वश आप गुरु के पास ना पहुंच सकें तो नीचे दी गई विधि से पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
9. नवरात्रि में अखण्ड दीपक प्रज्ज्वतिल करना उत्तम माना गया है।

नवरात्रि पूजन में मंत्र का, तंत्र का और यंत्र का अद्भुत संयोग है और इन चीजों के संयोग से ही साधना सम्पन्न होती है।

शास्त्रोक्त दुर्गा-पूजन

नवरात्रि के प्रत्येक दिन साधक प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजन स्थान को स्वच्छ कर एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर भगवती दुर्गा का चित्र स्थापित करें। चित्र के समक्ष एक ताम्रपत्र में **'जगदम्बा सिद्धि यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र के बायीं ओर चावलों की ढेरी बना कर उस पर **'सर्व सिद्धिप्रद गुटिका'** को स्थापित करें तथा दायीं ओर तांत्रोक्त नारियल स्थापित करें। पूजन से पूर्व सभी पूजन सामग्री को अपने पास रख लें।

पूजन सामग्रीः

चौकी, लाल वस्त्र, अगरबत्ती, दीपक, पुष्प, फल, कलश, मिठाई, पंचामृत, नारियल, वस्त्र, जगदम्बा सिद्धि यंत्र, नवदुर्गा सिद्धि माला, सर्व सिद्धिप्रद गुटिका, तांत्रोक्त नारियल। इसके बाद पूजन आरम्भ करें -

पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इस अभिमंत्रित जल को, दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कें, जिससे आंतरिक और बाह्य शुद्धि हो।

आचमन

निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ तीन बार जल पियें -

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

दिशा बन्धन

बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में तथा ऊपर व नीचे निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए छिड़कें।

वास्तु देवता मंत्रः ***ॐ नमो वैश्वानर वास्तु रूपाय भूपति त्वं मे देहि दापय स्वाहा***

तांत्रिक और मांत्रिक ग्रंथों में दुर्गा सप्तशती का महत्वपूर्ण स्थान है, इसकी समानता और कोई अन्य ग्रंथ नहीं कर सकता, भगवान शंकर ने स्वयं सप्तशती के सम्बन्ध में कहा है –

सप्तशत्याश्च सकलं तत्वं वेद्म्यमेव हि।
पादोनं श्रतं हरिर्वेत्ति वेत्यर्द्धन्तु प्रजापतिः।
व्यासस्तुयोशिकं वेत्ति कोट्यं शमितरे जनाः॥

अर्थात् सप्तशती का पूर्ण तत्व मैं ही जानता हूं, भगवान विष्णु मात्र तीन ही चरण जानते हैं ब्रह्मा, केवल दो; अर्थात् इस ग्रंथ के रहस्य को वे भी भली प्रकार से समझ नहीं पाये हैं।

दुर्गा को आदि शक्ति कहा गया है। आदि शक्ति दुर्गा महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में है। यही शक्ति अखिल ब्रह्माण्ड की प्रसवित्री कही गयी है।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रमन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर कुंकुम, अक्षत और पुष्प मिला कर निम्न मंत्र बोलें –

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे जम्बुद्वीपे भरत खण्डे आश्विन नवरात्रि अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः सकल सिद्धि प्राप्ति निमितं, सुख, सौभाग्य, धन, धान्य प्राप्तये, गणपति पूजनं च अहं करिष्ये।

जल भूमि में छोड़ दें। यहां अमुक के स्थान पर तिथि, वार, नाम और गोत्र बोलें।

गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़ कर गणपति का स्मरण करें –

ॐ सर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्यन्दन्मद गन्धलुब्ध मधुप व्यालोल गण्डस्थलम्॥
दन्ताघात विदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शैलसुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥
भो गणपते इह आगच्छ इह तिष्ठ स्थिरो भव।

गणपति के लिए एक पुष्प-आसन दें –

गं गणपतये नमः स्नानं समर्पयामि
वस्त्रं समर्पयामि नमः।
तिलकं, अक्षतान्, पुष्पाणि समर्पयामि नमः॥
नैवेद्यं निवेदयामि नमः॥

दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

ॐ गजाननं भूत गणाधिसेवितं,
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

श्री गुरु-ध्यान

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित् समुद्रं।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्॥
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिं।
शमिततिमिरशोकं श्री गुरुं भावयामि॥
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

तत्प्रश्चात् कुंकुम, धूप, पुष्प, अक्षत या नैवेद्य अर्पित कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

कलश स्थापन

अपने सामने बाजोट पर स्वच्छ लाल वस्त्र बिछाकर चावल की ढेरी के ऊपर जल से भरा हुआ कलश स्थापित करें। कलश पर स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर कुंकुम की चार बिंदियां लगावें। कलश के भीतर एक सुपारी व एक रुपया डालें तथा कलश के ऊपर लाल वस्त्र में नारियल लपेटकर रखें। कलश पर मौली लपेट दें तथा हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें –

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च संहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी सदा॥

मातंगी मंत्रः ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

कलश पर पुष्प चढ़ाकर प्रणाम करें।

इसके बाद भगवती के चित्र पर जल से छींटा देकर पोंछ दें तथा कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें।

दुर्गा क्षमा शिव धात्री स्वाहा स्वाधा नमोऽस्तुते।
आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिसूदनी।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये॥

यंत्र पूजन

किसी थाली में 'जगदम्बा सिद्धि यंत्र' को स्थापित करें, उसके बाद यंत्र को गंगा जल या शुद्ध जल से स्नान कराएं। दूध, घी, दही, शहद, शक्कर, मिलाकर पंचामृत बनाएं तथा पंचामृत से यंत्र को स्नान कराएं। पुनः शुद्ध जल से धोकर किसी दूसरे पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उसमें यंत्र को स्थापित करें, भगवती का पूजन करें।

ध्यान

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि॥
दारिद्रय दुःख भयहारिणी का त्वदन्या।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

आह्वान

एक पुष्प रखें और निम्न संदर्भ का उच्चारण करें -

ॐ आगच्छेह महादेवि! सर्व सम्पत्प्रदायिनि!।
यावद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव॥

आसन

पुष्प का आसन देकर निम्न मंत्र बोलें -

अनेक रत्न संयुक्तं नानामणिगणन्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यं आसनं प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्य

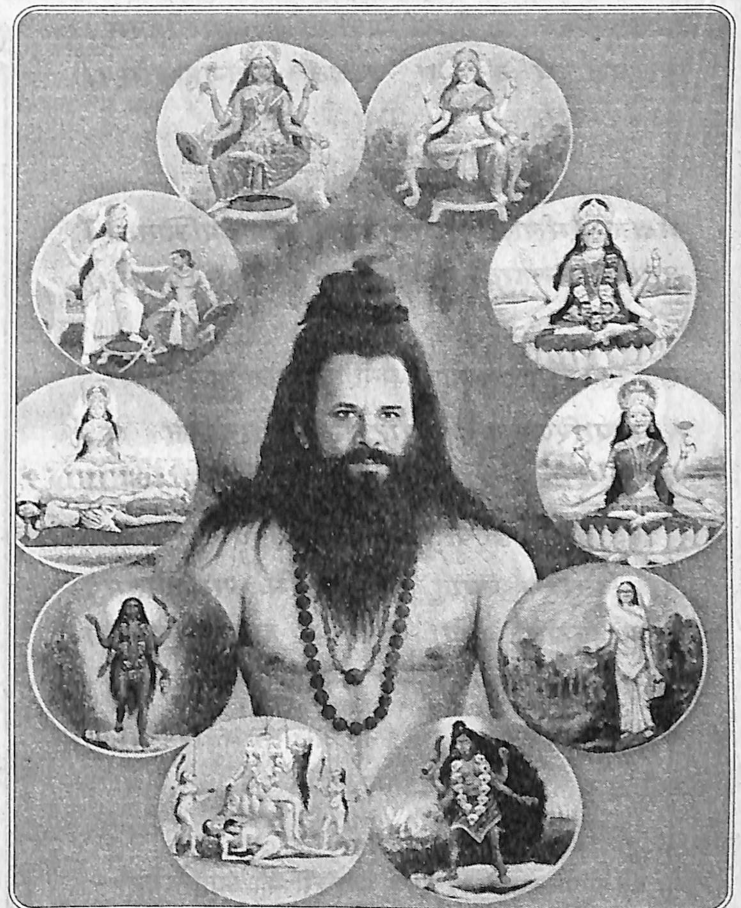
चरण धोने के लिए दो आचमनी जल चढ़ायें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

गंगादि सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्यगुणान्विता।
सिंहोपरिस्थिते देवि! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

अर्घ्य

आचमनी में जल लेकर उसमें अक्षत और पुष्प मिला लें और भगवती को चढ़ाएं -

निधीनां सर्व रत्नानां त्वमर्घ्यगुणान्विता।



सिंहापरिस्थिते देवि! त्वं प्रतिगृह्यताम्॥

स्नान

आचमनी से भगवती पर जल चढ़ावें -

मन्दाकिन्याः समानीतै र्हेमांभोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि! सलिलैश्च सुगन्धिभिः॥

पंचामृत स्नान

दूध, दही, घी, शहद और चीनी मिलाकर स्नान करावें -

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराके वस्त्र से पोंछ दें।

वस्त्र

दो वस्त्र भगवती पर चढ़ावें -

पट्टकूलयुगं देवि! कंचुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे! दुर्गतिनाशिनि॥

चन्दन

कुंकुम, चन्दन या केशर का तिलक करें -

तारा मंत्रः ऐं ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत

भगवती पर चावल चढ़ावें -

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान्महादेवि! देहि मे निर्मलां श्रियम्।।

माला

इसके बाद सुन्दर फूलों से बनी हुई माला अर्पित करें -

मंदारपारिजातादि पाटली केतकानि च।
जाती चंपक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने।।

धूप और दीप दिखा करके नैवेद्य अर्पित करें -

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

तीन आचमनी जल आचमन के लिए प्रदान करें तथा फल अर्पित करें। पुनः मुख शुद्धि के लिए आचमन कराएं। लौंग और इलायची से युक्त सुस्वादिष्ट पान अर्पित करें।

दक्षिणा

पूजा की पूर्णता के लिए द्रव्य भगवती को अर्पित करें।

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि।
स्थपितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्।।

अब निम्न मंत्र का **'नवदुर्गा सिद्धि माला'** से निम्न लिखित प्रत्येक मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें -

नवार्ण मंत्र

।।ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

दुर्गा मंत्र

।।ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।।

दक्षिणकाली मंत्र

।।ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।।

प्रतिदिन मंत्र जप के पश्चात् मां दुर्गा की आरती एवं गुरु आरती सम्पन्न करें। इस प्रकार पूरी नवरात्रि नित्य मंत्र जप अवश्य करें। आठ दिन साधना करने पर नवमीं के दिन साधना सम्पन्न होती है। साधना सम्पन्न होने के उपरान्त समस्त सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 490/-

दुर्गा की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी।।1।।
ॐ जय अम्बे...

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोऊ नयना, चंद्रवदन नीको।।2।।
ॐ जय अम्बे...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ।।3।।
ॐ जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर, नर, मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी ।।4।।
ॐ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत् ज्योति।।5।।
ॐ जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती।।6।।
ॐ जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।7।।
ॐ जय अम्बे...

तुम ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।
ॐ जय अम्बे...

चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरू
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।9।।
ॐ जय अम्बे...

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता, सुख सम्पत्ति करता।।10।।
ॐ जय अम्बे...

भुजा आठ अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।11।।
ॐ जय अम्बे...

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति ।।12।।
ॐ जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे ।।13।।
ॐ जय अम्बे...

अशुभ स्वप्न नाश मंत्रः *ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गति नाशिन्ये महा मायायै स्वाहा*

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291–2432209 या टेलीफैक्स : 0291–2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

(1)

दिनांक : .... सितम्बर 2007

कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री भिजवा दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा लूंगा।

मेरा नाम : ....

ग्राम: .... पोस्ट : ....

जिला : .... राज्य : ....

सामग्री का नाम

(2)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... सितम्बर 2007

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियां वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा पुस्तकों के नाम –

....

....

....

....

मेरा नाम / पता : ....

....

नोट : 500/–से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

(3)

(पृष्ठ संख्या 79 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... सितम्बर 2007

मुझे उपहार स्वरूप *'हनुमान सिद्धि यंत्र'* 390/– (300/– न्यौछावर तथा डाक व्यय 90/–) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमेन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम : ....

पूरा पता : ....

....

....

....

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सब साधनाएं अधूरी हैं

जब तक शक्ति साधनाएं नहीं की जाएं

क्योंकि शक्ति ही चैतन्य जीवन है

आश्विन नवरात्रि में जीवन से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न कर परिवर्तन की क्रिया प्रारम्भ कीजिए -

साधना करने का अर्थ है, अपने मनोनुकूल ढंग से परिवर्तन की चेष्टा करना। शक्ति की केवल उपासना नहीं की जाती, उसे साधना के माध्यम से जीवन में उतार लिया जाता है, और प्राप्त कर लिया जाता है वह सब कुछ, जो जीवन में आवश्यक हो, अनिवार्य हो। देह शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति तीनों का सही संयोग ही तो जीवन को उच्चता तक ले जाता है।

सांसारिक जीवन में मनुष्य का एक मात्र लक्ष्य जीवन में शक्ति प्राप्त करना है। एक बालक जन्म लेते ही प्राण शक्ति प्राप्त करता है और यही जीवन शक्ति उसकी कर्म इन्द्रियों और ज्ञान इन्द्रियों का विकास करती है। जीवन के प्रारम्भिक चरण में शारीरिक अभिव्यक्ति को प्राप्त करता है और उसके साथ ही साथ अपनी ज्ञान इन्द्रियों द्वारा सांसारिक ज्ञान प्राप्त करता है। जब इन शक्तियों का विकास होता है तो मनुष्य अपने आप में गर्व अनुभव करता है और उसमें सामान्य पशु-शक्ति के अलावा ज्ञान-शक्ति की भी इच्छा जाग्रत होती है। शारीरिक शक्ति और ज्ञान शक्ति मिलकर मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

इस देह शक्ति, ज्ञान शक्ति के साथ एक और पक्ष उसके जीवन में जुड़ता है जिसे क्रिया शक्ति कहते हैं। जब तक इन शक्तियों का समन्वय समान भाव से चलता रहता है तब तक जीवन में समरसता बनी रहती है। देह शक्ति के माध्यम से यह शारीरिक क्रिया करता है, ज्ञान शक्ति के माध्यम से संसार की विवेचना करता है और क्रिया शक्ति के माध्यम से अपनी देह और अपने ज्ञान को क्रियात्मक रूप प्रदान करता है। मनुष्य जीवन अनन्त इच्छाओं से भरा है और हर व्यक्ति जीवन में उच्चतम शिखर द्वार पर पहुंचना चाहता है इसके लिए ये तीनों शक्तियां विद्यमान तो होती हैं परन्तु तीनों का बैलेंस सही रूप से नहीं रहता तो उसके कार्य अधूरे होने लगते हैं। इन तीनों में से किसी भी एक पक्ष की उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

शरीर रूपी गृह का हर समय स्वस्थ रहना आवश्यक है, इसीलिए कहा गया है, पहला सुख निरोगी काया अर्थात् रोग रहित शरीर ही आधार है। जीवन में सुख प्राप्ति का सामान्य व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में प्रत्येक कार्य अपनी देह को अधिक से अधिक सुख पहुचाने के उद्देश्य से ही किया जाता है।

देह की सुविधा के लिए वह अच्छे भोजन के लिए प्रयत्नशील रहता है, श्रेष्ठ घर, श्रेष्ठ वस्त्र के साथ ही देह सुख के लिए वह काम भोग में संतुष्टि अनुभव करता है देह को श्रेष्ठ रख पाने के लिए विभिन्न प्रकार के द्रव्य प्रयोग में लाता है। गृहस्थ व्यक्ति के लिए देह का सुख प्रथम आवश्यकता है।

प्रायः यह देखा गया है कि अपने देह सुख के लिए ही मनुष्य अपनी ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति को उपयोग में लाता है कि किस प्रकार वह ज्यादा से ज्यादा सुख प्राप्त करे। उसके साथ यदि कोई व्यक्ति नौकरी पेशा हो तो वह यह विचार करता है कि

रसेश्वरी मंत्रः *ॐ ऐं ऐं रसेश्वर्यै पूर्ण सिद्धिं प्रदाय प्रदाय ऐं ऐं फट्*

आद्या शक्ति के विभिन्न रूप

कालान्तर में शास्त्रकारों ने आद्या शक्ति के विभिन्न रूपों की व्याख्या की और प्रत्येक शक्ति को अलग-अलग नाम दिया। इन शक्तियों में दस महाविद्याएं काली, तारा, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, बगलामुखी, धूमावती, त्रिपुर सुन्दरी, मातंगी, कमला, त्रिपुर भैरवी के साथ ही नवदुर्गा, चामुण्डा इत्यादि नाम दिये। ये केवल शास्त्रकारों की व्याख्या अवश्य थी, साथ ही वह सरस्वती, अन्नपूर्णा, श्यामा, कामाख्या, मधुमती, विन्ध्यवासिनी, इत्यादि के सम्बन्ध में बहुत कुछ वर्णन किया।

अपनी डिग्री का उपयोग कर अपने कार्य में किस प्रकार ज्ञान अभिव्यक्त करे जिससे कि उसे निरन्तर प्रमोशन मिलता रहे। इसी प्रकार व्यापारी अपने ज्ञान का उपयोग कर अपने व्यापार की अभिव्यक्ति के लिए इच्छुक रहता है, वह चाहता है कि उसके व्यापार में वृद्धि होकर और अधिक धन प्राप्त हो। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने ज्ञान का उपयोग कर अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना ही चाहता है।

देह शक्ति और ज्ञान शक्ति का क्रियात्मक स्वरूप क्रिया शक्ति है। इन दोनों का उपयोग अर्थात् देह शक्ति और ज्ञान शक्ति का उपयोग क्रिया शक्ति के माध्यम से ही संभव है। अकर्मण्य व्यक्ति, असंकल्पवान व्यक्ति के लिए देह शक्ति तथा ज्ञान शक्ति तत्व निरर्थक हैं। क्रिया शक्ति ही उसे निरन्तर प्रेरणा प्रदान करती रहती है। अपने कार्यों की ही सफलता से प्रेरित होकर वह और अधिक क्रियाशील हो जाता है।

मूल शक्ति क्या है?

इन तीनों, देह शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति तीनों का सही संयोग ही तो जीवन को उच्चता तक ले जाता है, लेकिन क्या इन तीनों का बैलेन्स जीवन में रह सकता है? अधिकांश तो यही पाया गया है कि देह शक्ति तो बहुत है लेकिन ज्ञान और क्रिया शक्ति के अभाव में व्यक्ति असफल रहता है। इसी प्रकार बड़ी डिग्रियां प्राप्त कर, बड़े शास्त्रों का अध्ययन कर अगर वह अपने ज्ञान का व्यावहारिक रूप से उपयोग नहीं करता है, तब भी उसे सफलता प्राप्त नहीं होती है। देह शक्ति और ज्ञान शक्ति होने के उपरान्त भी उसे क्रिया रूप में परिणीत करना आवश्यक है अन्यथा दोनों शक्तियों का ह्रास होने लगता है। इसीलिए कृष्ण ने कहा कि ***'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'*** अर्थात् मनुष्य क्रिया की ओर गतिशील रहे, उसे फल तो अवश्य ही प्राप्त होगा लेकिन पहले से ही सफलता असफलता अथवा निराशा के विचार उसकी क्रिया शक्ति को कुंठित कर देते हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में व्यक्ति का चिन्तन दूसरे प्रकार का होता है। वह अपनी देह का भरण पोषण केवल इसीलिए करता है कि यह देह चलती रहे। उसका मूल उद्देश्य अपने ज्ञान का विकास ही रहता है और उसके जीवन की प्रत्येक क्रिया स्वान्तः सुखाय, आत्म सुख अर्थात् अपनी आत्मा को सुख पहुंचाने के उद्देश्य से ही होती है। वह ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति का विकास करता है, वह निरन्तर इसी प्रयत्न में संलग्न रहता है तथा जप, मंत्र, तप, ध्यान, साधना उसके लिए अपनी आत्मिक जीवन को उच्च बनाने के लिए सहायक साधन होते हैं।

जीवन में व्यक्ति को भोग और मोक्ष दोनों की इच्छा रहती है तथा वही व्यक्ति अपने जीवन में सफल माना जाता है जो दोनों को प्राप्त कर लेता है।

शक्ति साधनाएं ही वास्तविक साधनाएं हैं -

साधना करने का अर्थ है, अपने मनोनुकूल ढंग से परिवर्तन की चेष्टा करना। यह प्रकारान्तर से शक्तितत्व की महिमा को स्वीकार करना नहीं है तो और क्या है? शक्ति की केवल उपासना नहीं की जाती, उसे साधना के माध्यम से जीवन में उतार लिया जाता है, और प्राप्त कर लिया जाता है वह सब कुछ, जो जीवन में आवश्यक हो, अनिवार्य हो।

यह एक सुस्थापित मान्यता है कि न केवल इस जगत वरन् इस अखिल ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के मूल में कोई आदि शक्ति क्रियाशील है। यह समस्त ब्रह्माण्ड जिस प्रकार से एक क्रिया और लय में बद्ध है, जिस प्रकार से समस्त ग्रह एवं पिण्ड गतिशील हैं, वह किसी शक्ति के अभाव में सम्भव ही नहीं। किसी भी वस्तु का सृजन शक्ति के द्वारा होता है और विनाश भी उसी के द्वारा होता है, इसी कारण शक्ति को त्रिगुणात्मक माना गया है अर्थात् आदि शक्ति के ही तीन रूप सत्, रज एवं तम हैं। सृजन का कार्य सम्पन्न करने के ही कारण शक्ति को स्त्री रूपा, देवी रूपा माना गया है।

सौभाग्य सिद्धि मंत्रः *ॐ श्रीं श्रीं सर्व सौभाग्यम् सिद्धिं श्रीं श्रीं ॐ*

जिस तरह से किसी भी जीव का निर्माण उसकी मां के रक्त मज्जा से ही होता है, ठीक उसी प्रकार से शक्ति तत्व भी प्रत्येक जीव के अन्तर्गत निहित होता है। अंतर केवल यह हो जाता है कि किसी को यह बात स्मरण में रहती है और किसी की विस्मृतियों में खो जाती है। वर्ष में पड़ने वाले चार नवरात्रि पर्व (दो प्रकट एवं दो गुप्त) इसी बात का स्मरण कराने के लिए निर्मित किये गये हैं। यह स्वयं आदि शक्ति भगवती जगदम्बा नहीं कहती कि तुम अमुक-अमुक दिवसों में मेरी उपासना करो तो मैं प्रसन्न होऊंगी वरन् ये अवसर, काल के विशिष्ट क्षण ढूंढ़े गये हैं हमारे उन पूर्वजों द्वारा, जिन्हें हम ऋषि कहते हैं, महर्षि कहते हैं उनका वंशज होने में गौरव का अनुभव करते हैं। हमारे वे पूर्वज प्रकृति से पूर्ण रूप से सामंजस्य युक्त रहते थे और इसी कारणवश शक्तियुक्त भी रहते थे। मनुष्य ने जबसे प्रकृति के साथ सामंजस्य को छोड़ा तभी से उसने क्लेश में रहना प्राम्भ कर दिया।

ऋषिगण इस तथ्य को भली-भांति समझते थे कि आने वाले युगों में मनुष्य की क्या मानसिकता होगी और इसी कारणवश उन्होंने नवरात्रि जैसे पर्वों का सृजन किया कि यदि अधिक नहीं तो कम से कम वर्ष में अट्ठारह दिन तो शक्ति तत्व की उपासना मनुष्य कर ले। वह अपने आपको साधना के माध्यम से एक लय और अनुशासन में बांध कर, शक्ति तत्व से संयुक्त होता हुआ अपने ही जीवन से क्लेशों को दूर कर ले। यदि कोई व्यक्ति इतना भी साहस न जुटा पाये, स्वयं अपने ही जीवन के कल्याण के लिये इतना समय न निकाल सके, व्यर्थ की आलोचनाओं और तर्क कुतर्क में उलझा रह जाये, क्षणों का मूल्य न पहचान सके और कई वर्षों बाद समझ में आने पर पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ न कर सके, तो वह स्वयं समझ ले कि उसे मनुष्य के स्थान पर क्या संज्ञा दी जाये?

शक्ति का विकास विन्यास समझ कर उसे आत्मसात् करना



पड़ता है और शक्ति से सम्बन्धित समस्त साधनाएं वास्तव में समस्या विशेष अथवा मनोकामना विशेष से सम्बन्धित एक विन्यास ही होती हैं। उनसे सम्बन्धित मंत्र, अक्षरों के एक समूह भर न होकर एक प्रकार से गूढ़ संकेत होते हैं।

जीवन में शक्ति तत्व के महत्व को कोई भी उपेक्षित नहीं कर सकता। दुर्बल व्यक्ति का जीवन पग-पग पर अपमानित होता है। उसे इस संसार और समाज में तो कोई श्रेयता मिलती नहीं, उसके लिये आत्मज्ञान का पथ भी अवरुद्ध होता है। ***'नायं आत्मा बलहीनेन लभ्यतेः'*** अर्थात् दुर्बल व्यक्ति को आत्मा या अध्यात्म की उपलब्धि नहीं होती, ऐसा हमारे उपनिषदों का स्पष्ट कथन है। शक्ति तत्व जीवन में दान से नहीं मिल सकता, उसे भक्ति से भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उसे तो अपने दृढ़ संकल्प से, अपने पौरुष से अर्जित करना पड़ता है।

दैहिक शक्ति की आधार शक्ति

शक्ति निरूपण कौमुदिनी के अनुसार जीवन की प्रत्येक क्रिया में मंत्र है। इसके साथ ही क्रिया करने की विद्या तंत्र है और सहायक साधन यंत्र है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी तीनों शक्तियों की उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है। भगवती जगदम्बा, जो आद्याशक्ति स्वरूपा हैं, जो मूल रूप से प्रकृति कही गई हैं, आद्या स्वरूपा होने के कारण इनके आदि और अन्त, इसी शक्ति में संसार की सारी सांसारिक और दैहिक शक्तियां निहित हैं।

जीवन की कोई समस्या छोटी नहीं कही जा सकती और न किसी भी मनोकामना को हेय कहा जा सकता है। ये समाज की बनाई परिभाषायें हैं और जीवन किसी परिभाषा में बद्ध होने का नाम नहीं। ***'विद्या समस्तास्तव देवि भेदाः'*** अर्थात् समस्त साधनाएं, विशेषकर शक्ति साधनाएं उसी आदि शक्ति से उद्भूत हैं, जिन्हें हम मां, जगत् जननी भगवती जगदम्बा कह कर अभिनन्दन करते हैं।

पूर्णत्व मंत्रः *ॐ ह्रीं परम गुरुर्वे साक्षादभवं ह्रीं नमः*

नवरात्रि के नौ दिवस

जीवन में सफलता के १८ प्रयोग

सफलता में सहायक

18 तांत्रोक्त उपकरण

जो सरल हैं पर प्रभाव विरल हैं



प्रत्येक साधक जब साधना के लिए प्रवृत्त होता है तो उसके मन में कोई अभिलाषा अवश्य होती है। साधक यह चाहता है कि साधना के द्वारा उसे जीवन में बाधाओं से मुक्ति मिले और उसके कार्य सफल हों। तांत्रिक निर्भयानन्द जी ने ऐसी ही १८ तांत्रिक वस्तुओं और मंत्रों का चयन किया है जो सरल हैं और नवरात्रि के किसी भी दिन इन प्रयोगों को सम्पन्न किया जा सकता है। ऐसे लघु प्रयोग आप भी नवरात्रि में अवश्य सम्पन्न करें -

नवरात्रि के पर्व पर प्रकृति में समस्त देवी, देवता, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, ऋषि-मुनि, उच्चकोटि के साधकगण हर क्षण उल्लास, उमंग और मस्ती में प्रत्येक घड़ी का उपयोग कर उच्चकोटि की साधनाओं में लीन रहते हैं और शक्ति स्वरूपा दुर्गा के सान्निध्य में स्वयं को ऊर्जावान, चैतन्य और शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए चेष्टारत रहते हैं।

इन चैतन्य दिनों को **'शक्ति समागम पर्व'** की संज्ञा दी जा सकती है, क्योंकि इन दिनों शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो शक्ति की आराधना से वंचित रहता हो। यह पर्व तो साधकों के लिए शक्तिपर्व ही कहा जा सकता है, क्योंकि शक्तिमान होने के लिए शक्ति की उपासना ही प्रमुख है। इन्हीं दिनों शक्ति स्वरूपिणी दुर्गा अपने पूर्ण शक्तिमय स्वरूप में विचरण करती हैं।

प्रत्येक साधक क्षण-क्षण का उपयोग कर अध्यात्म की उच्चस्थिति को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं तथा अपने जीवन को इन दिनों में समस्त आनन्द रसों से ओतप्रोत कर देना चाहते हैं। ऐसे चेतनामय क्षणों में साधक भगवती के सान्निध्य में स्वयं को अर्पित कर उनसे वह इच्छित प्राप्त कर लेना चाहता है, जिन को वह साधारणतः पूर्ण नहीं कर पाता।

भगवती अपने आराधक को वह सबकुछ प्रदान कर देती है, जो उसके हित में होता है, जिनसे वह जीवन के उच्च सोपानों को प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक शिष्य और साधक हर बाधा को पार करने के लिए भगवती की कृपा पाना चाहता है और इन दिनों के पूर्ण सत्व को ग्रहण करना चाहता है।

इन दिनों में तो पूरा ब्रह्माण्ड ही भगवती की कृपा से आच्छादित रहता है। उनकी इस कृपा को हम पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकते हैं इन 18 प्रयोगों को सम्पन्न कर, क्योंकि इन्हें लगभग समस्त ऋषियों ने ही सम्पन्न किया है। इन्हें आप नवरात्रि के दिनों में किसी भी समय सम्पन्न कर सकते हैं। ये सारे प्रयोग जीवन में शक्ति प्राप्ति से सम्बन्धित हैं तथा नवरात्रि के नौ दिन **'शक्ति तत्व'** से परिपूर्ण हैं।

1. प्रकीर्तिता - तनाव मुक्ति हेतु

यदि साधक किसी बाह्य तनाव के कारण से दुःखी हैं, तो वे **'प्रकीर्तिता'** के सामने 5 पीपल के पत्तों पर दूध से बनी मिठाई रखें तथा प्रकीर्तिता को अपलक निहारते हुए 15 मिनट तक निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं फट्॥

प्रयोग समाप्त होने पर उसी दिन मिठाई गाय को खिला दें तथा प्रकीर्तिता को नदी में प्रवाहित कर दें। तनाव समाप्त होगा।

न्यौछावर - 65/-

2. तुलजा - मानसिक एकाग्रता एवं शक्ति हेतु

यदि आप मानसिक शक्ति से सम्पन्न होना चाहते हैं, तो **'तुलजा'** को हाथ में लेकर निम्न मंत्र का 51 बार पूर्ण मानसिक एकाग्रता के साथ जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ

आप धीरे-धीरे स्वयं को मानसिक रूप से शक्तिशाली अनुभव करेंगे तथा दृढ़ निश्चय की भावना पनपेगी। तुलजा को 21 दिन बाद किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर - 80/-

3. शुभांश - इष्ट दर्शन हेतु

आप अपने इष्ट का दर्शन करना चाहते हैं, तो **'शुभांश'** पर लाल रंग के फूल चढ़ाते हुए 101 बार निम्न मंत्र का जप करें। इष्ट दर्शन सम्भव होगा -

मंत्र

ॐ ब्रं ब्रह्माण्डं वै प्रचः ॐ

प्रयोग समाप्त होने पर **'शुभांश'** को किसी नदी में प्रवाहित करना अनिवार्य है।

न्यौछावर - 60/-

4. कुंडिका - रोग मुक्ति हेतु

किसी भी प्रकार के रोग से मुक्ति प्राप्त करने के लिए **'कुंडिका'** पर 51 पीले कनेर के पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

॥ॐ रं रोगमुक्तये फट्॥

फिर उसे पुष्पों के साथ ही किसी दुर्गा मंदिर में चढ़ा दें। रोग मुक्ति संभव।

न्यौछावर - 90/-

5. महेधा - शत्रु बाधा निवारण हेतु

यदि आप शुत्र-बाधा से पीड़ित हैं, तो किसी लाल कपड़े पर काली स्याही से शत्रु बाधा का कारण लिखें, उसी कपड़े में **'महेधा'** रख कर बांध लें और रात्रि के समय किसी तिराहे पर डाल दें। बाधा की समाप्ति होगी।

न्यौछावर - 50/-

6. चन्द्रालाम्बा - शत्रु स्तम्भन हेतु

एक प्लेट में ***'क्लीं'*** बीज मंत्र केसर से लिख कर **'चन्द्रालाम्बा'** स्थापित करें। उस के सम्मुख मंत्र का 75 बार उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ शं शत्रुदमनाय फट्

इसे अगले दिन किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें। आपके विरोधी आपके मनोनुकूल हो जायेंगे।

न्यौछावर - 50/-

7. हिंगल - ग्रह बाधा निवारण हेतु

अगर आप ग्रह बाधा से ग्रसित हैं, तो आप एक मिट्टी के पात्र में **'हिंगल'** के साथ 7 नमक की डली और 5 काली मिर्च के दाने रखें, फिर निम्न मंत्र का 60 बार उच्चारण करें -

मंत्र

॥ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ॥

पात्र का मुंह किसी लाल रंग के कपड़े से बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें। ग्रहों के कारण आ रही बाधा का निवारण होगा।

न्यौछावर - 125/-

8. पूषण - मनोकामना हेतु

किसी चौकी पर पीला कपड़ा बिछावें, उस पर जौ की 5 ढेरियां बनावें, प्रत्येक ढेरी पर एक-एक **'पूषण'** रखें। क्रमशः एक-एक ढेरी पर दोनों हाथ रखकर 21 बार निम्न मंत्रोच्चारण करें -

मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं सर्व कामनायै श्रीं श्रीं नमः

पूषण और जौ उसी कपड़े में बांधकर किसी दान लेने वाले ब्राह्मण को देते समय मनोकामना मन ही मन बोलें। मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी।

न्यौछावर (प्रति पूषण) - 20/-

9. अमर्त्या - भाग्योदय हेतु

रात्रि के समय **'अमर्त्या'** को बायें हाथ में रखकर दायें हाथ से ढकें। लगभग 15 मिनट तक निम्न मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रीं भाग्योदाय ह्रीं नमः

तत्पश्चात् उसी दिन अमर्त्या को किसी सुनसान स्थान पर फेंक देवें। पीछे मुड़कर न देखें, आश्चर्यजनक रूप से भाग्योदय होगा।

न्यौछावर - 70/-

10. जगदण्ड - राजकीय अनुकूलता हेतु

पूर्ण मंत्र चैतन्य **'जगदण्ड'** को अपने पूजा कक्ष में स्थापित कर लें। उसके सामने 101 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ क्लीं कार्यसिद्धये क्लीं नमः

अष्टमी के दिन नदी में जगदण्ड विसर्जित कर दें। राजकीय कार्य में रत व्यक्तियों की आश्चर्यजनक रूप से प्रगति होगी।

न्यौछावर - 95/-

11. विधात्री - गृहस्थ जीवन में अनुकूलता हेतु

ब्रह्म मुहूर्त में जमीन पर कुंकुम से त्रिभुज बनायें, त्रिभुज में **'विधात्री'** स्थापित कर दें। 61 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ क्लेशनाशाय क्लीं नमः

फिर प्रातः काल ही इसे नदी में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से यदि पति-पत्नी के बीच तनाव हो, तो वह समाप्त होता है।

न्यौछावर - 105/-

12. लोहित्य - अकाल मृत्यु बाधा निवारण

'लौहित्य' के सामने हल्दी से रंगे चावलों का एक-एक दाना 51 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें -

मंत्र

॥ॐ क्रीं क्लीं फट्॥

लौहित्य और चावलों को किसी निर्जन स्थान पर डाल दें। अकाल मृत्यु-भय समाप्त होगा।

न्यौछावर - 50/-

13. महेशिन्दु - तंत्र प्रयोग से मुक्ति

रात्रि के समय निम्न मंत्र का 71 बार उच्चारण करते हुए काली मिर्च से हवन करें -

मंत्र

ॐ क्रीं व्यापार वृद्धये क्रीं फट्

आखिरी आहुति के साथ **'महेशिन्दु'** को भी आहूत कर दें। व्यापार पर यदि तंत्र प्रयोग है, तो समाप्त होगा।

न्यौछावर - 190/-

14. क्षोणीगुज - यश एवं भोग प्राप्ति

बाजोट पर **'क्षोणीगुज'** को स्थापित कर कुंकुम, गुलाल व सात लाल पुष्प चढ़ायें और **'सफेद हकीक माला'** से 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ह्रीं क्षं नमः

जीवन में पूर्ण यश प्रदायक और भोग प्रदायक है यह प्रयोग। माला और क्षोणिगुज को नदी में विसर्जित करें।

न्यौछावर - क्षोणिगुज - 60/-, सफेद हकीक माला - 150/-

15. बिल्वांग - गृहस्थ सुख में वृद्धि

'बिल्वांग' लेकर उसे सिन्दूर से रंग दें और उसके सामने 75 बार निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

ॐ दुं दुर्गायै दुं नमः

प्रयोग समाप्ति पर बिल्वांग को नदी में विसर्जित कर दें। पूर्ण रूप से गृहस्थ सुख की प्राप्ति होती है।

न्यौछावर - 80/-

16. सौगल - मनोनुकूल विवाह

आप अपनी इच्छानुसार विवाह करना चाहते हैं, मगर ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है, तो एक कागज पर उसका नाम लिखकर उस पर **'सौगल'** रखें तथा उसके सामने 21 बार निम्न मंत्रोच्चारण करें, फिर उस पर एक गुलाब का पुष्प चढ़ायें-

मंत्र

ॐ गं गौर्यै मनोरथ सिद्धिं देहि गं नमः

यह क्रम पांच बार करें। प्रयोग समाप्ति पर पुष्प और सौगल को किसी नदी में प्रवाहित कर दें। इच्छित जगह विवाह सम्पन्न होगा।

न्यौछावर - 180/-

17. शुभंकरी - धनागम हेतु

मधु, घृत और शर्करा से निम्न मंत्रोच्चारण के साथ 100 आहुतियां देवें -

मंत्र

ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ

फिर **'शुभंकरी'** पर कुंकुम लगाकर मंत्र बोलते हुए उससे आहुति दे दें। धनागम सम्भव होगा।

18. शुभंकरी - दैवी कृपा एवं प्रतिष्ठा हेतु

हल्दी, सफ़ेद चन्दन और केसर को आपस में अच्छी तरह मिलायें तथा एक पात्र में **'शुभंकरी'** स्थापित कर उस पर 51 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें -

मंत्र

ॐ क्षं ह्रीं क्षं नमः

शुभंकारी को किसी कुंए में डाल दें। दैवी कृपा प्राप्त होती है, जिससे साधक जीवन में समस्त प्रकार से उच्च और प्रतिष्ठित बनता है।

न्यौछावर - 155/-

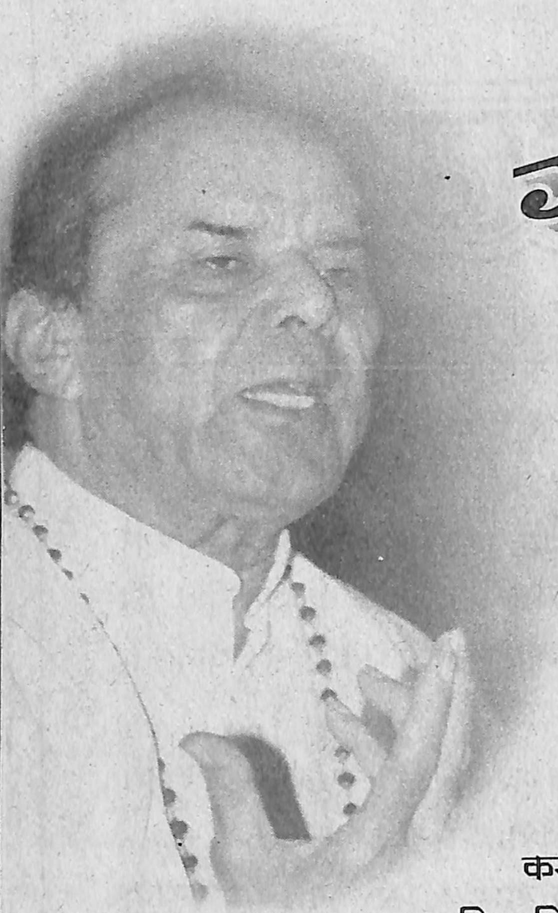
ये प्रयोग प्रामाणिक और नवरात्रि के दिवसों में इन्हें सम्पन्न करने से सफलता मिलती ही है।

शिष्य धर्म

शिष्य का और गुरु का सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठतम सम्बन्ध माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार के किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता, एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से ही विश्वास, निष्ठा बढ़ती है।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

- जो शिष्य गुरु तत्व के रहस्य को नहीं जान पाता, वह पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। अतः शिष्य को चाहिए कि वह गुरु तत्व को समझे। उसमें ही जीवन की सार्थकता है।
- शिष्य को सदैव गुरु का ध्यान उसी प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार एक पतिव्रता स्त्री केवल अपने पति का चिंतन करती है।
- शिष्य को चाहिए कि वह प्रसन्न मन से श्रद्धा पूर्वक गुरु को ही, अपना परम लक्ष्य बना ले। इसी माध्यम से वह सौभाग्यशाली बन सकता है।
- जब शिष्य 'स्व' को समाप्त कर देता है तो उसके हृदय में गुरु ज्ञान का दीपक प्रज्ज्वलित हो उठता है।
- शिष्य के समस्त पाप जनित विघ्नों को समाप्त करने के कारण गुरु शिव स्वरूप हैं। शिष्य को हरदम ऐसा ही चिन्तन करना चाहिए।
- जो शिष्य पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरु चरणों का जल अपने ऊपर छिड़कता है या चरणामृत के रूप में ग्रहण करता है उसे संसार के समस्त तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त हो जाता है।
- गुरु शब्द का उच्चारण करना ही जीवन की पूर्णता मानी गयी है।
- जो सद्गुरु की श्रद्धा पूर्वक आराधना करता है उसने जीवन में भले ही कितने ही पाप किए हों, धीरे-धीरे वे समाप्त हो जाते हैं।
- शिष्य के लिए गुरु का रूप समस्त देवताओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ही अज्ञान को हटाकर पूर्ण ज्ञान देने में समर्थ हैं।
- शिष्य पूरी श्रद्धा से गुरु सेवा में रत रहता है क्योंकि उसी माध्यम से वह आध्यात्मिक और भौतिक सुख की प्राप्ति करता है।
- गुरुतत्व विशुद्ध रहस्यमय ज्ञान है। इसे प्राप्त करने के लिए शिष्य का मन पावन और निर्मल होना चाहिए।



गुरु वाणी

☆ यदि तुम भावना के साथ कार्य और जीवन साधना को प्रधानता दो तो भविष्य मैं बना सकता हूं।

☆ ज्ञान और विवेक से अपने मन को हमेशा शांत रखो, भले ही झगड़ा हो पर अन्दर से तो शांत रहो।

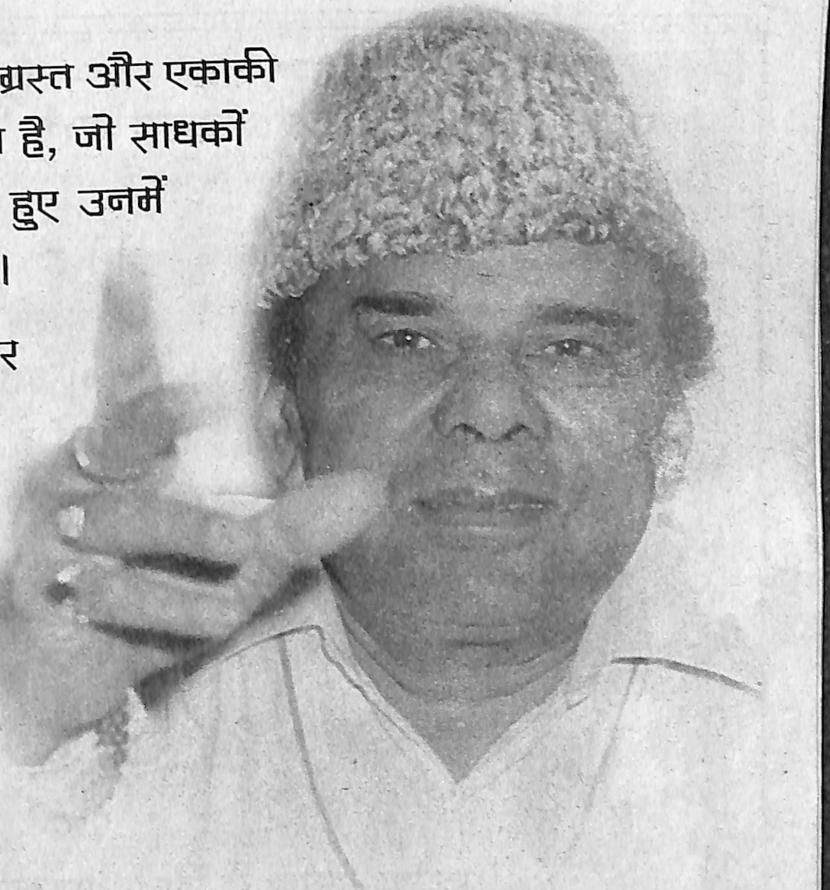
☆ संसार तो एक मेला है। इसमें तुम्हारी प्रशंसा करने वाले भी मिलेंगे और निन्दा करने वाले भी मिलेंगे फिर विचलित क्यों होते हो?

☆ साधना तो तुम्हारी व्यक्तिगत चीज है। आत्मिक खुराक है, और मुख्य प्रयोजन है। इसे तो अंधेरे में, उजारे में, बैठ कर, सो कर, कहीं भी और कभी भी किया जा सकता है।

☆ नाव में बैठ कर नदी पार करते हो, इसमें लहरें आती हैं तो नाव को कस कर पकड़ते हो पर वास्तव में नाव से रंच मात्र भी आसक्ति नहीं है। वैसे ही संसार में रहकर तमाम कर्मों का निर्वाह करो; पर आसक्ति का महारोग मत पालो।



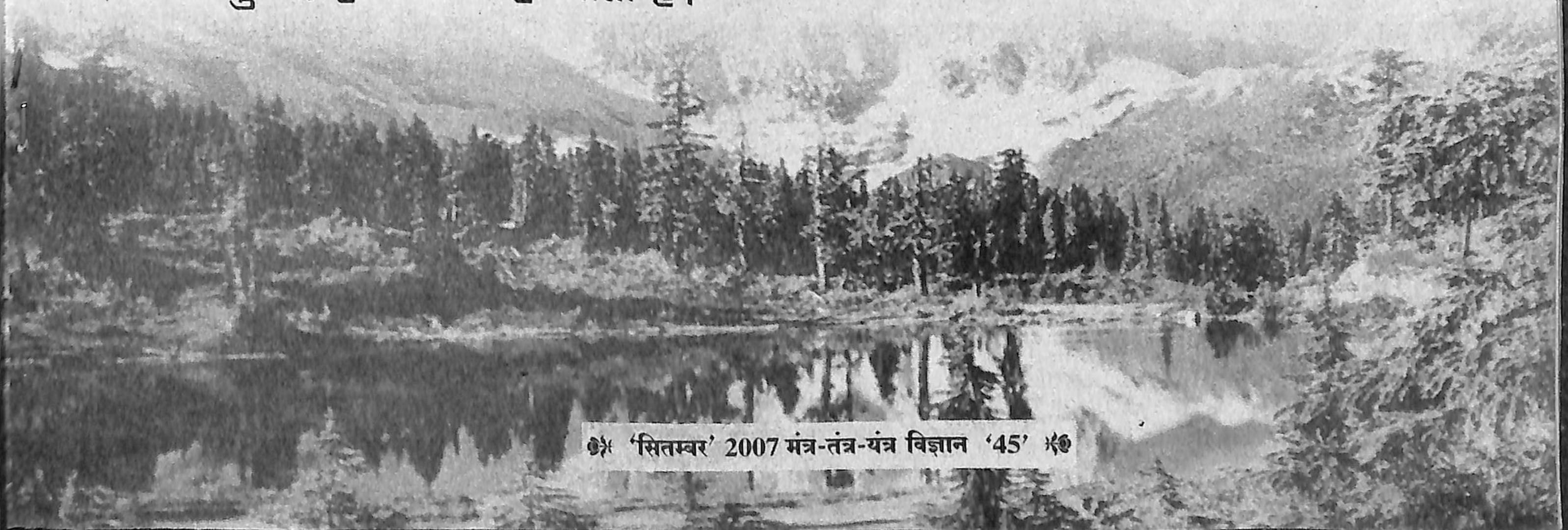
☆ सद्गुरु अनुसंधान के बीहड़, संकट ग्रस्त और एकाकी जीवन में पथ प्रदर्शक और सहयात्री है, जो साधकों को निरंतर लक्ष्य की याद दिलाते हुए उनमें साहस और तितिक्षा भरता रहता है।



☆ कोई निन्दा करे तो विचलित और कुपित होने से साधना में ही खलल पड़ेगी। वास्तव में साधक का रूप कैसा होता है? साधक रूपी मनुष्य का आभूषण है रूप और उसका अलंकार है गुण। गुण का गहना है ज्ञान और ज्ञान का आभूषण है क्षमा। इस बात को अच्छी तरह से समझ जाओगे तभी साधना में उन्नति कर सकोगे।

☆ साधक रूपी मनुष्य तो एक शिल्पकार है उसकी जीवात्मा एक अनगढ़ पत्थर है। वह अपनी साधनाओं के द्वारा उस पत्थर को तराश कर एक मूर्ति का निर्माण करता है जिसका नाम है पूर्णता अर्थात् मोक्ष।

☆ मानव जीवन का लौकिक चिन्तन, विचार और कार्य क्षेत्र यह संसार है। पूर्णता तो इस पूरे मार्ग को पार करके ही वहीं पहुंचने पर मिलती है जहां मनुष्य ब्रह्म से अलग हुआ है। उस ब्रह्म से अलग होने के बाद वह कर्म करता हुआ, धर्म, अर्थ और काम- इन तीनों चिन्तनों का विचार करता हुआ, जब मोक्ष का भी चिन्तन करता है, तब वह पुनः ब्रह्म में लीन हो जाता है।



पुरश्चरण का तात्पर्य संकल्प युक्त 'कवच'
जिसे सम्पन्न करने से

पूर्वजन्म के दोष दूर होते हैं
साधनाओं से सफलता प्राप्त होती है
तंत्र के क्षेत्र में प्रयोग की योग्यता आती है
गुरु की पूर्ण कृपा प्राप्त होती हैं



पुरश्चरण प्रयोग

प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक प्रत्येक साधना से पहले शिव रचित

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को समझाते हुए कहा है कि प्रत्येक साधना में सिद्धि अवश्य ही प्राप्त हो सकती है, यदि साधना से पूर्व पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाय तो। जो साधक तंत्र के क्षेत्र में अथवा साधना के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए तो यह पुरश्चरण पद्धति वरदान स्वरूप है। यह प्रयोग एक ऐसा रत्न है, जिसके द्वारा प्रत्येक साधना में अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।

रसोल्लास तंत्र अपने आप में अत्यन्त गोपनीय और महत्व पूर्ण तंत्र रहा है, जो कि शिष्य को पूर्णता तक पहुचाने की क्रिया का आधार है। इस तंत्र में यह बताया गया है कि यदि कोई शिष्य बार-बार साधना में असफल हो रहा हो या उसे अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं हो रही हो अथवा किसी प्रकार की बाधा या अड़चन आ रही हो तो उसे पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

पुरश्चरण क्या है?

साधना में सिद्धि और सफलता के लिए तीन प्रकार की बाधाएं शिष्य या साधक के सामने उपस्थित होती है। (1) पूर्व जन्म के किये गये दोषों की वजह से या पूर्व जन्म में गुरु के अनादर आदि से जो दोष व्याप्त होता है, वह पुरश्चरण प्रयोग से ही समाप्त होता है। (2) यदि वर्तमान जीवन में देवताओं के प्रति अनादर या गलत तरीके से मंत्रजप आदि किया हो तब भी साधना दोष व्याप्त होता है और इस दोष को भी पुरश्चरण प्रयोग से ही दूर किया जा सकता है और (3) वर्तमान जीवन में यदि मन में गुरु के प्रति निरादर रहा हो, उनके सामने अभद्रता या असौम्यता प्रदर्शित की हो या मन में गुरु के प्रति अपशब्द, अपमान आदि भावनाएं व्यक्त हुई हों तब भी साधक या शिष्य को दोष व्याप्त होता है और इसके लिए भी पुरश्चरण प्रयोग को ही सर्व श्रेष्ठ बताया है।

कहते हैं, कि जब विष्णु का बाणासुर से युद्ध हो रहा था, तब स्वयं भगवान शिव बाणासुर के पक्ष में आकर खड़े हो गये। उस समय भगवान विष्णु ने पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर भगवान शिव से युद्ध किया और उन्हें पराजित कर बाणासुर की भुजाएं काट डाली।

इसी प्रकार एक बार रुद्र ने स्वयं भस्मासुर को यह वचन दे दिया कि तू जिसके सिर पर भी हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा,

और भस्मासुर ने भगवान शिव के उपर ही हाथ रख कर उन्हें भस्म कर देना चाहा, जिससे कि वह पार्वती को प्राप्त कर सके, ऐसी स्थिति में जब भगवान शिव विष्णु के पास पहुंचे तो विष्णु ने पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर भस्मासुर के सामने मोहिनी रूप धारण कर उसे स्वयं अपने ही हाथों भस्म करवा दिया।

वास्तव में पुरश्चरण प्रयोग प्रत्येक साधक और शिष्य के लिए आवश्यक है। इस तंत्र में तो यहां तक बताया गया है कि प्रत्येक पूर्णिमा को महीने में एक बार अवश्य ही इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न कर देना चाहिए, जिससे कि उस महीने में जो भी दोष व्याप्त हुए हों, वे समाप्त हो सकें और साधना में सफलता प्राप्त हो सके।

एतत् तन्त्रानुसारेण पुरश्चर्या करोति यः।
स सिद्धिः स गणः सौ पि विष्णुर्न च संचयः॥

अर्थात् जो इस प्रकार के उच्चकोटि के पुरश्चरण तंत्र को जानकर किसी भी साधना से पूर्व यह पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, वह पूर्ण रूप से सिद्ध होता है; और दूसरे शब्दों में वह स्वयं विष्णु-स्वरूप बन जाता है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं।

उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों ने भी यह स्वीकार किया है कि कई कारणों से जीवन में साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती, इसमें इस जन्म और पूर्व जन्म के दोषों की वजह से बाधाएं आती रहती हैं, जब तक इन बाधाओं तथा दोषों को दूर नहीं किया जाता, तब तक साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, औरं इन दोषों को दूर करने का कोई उपाय नहीं है, केवल मात्र एक ही उपाय है 'पुरश्चरण तंत्र' या दूसरे शब्दों में पुरश्चरण प्रयोग जिसकी वजह से साधना में सिद्धि और सफलता प्राप्त हो पाती है।

पुरश्चरण प्रयोग कब करें?

प्रश्न यह उठता है कि किस मुहूर्त में, कब यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि सभी जन्मों के दोष दूर हो सकें और जीवन तथा शरीर शुद्ध, निर्मल, पवित्र एवं दिव्य बन सके।

इसके लिए इसी तंत्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है।

न तंत्र काल-नियमः शुद्धाशुद्धं वरानने।
न रिक्ता न च मुद्रा च पुरश्चरण कर्मणि॥
न तंत्र चंचलापांगि मल मासं विचारयेत्
जप कालो महेशानि कोटि सूर्य ग्रहः समः

भगवान शिव ने पार्वती को सम्बोधित करते हुए पुरश्चरण पद्धति के बारे में कहा है, कि हे चंचल नेत्र वाली पार्वती! इस पुरश्चरण प्रयोग को करने के लिए समय का कोई नियम नहीं है, इस प्रयोग में शुद्ध और अशुद्ध का कोई विचार नहीं है। इस प्रयोग में यदि रिक्ता तिथि या भद्रा जैसी अशुभ तिथियां भी हों तब भी कोई दोष नहीं लगता। यदि ऐसे समय में मल मास या अधिक मास चल रहा हो, तब भी विचार नहीं करना चाहिए। हे, पार्वती! यह बिल्कुल सही है कि यह प्रयोग यदि साधक सही ढंग से सम्पन्न कर लेता है, तो करोड़ों सूर्य के समान उसको फल मिलता है, और वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

साधना कैसे करें?

भगवान शिव ने इस साधना-प्रयोग को समझाते हुए बताया है कि साधक प्रातः काल स्नान कर पूर्ण विधि-विधान के साथ संध्या करें और गायत्री मंत्र का जप करें। जप के बाद वह साधक सूर्य को जल से अर्घ्य दें और लाल वस्त्र धारण कर कोमल आसन पर बैठ जायें और प्राणायाम करें।

इसके बाद अपने सामने पूज्य गुरुदेव का सुन्दर चित्र स्थापित कर दें। यदि उनकी मूर्ति हो तो मूर्ति स्थापित करें, ज्यादा अच्छा यह हो कि उन्हें अर्थात् गुरू को स्वयं को बुला कर उनका आसन पर विधिवत् पूजन करें। तत्पश्चात् मंत्रजप करें।

भगवान शिव ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि गुरू जो मंत्र दें उसी को 'गुरु-मंत्र' कहा जाता है और पूर्ण श्रद्धायुक्त एक लाख गुरु मंत्र जप करें। साथ ही साथ पांचों अंगों के साथ पुरश्चरण करें। ये पांच अंग हैं- 1. **होम**, 2. **तर्पण**, 3. **अभिषेक**, 4. **अपने कुल के विप्र को भोजन और** 5. **गुरु को दक्षिणा।** ये पांचों पंचांग कहलाते हैं, और इनके साथ ही पुरश्चरण करते हुए मंत्रजप करना चाहिए।

अनैन क्रम मार्गेण पुरश्चर्या समापयेत्।
ततः सिद्धो भवेद् देवि नान्यथा मम भाषितम्॥

भगवान शिव कहते हैं कि हे, देवी पार्वती! इस क्रम से पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए और ऐसा करने पर वह साधक स्वयं ही पूर्ण सिद्ध बन जाता है, और आगे की प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

गुरु-मंत्र

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

उपरोक्त गुरु-मंत्र हैं, जो कि शिष्य के लिए तो 'मंत्रराज' कहा गया है, मगर इसके साथ ही साथ साधक को कुछ और जानकारियां भी प्राप्त कर लेनी चाहिए जो कि अत्यत गोपनीय हैं।

भगवान शिव पार्वती को पुरश्चरण पद्धति समझाते हुए कहते हैं कि -

प्रणव त्रयमुद्धृत्य माया बीजं समुद्धरेत्
ततः प्रणवमुद्वृत्य एवमेतत् सु-दुर्लभम्
एतां सप्ताक्षरौं विद्यां प्रजप्य दशधा प्रिये
यः पश्येद् ग्रहण देवि! प्रायश्चित न विद्यते

अर्थात् सर्वप्रथम तीन प्रणव का उद्धार कर माया बीज को स्पष्ट करें और पुनः तीन प्रणव स्पष्ट करें, जिसे कि अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ मंत्र कहा गया है। यह सप्ताक्षरी मंत्र गुरुमंत्र से पहले तीन माला नित्य मंत्र जप करना चाहिए। यह इस प्रकार से मंत्र बनता है-

ॐ ॐ ॐ ह्रीं ॐ ॐ ॐ

इसे **'सिद्ध विद्या मंत्र'** भी कहा गया है, यदि साधक गृहस्थ है और जीवन में सम्पूर्ण भोगों का भोग करना चाहता हो तो अत्यन्त परम **'दुर्लभ भोग मंत्र'** भी स्पष्ट करना चाहिए। मेरी राय में साधकों को सबसे पहले उपरोक्त सप्ताक्षरी मंत्र की तीन माला मंत्र जप करना चाहिए फिर मूल गुरुमंत्र का यथा संभव मंत्र जप करें क्यों कि मूल मंत्र का कुल एक लाख मंत्र जप करना है जो कि साधक पांच, सात या नौ दिन में सम्पन्न करें, परन्तु प्रत्येक दिन गुरु पूजन कर पहले सप्ताक्षरी मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें, फिर मूल गुरु मंत्र करें और उसके बाद निम्न 'भोग मंत्र' का जप तीन माला मंत्र जप करे।

ऐश्वर्य मंत्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं

इस प्रकार यह मंत्र जप सम्पन्न करना होता है, भगवान शिव कहते हैं कि ये दोनों ही मंत्र दिखने में सामान्य प्रतीत होते हैं, परन्तु यदि इन मंत्रों को सही ढंग से जपा जाय तो वह साधक सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त करना है।

बहु-भाग्येन चार्वांगि लोके भारतवासिभिः
प्राप्ति मात्रेण अप्राव्य तत् सर्वक्षय भवेत्

अर्थात् हे, पार्वती भारतवासियों के लिए इससे ज्यादा श्रेष्ठ और दुर्लभ मंत्र नहीं है, इसको जपने पर समस्त प्रकार के दोष क्षय होते हैं और उसका सभी दृष्टियों से पूर्ण भाग्योदय होता है।

पुरश्चरण यंत्र

भगवान शिव कहते हैं, कि जब इस प्रकार का मंत्र जप पूरा हो जाय तब पहले से ही प्राप्त सिद्ध दुर्लभ सूर्य के समान तेजस्वी पुरश्चरण यंत्र जो कि सामने पात्र में गुरु के सामने रखा हुआ होता है, उसका संक्षिप्त पूजन करें और उसे धारण कर लें। ऐसा करने पर उसके जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता, सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त होने लगती है। उसके पिछले जीवन के और इस जीवन के समस्त पाप दोष समाप्त हो जाते हैं और पूर्ण रूप से वे अपने पूज्य गुरुदेव को प्राप्त करता हुआ उसमें लीन हो जाते है।

यत् यत् कर्म कृतं देवि पुरश्चरणमुत्तमम्
तत् सर्व नाशमायाति मम तुल्यां भवेत् यदि॥

अर्थात् इस प्रकार से परम दुर्लभ पुरश्चरण यंत्र को पहले से ही प्राप्त कर साधक को पूजन कर धारण कर लेना चाहिए तो उसके पाप और दोष नाश हो जाते हैं और भगवान शिव कहते हैं कि वह साधक मेरे समान हो जाता है।

सपत्नीक गुरूं देवं पूजयेद यस्तु साधकः
अनेन विधिना देवि सपूज्य गुरु देवतम्
भावयेच्च सपत्नीकं पूजयेद् गुरुमाज्ञया
सदैव सहसा सिद्धिर्जायते वीर-वन्दिते

इस प्रकार संभव हो तो गुरु-पत्नी के साथ गुरु का पूर्ण रूप से पूजन करें, उनकी आज्ञा-पालन करें तो निश्चय ही वह पूर्ण सिद्धि प्राप्त करता है।

इस साधना में पुरश्चरण माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, यह माला विचित्र मनकों से गुंथी हुई होती है तथा इसका प्रत्येक मनका पुरश्चरण मंत्र से सिद्ध और प्रामाणिक होता है।

साधना काल में तो इस माला का प्रयोग किया जाना ही चाहिए। साधना के बाद इस माला को यदि हम पहने रहें तो वह जीवन का सौभाग्य ही होगा क्योंकि इससे दैनिक होने वाले दोष और पाप स्वतः ही समाप्त होते रहेंगे और साधक का चित्त निर्मल और दिव्य बना रहेगा।

उच्चकोटि के जो संन्यासी और योगी होते हैं जो अपने आप में श्रेष्ठ साधक होते हैं, वे इस पुरश्चरण माला को हर हालत में प्राप्त कर इसके माध्यम से पुरश्चरण प्रयोग तो सम्पन्न करते ही हैं, नित्य एक या दो घण्टों के लिए इस माला को धारण भी करते हैं जिससे कि पिछले दिन या उस दिन किये गये सभी दोष समाप्त हो जाते हैं और वह साधक निर्मल और दिव्य बना रहता है।

वास्तव में यह पुरश्चरण प्रयोग अपने आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और दुर्लभ प्रयोग है। साधकों को चाहिए कि वे इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें जिससे कि वे अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर सकें।

साधना सामग्री - 300/-

सद्गुरुदेव की डायरी से प्राप्त

एक अद्भुत अनमोल रतन

कैसे सिद्ध करें

महाकाली



जो श्मशान में विराजती हैं, भंयकर स्वरूप हैं, तीव्र अट्टहास करने वाली हैं, मुण्ड माला धारणा किये हुए हैं। हाथ में कटा हुआ सिर है, एक हाथ में रक्त रंजित फरसा है लेकिन महाकाली का स्वरूप अपने भक्तों के लिये नहीं है, भक्तों साधकों के लिये वे वरदान देने वाली 'मां' हैं और जो उनकी शरण में जाता है उसे वे इच्छित वर प्रदान करती हैं, उसे विजय का आशीर्वाद प्रदान करती है। सद्गुरुदेव ने अपनी पुस्तक 'तांत्रिक सिद्धियां' में महाकाली साधना के बारे में विस्तार से विवेचन दिया है। उन्होंने स्वयं महाकाली को सिद्ध किया और उसी मंत्र को अपने शिष्यों को प्रदान किया। गुरुदेव की ही वाणी में यह आलेख -

करीब चौदह-पन्द्रह साल पहले मैं अपनी पत्नी के साथ हरिद्वार गया था, महीने भर हरिद्वार में रहा और कल्पवास किया, पत्नी की इच्छा ऐसी ही थी। कल्पवास का मतलब है गंगा के किनारे रहना, गंगा का ही पानी को पीना, गंगा के पानी से रोटी बनाना, वहीं खाना और वहीं झोपड़ी (कुटिया) बना कर रहना।

वहां एक युवा संन्यासी था, संन्यासी... वैसे साधु वहां बहुत हैं, परन्तु वह लड़का बड़ा हट्टा-कट्टा, मजबूत था और रोज हमारी सेवा करता था। वह कभी सब्जी लेकर आ जाता, कभी मेरा पैर दबा देता और कभी गर्म पानी कर देता। ऐसे ही उसने महीने भर तक हमारी सेवा की।

महीने भर बाद मैंने ही कहा - तुम शायद मुझे पहचानते नहीं हो।

वह बोला - गुरुजी! मैंने आपको पहचानने के बाद ही सेवा शुरू की। मुझे पहले ही मालूम था, कि आप कौन हैं।

मैंने कहा - ठीक है, तुमने महीने भर तक मेरी सेवा की है। बदले में मैं तुम्हें केवल एक विद्या सिखाऊंगा।

उसने कहा - क्या मैं महीने भर बाद आपके घर आ कर सीख लूं?

मैंने कहा - आ जाना।

उसके तीन चार महीने बाद वह आया।

मैंने पूछा - तुम क्या सीखना चाहते हो?

वह बोला - गुरुजी! मैं **'श्मशान जागरण'** कर भूत-प्रेत को वश में करने की विद्या सीखना चाहता हूं। मैं देखना चाहता हूं कि भूत कैसे नाचते हैं, प्रेत कैसे नाचते हैं, पिशाच कैसे नाचते हैं। उनको वश में करने के बाद यदि एक बार किसी को पिशाच लगा दूं, तो वह सारी जिन्दगी भर रोयेगा। मैं पहले भूत लगा दूंगा, फिर चार-पांच हजार रुपये लेकर भूत उतार दूंगा। इससे

भूत वश्य साधना मंत्रः ॐ फ्रौं भूत वश्य वश्य वश्य आज्ञा पालय फट्

मेरी अच्छी कमाई हो जायेगी।

मैंने मन ही मन सोचा, कि यह आदमी बहुत ऊंचा है। यह कला तो मुझे भी नहीं आती।

उसने मुझे तसल्ली देने की कोशिश की - गुरुजी! आप घबराइये मत। मैं केवल भूत लगाऊंगा और पैसे लेकर भूत उतार दूंगा, ठीक कर दूंगा। इस तरह चमत्कार हो जायेगा और मैं कुछ कमा भी लूंगा।

मैं तो अपने वचन से बंधा था, उसको ना कैसे करूं; और यदि यह विद्या मैंने उसे सिखा दी, तो भी अनर्थ होगा। मैंने उसको टालने की कोशिश की - मैं तुम्हें कल सिखाऊंगा।

वह बोला - गुरुजी! कल आप फिर मना कर देंगे। आप कहियेगा, कि कल सिखाऊंगा, परसों सिखाऊंगा, महीने भर बाद सिखाऊंगां लेकिन कोई बात नहीं। बिना सीखे मैं भी यहां से जाने वाला नहीं।

वह पूरी रात घर के बाहर बैठा रहा, दूसरे दिन सुबह हो गई, फिर शाम भी हो गई, परन्तु वह वहीं बैठा रहा।

पत्नी ने कहा - एक ब्राह्मण है, संन्यासी है, भूखा दरवाजे पर बैठा है, कितना पाप लगेगा हमें। उसने आपकी सेवा की है और जब आपने खुद ही कहा है, कि सिखाऊंगा तो अब आप इसे सिखा दीजिये।

मैंने कहा - सिखाना तो ठीक है, मगर यह कह रहा है, कि पहले भूत लगा दूंगा, जब लोग भूत उतरवाने लायेंगे, तो एक हजार, दो हजार का खर्चा बता दूंगा और पैसे लेकर भूत उतार दिया करूंगा। मैं इस तरह की गड़बड़ करने वाले को कोई विद्या नहीं देता।

मैंने उसे भी समझाया, कि भूत देखना, उनका नृत्य देखना, श्मशान जागरण तो मैं सिखा दूंगा, लेकिन जैसा तू बता रहा है, वैसा नहीं करने दूंगा।

उसने कहा - गुरुजी! महीने में मुझे दो-तीन केस करने दो, उसी से मेरा काम चल जायेगा।

मैंने कहा - ठीक है, लेकिन किसी को मारना मत, भले दो-तीन केस कर देना।

उसने तसल्ली दी - गुरुजी! आप निश्चिन्त रहिए।

महीने में दो-तीन केस करने में ही मेरा गुजारा हो जायेगा।

जोधपुर में एक श्मशान है, जो वहां से करीब सात- आठ कि.मी. दूर है। मैंने सोचा, कि इसे श्मशान में ले जाऊं या नहीं ले जाऊं, पर उसका शरीर बहुत मजूबत था, ताकतवान था। श्मशान का डोम मेरा परिचित था, क्योंकि पहले मैं कभी-कभी ऐसे ही शिष्यों को वहां ले जाया करता था, मगर अब छोड़ दिया है।

गाड़ी मैंने श्मशान के बाहर खड़ी की और उसे श्मशान के अन्दर ले गया। वहां एक जगह मैंने एक घेरा लगाया और उसको बैठा दिया।

मैंने उसे समझाया- देख श्मशान जागरण में बड़े भयंकर दृश्य दिखाई देंगे, लेकिन डरने की जरूरत नहीं है। भूत होंगे, प्रेत होंगे, वे अट्टहास करेंगे, उनके दांत दिखाई देंगे, सींग दिखाई देंगे, लेकिन डरना मत। यदि तुम डर गए तो बहुत मुश्किल हो जायेगी। मैं मंत्र दे रहा हूं, इसी मंत्र का जप करना है। मगर यह ध्यान रखना, कि मैंने जो यह घेरा खींचा है, इसके बाहर नहीं आना, इसके अन्दर कोई भूत नहीं आयेगा। बाहर चाहे कोई भी झपट्टा मारे, तुम घबराना मत, तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।

उसने कहा - गुरुजी! आप चिन्ता बहुत ज्यादा करते हैं, मैं बहुत मजबूत हूं, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा, आप बेफिक्र रहें।

मैंने कहा - ठीक है।

फिर उसी के पास घेरा बनाकर मैं भी बैठ गया, उसको भी बैठा दिया। उसके बाद दक्षिण की तरफ मुंह करके मैंने श्मशान जागरण प्रयोग किया। ज्योंही श्मशान जागरण शुरु हुआ, तो श्मशान में जितने भी भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस आदि थे, वे उठ-उठ कर आने लगे। कोई नाच रहा था, कोई कूद रहा था, कोई खून पी रहा था, कोई मल-मूत्र कर रहा था, किसी के सींग निकले थे, तो किसी दांत निकले हुए थे। मैं तो इनका अभ्यस्त था, मेरे लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी, परन्तु उसने एक पल को देखा और आंखे बंद कर ली। मैंने सोचा, कि मजबूत आदमी है, हट्टा-कट्टा है, मुझे इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

तीन मिनट भी नहीं हुए होंगे, कि कड़-कड़-कड़ आवाज होने लगी। मैंने सोचा, कि यह आवाज कहां से आरही है, घूम कर देखा, तो वह थर-थर कांप रहा था, उसके दांत बज रहे थे। मैंने सोचा, कि बेचारा मर जायेगा और एक संन्यासी की हत्या हो जायेगी। मैंने श्मशान जागरण क्रिया को बन्द किया, उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा - उठ भई! उठ, खड़े हो।

मेरा हाथ लगते ही वह चिल्ला उठा - भूत आया, भूत आया, बचाओ...

मैंने कहा - अरे भई! भूत-वूत कुछ नहीं है, जो था, सो खत्म हो गया। लेकिन वह उसी तरह चीखता रहा। मैंने सोचा, कि

शिव शक्ति मंत्रः ॐ हं हंसः सोऽहं शिवोऽहं ॐ

कैसा साधक है? थोड़ी देर पहले तो यह डींगे हांक रहा था, अब क्या गड़बड़ हो गई?

मैं उसे किसी तरह कार में डाल कर घर लाया।

माता जी ने कहा - इसका यह क्या हाल कर लाये?

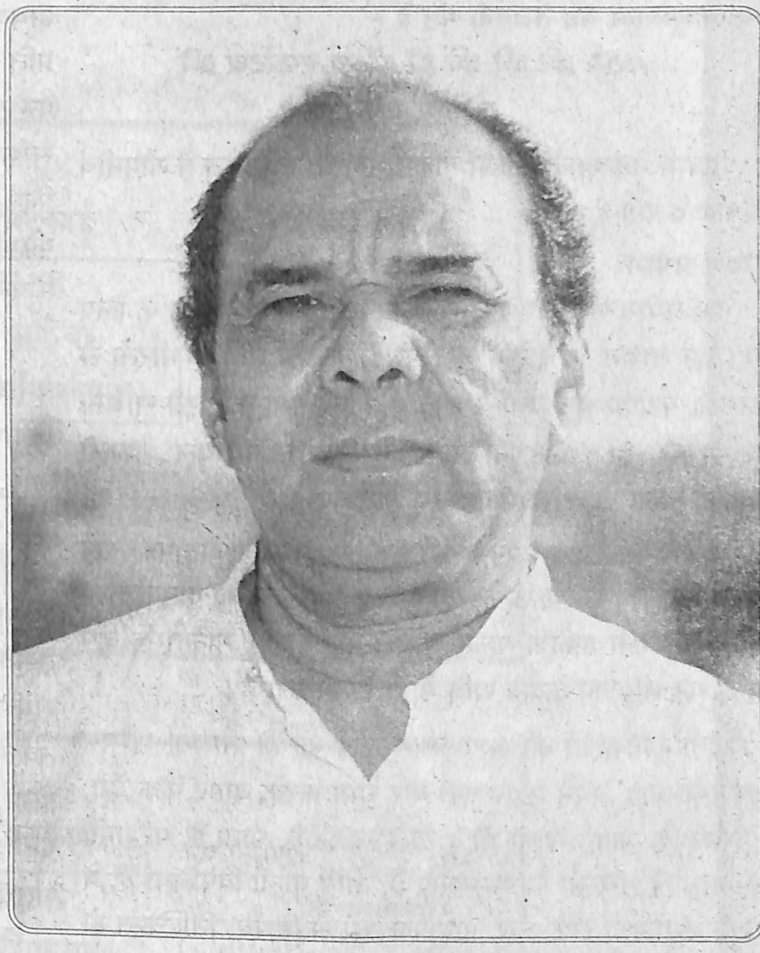
मैंने कहा - आपने ही जोर दिया, कि सिखा दूं। अभी तो दो मिनट भी नहीं हुए थे श्मशान जागरण के, कि इसकी यह स्थिति हो गई।

मैंनें उसे हिलाया-डुलाया, उसके ऊपर पानी डाला, जूता सुंघाया, मिर्ची की धूनी दी, फिर भी वह उसी तरह बड़बड़ाता ही रहा। मैंने उससे कहा - भूत-वूत कुछ नहीं है, मेरा घर है, अब चिन्ता मत कर गर्म दूध लाया हूं, केशर डाल कर लाया हूं और गुरूजी तुझे अपने हाथों से पिलायेंगे, तेरा सौभाग्य देख!

उसने आधे-पौन घण्टे के प्रयास के बाद आंख खोली - मैं कहां! मैं कहा? वह आया, भूत आया।

मैंने कहा - तू मेरे घर में है, मैं तेरे पास बैठा हूं, ये मेरी पत्नी बैठी है और कुछ है ही नहीं।

पन्द्रह-बीस मिनट आंखें फाड़-फाड़ कर वह इधर-उधर देखता रहा, बड़ी मुश्किल से उसने कहा - यहां और कुछ भी नहीं हैं?



मैंने उसको दूध पिलाया और कम्बल ओढ़ाया। उसने कहा - यह क्या हो गया?

मैंने कहा, 'कुछ नहीं हुआ... जब शुरूआत में ये खेल है, तो अन्त क्या होगा?'

उसके बाद मैंने छोड़ दिया श्मशान जागरण क्रिया कराना, सिखाना, वगैरह-वगैरह।

परन्तु महाकाली साधना में यह सब कुछ दिखाई नहीं देगा, न भूत दिखाई देंगे, न प्रेत दिखाई देंगे, मगर एकदम से खड़खड़ाहट की आवाज आ सकती है और नहीं भी आ सकती है। कोई डरने की जरूरत नहीं है, क्योंकि आपको कुछ नुकसान नहीं पहुंचेगा। इस बात से घबराने की जरूरत नहीं है। न आपको कुछ दिखाई देगा और न ही महाकाली अपने साधकों को उग्र स्वरूप में दर्शन देती हैं। आपके मन में भय व्याप्त न हो, इसीलिए मैंने यह बात कही, कि चिन्ता करने की जरूरत नहीं।

इस साधना को सम्पन्न करने के बाद आपका खुद का चेहरा इतना तेजस्वी हो जायेगा, कि आपके शत्रु स्वतः ही आपसे भयभीत होंगे। यह मंत्र अत्यन्त तेजस्वी है, इस साधना को घर में सम्पन्न कर सकते हैं और इसमें कोई दोष नहीं है।

यह साधना मैं कई वर्षों बाद पहली बार आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। महाकाली साधना की गरिमा को, गम्भीरता को और उसकी महिमा को समझ लेना चाहिए, जिससे कि आपके जीवन में दुःख, दारिद्र्य, कष्ट, पीड़ा, परेशानी, बाधा, आने वाली विपत्ति - ये सभी एक बार में ही पूर्ण रूप से समाप्त हो सकें और आप पूर्ण रूप से निश्चिन्त हो सकें, निर्भय हो सकें।

जिस महाकाली ने मधु-कैटभ जैसे बलवान राक्षसों का नाश कर दिया, फिर आपके छोटे-मोटे शत्रुओं के बारे में तो कहना ही क्या? आप केवल इस साधना को सम्पन्न करके देखें, यह मंत्र अत्यन्त तेजस्वी है।

इस बात का ध्यान रखें, रात्रि को मंत्र जप करते समय यदि एकदम से अट्टहास सुनाई दे, या लगे कि कोई खड़खड़ाहट हो रही है, ऐसी सम्भावना तो नहीं है, फिर भी यदि ऐसा हो, तो आपको विचलित होने की जरूरत नहीं है।

कर्ण पिशाचनीः *ॐ क्रीं क्लीं ईं कर्ण पिशाचिन्यै ॐ फट् स्वाहा*

महाकाली का यह तेजस्वी मंत्र है –

॥ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं खं स्फोटय क्रीं क्रीं क्रीं फट्॥

अब मैं महाकाली के इस तीक्ष्ण मंत्र पर आधारित ये गोपनीय प्रयोग दे रहा हूं –

प्रथम प्रयोग

यह प्रयोग पूर्ण पौरुष युक्त यौवन और सौन्दर्य प्राप्ति के लिए है। इस साधना के बारे में जरा समझ लें और बड़ी गम्भीरता से समझें, क्योंकि कई वर्षों के बाद मैं आप लोगों को ऐसी साधना प्रदान कर रहा हूं। साधना सामग्री में **'तांत्रोक्त नारियल', 'काली हकीक माला'** तथा **'दो महाकाल्य गुटिकाएं'** हैं।

तांत्रोक्त नारियल अपने घर में पूजा स्थान में बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर स्थापित कर दें, तेल का दीपक लगा लें और **काली हकीक माला** से इस मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें, यह मंत्र जप केवल रात्रि में ही हो सकता है।

दोनों गुटिकाओं को आप प्रथम रात्रि को ही साधना सम्पन्न करने के बाद अपने ऊपर एक बार घुमा करके बाहर फेंक देंगे, जिससे कि जीवन में जो भी दुःख है, कष्ट है, पीड़ा है, परेशानी है, बाधा है, चिन्ता है, समस्याएं हैं, आने वाली विपत्तियां हैं, वे सभी समाप्त हो सकें और आप पूर्ण रूप से निर्भय, निश्चिन्त हो सकें। इस प्रयोग को केवल छः दिन तक नियमित रूप से सम्पन्न करना है, **श्राद्ध पक्ष, नवरात्रि में या किसी भी रविवार** को यह साधना प्रारम्भ कर सकते हैं। छः दिन बाद सभी सामग्रियों को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री – 280/-

द्वितीय प्रयोग

यह प्रयोग पूर्ण रूप से शत्रु दमन हेतु है। इस साधना में भी सामग्री रूप में **'तांत्रोक्त नारियल', 'दो महाकाल्य गुटिका' और 'काली हकीक माला'** की ही आवश्यकता पड़ती है। नारियल के नीचे, यदि कोई एक ही शत्रु हो, तो उसका नाम काजल से लिख दें, यदि शत्रुओं की संख्या ज्यादा है, तो नारियल के नीचे **'समस्त शत्रु'** लिख दें और इसे बायें हाथ में दोनों गुटिकाओं के साथ ले लें। यह मारण प्रयोग नहीं है, कि वह मर जाय, बल्कि वह आपके समक्ष समर्पण कर दे, आपसे समझौता कर लें और शत्रुता को भूल जाय।

अब काली हकीक माला से मंत्र का जप करें। यह तीन दिन का प्रयोग है और इसे **दिनांक 13-10-2007 या 20-10-2007 अथवा किसी भी माह के किसी भी शुक्रवार** से प्रारम्भ करें। प्रति दिन 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करना है। प्रयोग समाप्त होने पर समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद आपका शत्रु आपसे समझौता करने के लिए ही आयेगा। चाहे बीस साल का बैर हो, वह आपसे क्षमा की भीख मांगता हुआ आपके सामने स्वयं या किसी को भेज कर मित्रता का हाथ बढ़ायेगा ही।

न्यौछावर – 280/-

तृतीय प्रयोग

प्रथम प्रयोग विधि के अनुसार प्रयोग सम्पन्न करें, फिर यदि आप किसी प्रकार की उलझन में उलझे हों या ऐसा लगे, कि कोई तकलीफ आने वाली है या बच्चे को कोई कष्ट हो रहा हो या पड़ोसी को कोई तकलीफ हो या बीमारी हो, तो आप तांबे की गिलास में जल भर लें और गिलास की तरफ देखते हुए हुए उसके समक्ष एक सौ आठ बार मंत्र जप करें। अब यदि आपकी समस्या है, तो इस पानी को स्वयं पी लें या अन्य किसी को तकलीफ हो, तो उसको पिला दें। यदि छोटी-मोटी तकलीफ होगी, तो उसी समय दूर हो जायेगी और कोई गम्भीर बीमारी होगी, तो दस-बारह दिन तक इस प्रयोग को करना पड़ेगा।

चतुर्थ प्रयोग

द्वितीय प्रयोग विधि के अनुसार प्रयोग सम्पन्न करें, फिर जब भी किसी भी कार्य को सम्पन्न करने या कहीं जाने से पहले केवल ग्यारह बार इस मंत्र को जप करके बाहर जायें, कि आज मेरा काम होना ही चाहिए, चाहे वह किसी ऑफिस से हो, चाहे किसी मिनिस्टर से हो, चाहे किसी से भी हो, आप उसके सामने जायें और अपना काम बतायें, वह 'हां' ही करेगा, वह मना कर ही नहीं सकता।

ऐसा अद्भुत मंत्र आपके पास होने के पश्चात् आपका कोई अनिष्ट तो हो ही नहीं सकता, आप निश्चिन्त और निर्भीक रहें। अगर आपके विरुद्ध मुकदमा चल रहा हो या कोई शत्रुता पैदा कर रहा हो और प्राणों का खतरा हो, तो मंत्र जप करना ही पड़ेगा। घर में कोई बच्चा सीरियस हो गया हो, तो मंत्र जप करना ही पड़ेगा आपको। यदि आप पूर्णता के साथ इस मंत्र को कर लें, तो आप खुद रुद्र के पूर्ण भक्त बन जायेंगे, पूर्ण पौरुषवान बन जायेंगे, बनेंगे ही, क्योंकि पूर्ण श्रद्धा, समर्पण और विश्वास के साथ इन चारों प्रयोगों को या किसी एक प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात् आपके जीवन के शब्दकोश में 'असफलता' या 'दुःख' जैसा कोई शब्द रह ही नहीं सकता।

कायाकल्प मंत्रः ॐ श्रीं ह्रीं कायाकल्पं कुलकण्डलिन्ये ह्रीं श्रीं ॐ

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में
व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में
व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में
व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं स्थान का निर्धारण सुनिश्चित कर सकते हैं या आप अपना फोटो सम्बन्धित न्यौछावर राशि के साथ जोधपुर कार्यालय के पते पर भेज कर भी फोटो द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सकते है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स : 0291-2432010

(पृष्ठ संख्या 22 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... सितम्बर 2007

मैं लोकप्रिय पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का 'वार्षिक सदस्य' बनना चाहता हूं। कृपया आप मुझे सम्बन्धित उपहार ***'कामदेव यंत्र'*** स्वरूप भेज दें। 240/- की वी.पी.पी. आने पर (195/- वार्षिक सदस्यता शुल्क + 45/- डाक व्यय) के रूप में जमा कर मुझे रसीद भेज दें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर वी.पी.पी. छुड़ा लूंगा एवं हर माह मुझे पत्रिका भेजते रहे अथवा आप मेरे मित्र को हर माह पत्रिका भेजते रहें।

मेरा नाम :	मेरे मित्र का नाम : ....
पूरा पता :	उसका पूरा पता : ....
....	....
....	....
....	....

(4)

(पृष्ठ संख्या 62 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... सितम्बर 2007

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त *'दीपावली महापूजन साधना पैकेट'* सामग्री भिजवा दें। मैं 490/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूंगा। मेरा पता निम्न है -

नाम व पता : ....

पता : ....

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं

1.	2. ....
....	....
....	....
....	....

(5)

(पृष्ठ संख्या 55 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... सितम्बर 2007

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त *'महात्रिपुर सुन्दरी सुन्दरी साधना'* सामग्री भिजवा दें। मैं 490/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूंगा। मेरा पता निम्न है -

नाम व पता : ....

पता : ....

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं

1.	2. ....
....	....
....	....
....	....

(6)

साधना का सर्वोत्तम स्वरुप

राज राजेश्वरी



महात्रिपुर सुन्दरी साधना

कामदेव से विश्वामित्र, शंकराचार्य से गुरु गोरखनाथ सबने अपने जीवन में त्रिपुर सुन्दरी की साधना सम्पन्न की और जीवन में महान् बनें।

देवी के सम्बन्ध में भगवान शिव कहते हैं -

संसार के सभी पदार्थ जड़ या चेतन, सजीव या निर्जीव - मात्र तीन गुणों के संयोजन से ही गतिशील होते हैं। मनुष्य की समस्त गतिविधियां, जीवन शैली, जीवन में उतार-चढ़ाव, गुण-दोष स्वभाव, मात्र इन तीन गुणों अर्थात् - 'सत्व', 'रज' एवं 'तम' से ही बनते हैं। इन तीनों गुणों का जिस परा शक्ति से प्रादुर्भाव होता है, उसी की अधिष्ठात्री देवी महात्रिपुर सुन्दरी हैं। देवी त्रिपुर सुन्दरी की ही परा शक्ति से सारा चराचर संसार उत्पन्न होता है, उन्हीं से संसार का पालन एवं समय पर नाश भी होता है; वही रोगों और दुःखों को हरने वाली हैं।

पराशक्ति की शिव-शक्ति के विग्रह के रूप में प्रथम कल्पना काली के रूप में है, इसलिए इन्हें आद्या भी कहते हैं, तारा द्वितीया और त्रिपुरा तृतीया हैं, ये ही महाविद्या त्रिपुरा बाला, षोडशी, त्रिपुरा सुन्दरी, श्रीविद्या आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। श्री विद्या के नामसे सम्पूर्ण भारत में इनकी उपासना होती है।

त्रिपुरा शब्द की नाना प्रकार से व्याख्या है -

त्रिमूर्ति स्वर्गाश्चया पराभवत्वात्,
त्रयीमयत्वाच्च परैव देव्या।
लये त्रिलोक्यामपि पूरणत्वात्
प्रायोम्बिकास्त्रि पुरोति नाम।।

अर्थात् पराशक्ति से प्रकट होकर त्रिमूर्ति की सृष्टि करने के कारण, परादेवी के त्रयीमय होने के कारण, प्रलय के बाद तीनों लोकों को पूर्ण कर देने के कारण, प्रायः अम्बिका का नाम त्रिपुरा है।' इस सम्बन्ध में एक उक्ति और भी है -

ब्रह्मा विष्णु महेशाद्यैस्त्रिदशैरर्चिता पुरा।
त्रिपुरेति सदा नाम कथितं दैवतैस्तव।।

नवग्रह मंत्र : *ॐ ह्रीं नवग्रहभ्यो मुन्थायै शान्ति ह्रीं ॐ फट्।*

अर्थात् **'पुराकाल'** में ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देवों ने इनकी अर्चना की, इसलिए देवताओं ने सर्वदा इन्हें त्रिपुरा नाम दिया, जैसे -

ब्राह्मी रौद्री वैष्णवी त्रिशक्त्यस्तिस्र एवहि।
पुरं शरीरं यास्यां स त्रिपुरेति प्रकीर्तिता॥

अर्थात् **'ब्राह्मी' रौद्री, वैष्णवी ये तीनों शक्तियां ही जिसका पुर अर्थात् शरीर हैं, उसे त्रिपुरा कहते हैं।'**

इनके अतिरिक्त और भी उल्लेखनीय वर्णन हैं - जिनका मण्डल त्रिकोण है, जिनके भूपुर में तीन रेखाएं हैं, जिनका मंत्र भी तीन अक्षरों का है, जिनके तीन रूप हैं, जो तीन प्रकार की कुण्डलिनी शक्ति और तीन देवताओं की सृष्टि करती हैं और जिनका सब कुछ तीन-तीन है, इसलिए ये त्रिपुरा हैं। तीनों मूर्तियों से पुरातन होने के कारण अम्बिका का नाम त्रिपुरा है; सुषुम्ना, इड़ा और पिंगला ये तीन नाड़ियां त्रिपुर है, मन, बुद्धि और चित्त को भी त्रिपुर कहा गया है, इन स्थानों में निवास होने के कारण ये त्रिपुरा हैं। तीन स्थानों 'भूः', 'भुवः' और 'स्वः' में रहने वाली देवी क्रिया शक्ति रूप में, तीन लोक, तीन देव, तीनों लोक में तीनों पावक, तीन ज्योति, तीन वर्ग, तीन गुण, तीन शब्द, तीन दोष, तीन आश्रम, तीन काल, तीन अवस्था आदि इनके रूप हैं।

कलिका पुराण में त्रिपुरा का वर्णन है- शम्भू की प्रधान इच्छा के कारण उनके तीन शरीर हो गये। इनका ऊर्ध्वभाग पांच मुख और चार भुजाओं वाला हुआ, जो ब्रह्म रूप कमल के केशरवत् गौर वर्ण हुआ। उनका मध्य भाग नीलवर्ण, एकमुख और चतुर्भुज रूपीय हुआ, जो विष्णु रूप के हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म हुए। उनके तृतीय भाग में पांच मुख और चार हाथ हैं। यह स्फटिक की तरह उजला है और इसके माथे पर चन्द्रमा है। इस प्रकार तीन पुर के योग से परम शिव त्रिपुर हुए।

त्रिपुरा की प्रतिमा का प्रसिद्ध ध्यान इस प्रकार से है -

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरं चापं धारयन्ती शिवां भजे॥

त्रिपुरा को कदम्ब का पुष्प बहुत ही प्रिय है, कदम्ब वृक्ष संसारमयी रूप है, जिसके अनन्त गोल पुष्प ब्रह्माण्ड में कृष्ण, त्रिपुरा आदि रूपधारी विश्वात्मा विहार करते हैं। अपनी कृति और लीला-स्थल होने के कारण कदम्ब अर्थात् विश्व उन्हें अतिप्रिय है।

'हरितायन संहिता' के त्रिपुरा रहस्य महात्म्य खंड के चतुर्थ अध्याय में **'महामुनि संवर्त'** ने परशुराम जी से यह प्रश्न किया कि संसार-भय पीड़ितों के लिए शुभ मार्ग कौन सा है?

इस प्रश्न का समाधान करते हुए मुनिवर ने कहा है - 'गुरोपदिष्ट मार्ग में स्वात्मशक्ति महेश्वरी त्रिपुरा की आराधना कर उनकी कृपा के लेश को प्राप्त करते हुए सर्वसाम्याश्रयात्मक स्वात्मभाव को प्राप्त करो। दृश्यमान सब कुछ आभास मात्र सार शक्ति विलास ही है, त्रिपुरा ही श्री विद्या, ललिता, कामेश्वरी और महात्रिपुर सुन्दरी हैं।'

'वामकेश्वर तंत्र' में त्रिपुरा का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है - 'ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र ईशरूपिणी श्रीविद्या के ही ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति और इच्छा शक्ति ये तीन स्वरूप हैं। ज्ञान शक्ति उर्ध्वभाग, इच्छा शक्ति मध्यभाग तथा क्रिया शक्ति अधोभाग है। शक्तित्रयात्मक उनका रूप होने के कारण ही वह त्रिपुरा कही जाती हैं।

'ब्रह्माण्ड पुराण', 'मार्कण्डेय पुराण' और 'ब्रह्मवैवर्त्त पुराण' में भी आदि शक्ति के अनेक रूपों की चर्चा है।

शक्ति की उपासना की परम्परा में त्रिपुरा और शक्ति के रूप में पूजित हैं। तांत्रिक और वैदिक दोनों ही मार्गों से त्रिपुरा की आराधना की जाती है। यह भारतीय संस्कृति की सर्वमान्य देवी हैं। श्री चक्रराज में भी इन की अर्चना की जाती है।

इस शक्ति को प्रेम और विश्व बन्धुत्व की देवी के रूप में उपास्या कहा गया है, इस प्रकार त्रिपुरा मानव-प्रेम की स्रष्टा देवी हैं।

साधना आवश्यक ही है

त्रिपुर सुन्दरी साधना दस महाविद्याओं के क्रम में अनिवार्य साधना है। इस साधना के इतने अधिक आयाम हैं, कि जिसे लिखा जाए, तो एक पूर्ण ग्रंथ तैयार हो सकता है। इस साधना के लाभ जो साधकों ने अनुभव किए हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. इस साधना के माध्यम से साधक को जीवन में चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की प्राप्ति होती है। **साधक को जीवन में एक साथ भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है, वह चाहे किसी भी जाति या धर्म का हो, वह चाहे किसी भी मत या मतान्तर का मानने वाला हो, संन्यासी हो या गृहस्थ कोई भी हो।**
2. आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता के द्वार इस साधना से खुल जाते हैं।

रसेश्वरी मंत्र : ॐ ऐं ऐं रसेश्वर्यै पूर्ण सिद्धिं प्रदाय प्रदाय ऐं ऐं फट्

3. इसको साफल्य साधना भी कहा जाता है, क्योंकि यह साधना अन्य साधनाओं में भी पूर्णता देने में समर्थ है। कोई भी साधना हो, वह चाहे अप्सरा साधना हो, दैवी साधना हो, शैव साधना हो, वैष्णव साधना हो या किसी भी प्रकार की साधना हो, यदि उसमें सफलता नहीं मिल रही हो, तो उसको भी पूर्णता के साथ सिद्ध कराने में यह महाविद्या समर्थ है - यदि इस साधना को पहले सम्पन्न कर लिया जाए। इसलिए जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लेने के लिए यह महाविद्या पूर्ण सहायक साधना है।

4. **जीवन में चाहे किसी भी प्रकार का अभाव हो, कष्ट हो, पीड़ा हो, बाधा हो, दुःख हो, दैन्य हो, न्यूनता हो, उन सबको एक ही झटके में समाप्त करने की अगर कोई महाविद्या है, तो वह षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना है। इसके अतिरिक्त भौतिक सुखों को भी पूर्णता के साथ देने में यह महाविद्या सर्व समर्थ है।**

5. इस साधना की एक विशेषता यह भी है, कि इससे कायाकल्प भी संभव हो जाता है, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री हो। यदि स्त्री है और सौन्दर्य में किसी भी प्रकार की न्यूनता है या उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कमी हो, तो **इस साधना को सम्पन्न करने पर वह अपने आप में पूर्ण सौन्दर्यमयी और सम्मोहक बन जाती है।** इसके साथ ही साथ **यदि किसी पुरुष के शरीर में किसी प्रकार की न्यूनता या पौरुषत्व की कमी या हिम्मत, साहस, बल, ओज की कमी हो, तो उसको भी पूर्णता देने में यह साधना समर्थ है। इस साधना से साधक का चेहरा अपने आप में तेजस्वी, अद्वितीय दमक से युक्त ललाट, सिंह के समान दर्पोन्नत वक्षस्थल बन जाता है।**

6. **जीवन में निरन्तर धन प्राप्त होता ही रहता है और** आय के सैकड़ों स्रोत खुल जाते हैं, चाहे वह व्यापार करता हो, चाहे वह नौकरी करता हो। इस प्रकार की सुविधाएं, इस प्रकार के रास्ते अपने आप बन जाते हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

7. इस साधना द्वारा मजदूरों को धनयुक्त होते देखा गया है, साधनहीन लोगों को साधन सम्पन्न होते देखा है, दुःखी, पीड़ित अपाहिज, बीमार, असहाय लोगों को पूर्ण रूप से स्वस्थ और तरोताजा होते देखा गया है।

8. **'पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमिवाव शिष्यते'**... उपनिषद्



की यह उक्ति, यह स्थिति इस साधना के माध्यम से सम्भव है, इसीलिए यह साधना जीवन की जाज्वल्यमान, तेजस्वी, अद्वितीय और श्रेष्ठ तथा परमोपयोगी साधना है।

इस साधना को करने के बाद कामदेव ने शंकर जी पर विजय प्राप्त करने का निश्चय किया था। जब कामदेव ने त्रिपुर सुन्दरी पंचदशी विद्या की साधना की, तो उसे अजेय होने का वर प्राप्त हुआ और अपने धनुष बाण से उत्पन्न पुष्पबाणों (विजय, कीर्ति, दैव्य, रति, काम्य) से उसने शिवजी की समाधि को भंग किया था अर्थात् इस विद्या को करने से कामदेव सिद्धि भी होती है।

इस साधना को करने से जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती। यदि इस साधना में किसी कारण असफलता मिल भी जाती है, तो साधक का किसी भी प्रकार से कोई अहित नहीं हो सकता, अपितु अभी तक जिसने भी यह साधना की है, उसे सफलता ही प्राप्त हुई है। आवश्यकता इस बात की है, कि इससे सम्बन्धित यंत्र, चित्र, सामग्री, मंत्र और पूजन विधि पूर्णतः सही, प्रामाणिक व प्राण प्रतिष्ठित हो।

शीघ्र विवाह मंत्रः *ॐ कामदेव अनंगाय शीघ्रं मे कार्य सिद्धाय ॐ ॐ ऐं क्लीं शीघ्र विवाह सिद्धये फट्*

पारद मालाः त्रैलोक्य-विजय माला

पारद माला का ही दूसरा नाम त्रैलोक्य-विजय माला है। इसे **'त्रैलोक्य विजयिनी'**, **'त्रैलोक्य भुवन मोहिनी' तथा 'त्रैलोक्य-शक्ति-प्रदायक'** के नाम से भी पुकारा जाता है, इस माला को धारण करने से 64 सिद्धियां और नव निधियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। जहां एक ओर संसार का समस्त वैभव, सुख, ऐश्वर्य एवं आनन्द पहनने वाले को प्राप्त होता है, वहीं दूसरी और कई सिद्धियां उसे स्वतः प्राप्त होने लगती हैं, इसीलिए इस माला को **'त्रैलोक्य पारद माला'** कहा गया है।

इस सम्बन्ध में विस्तार से विवरण **अगस्त** 2007 की **पत्रिका पृष्ठ संख्या** 87 पर दिया गया था। पारद माला के सम्बन्ध में कार्यालय में हजारों फोन आये तथा हजारों व्यक्तियों ने इसे मंगवाना चाहा। लेकिन हमारे लिये यह संभव नहीं हो सका क्योंकि प्रत्येक पारद माला के निर्माण और उसे मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त करने में समय लगता है। अतः आप किसी भी रूप में निराश न हों यदि आपने कार्यालय को लिखा है तो यह पारद माला आपको अवश्य भेजी जायेगी इतना विश्वास दिलाते हैं कि दीपावली से पहले उन सभी को, जिन्होंने कार्यालय में पत्र लिखा है अथवा फोन पर भेजने हेतु निवेदन किया है, उन सभी को दीपावली से पहले यह माला अवश्य ही भेज दी जायेगी।

भूल सुधार न्यौछावर - 800/-

वास्तव में वे अत्यन्त अभागे और दुर्भाग्यशाली होते हैं, जो इस प्रकार की साधना सम्पन्न नहीं कर पाते। वास्तव में उनके भाग्य ही न्यून होते हैं, जो इस साधना से परे हटते हैं। यह साधना अपने आप में स्वयं सिद्ध है; 'षोडशी त्रिपुर सुन्दरी' तो अपने आप में त्रिलोकी की देवी है, जो समस्त साधकों को और भक्तों को, साधुओं को और संन्यासियों को समान रूप से प्रिय है।

षोडश कलाओं से पूर्ण भगवती षोडशी अपने दिव्य स्वरूप में जब साधक के समक्ष प्रकट होती हैं, तब वह आनन्द से अभिभूत हो जाता है। षोडशी की तेजस्विता साधक के शरीर के अणु-अणु में रोम-रोम में प्रवेश कर जाती है, जिससे उसका चेहरा अपने आप में दैदीप्यमान हो उठता है। फिर **उसके जीवन में लड़ाई, झगड़े, द्वंद्व, पीड़ा, अभाव, कष्ट और न्यूनता नहीं रह पाती।** इसलिए षोडशी त्रिपुर सुन्दरी दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाविद्या मानी गई है।

शास्त्रों में कहा गया है, कि जो मनुष्य-जाति में जन्म लेता है, उसे इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए, आवश्यकता है योग्य गुरु की, प्रामाणिक विधान की और आवश्यकता है, पूर्ण रूप से श्रद्धा और विश्वास की।

यह गोपनीय साधना विधि साधकों के लिए वरदान तुल्य है, कल्पवृक्ष के समान है, जिसको सम्पन्न करने का समस्त प्रकार के भौतिक, दैविक, दैहिक और आध्यात्मिक फलों की प्राप्ति होती है।

साधना विधि

यह साधना पांच दिन की है तथा इसे **होली, दीपावली, नवरात्रि, पुष्य नक्षत्र, शुभ योग अथवा किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।** सर्वप्रथम साधक पूर्ण शुद्धता के साथ स्नान कर **सफेद धोती** धारण करें, फिर **गुरु पीताम्बर** ओढ़ लें और **सफेद आसन** बिछाकर उस पर **उत्तर की ओर मुंह** कर बैठें, सामने **गुरु चित्र** का स्थापन करें।

इसके बाद तेल का दीपक और घी का दीपक जला कर चित्र का संक्षिप्त पूजन करें, अर्थात् चित्र को कुंकुम अर्पित करें, चावल चढ़ावें, पुष्प समर्पित करें और दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें, इसके बाद निम्न मंत्रों से हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें -

आचमन

ॐ ह्रीं आत्म तत्वाय स्वाहा
ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय स्वाहा
ॐ ह्री शिव तत्वाय स्वाहा

गुरु ध्यान

इसके बाद गुरुदेव को अपने सिर के भीतर स्थित सहस्रदल कमल के बीच में स्थापित जानकर, ध्यान करें और निम्न स्तोत्र का उच्चारण करें -

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिम्

काल सर्प दोष निवारण मंत्रः ***ॐ नमोअस्तु सर्पेभ्यो काल सर्पदोष नाशय शान्ति कुरु कुरु ॐ फट्***

द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व धी साक्षि भूतम्
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

इसके बाद सामने **'त्रिपुर सुन्दरी यंत्र'** को जल से स्नान कराकर अपने सामने स्थापित करें। यंत्र पर कुंकुम, अक्षत, अर्पित करें। यंत्र के सामने ही **'त्रिपुर सुन्दरी माला'** को भी स्थापित करें एवं उस पर कुंकुम अर्पित करें।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर भक्ति भाव से भगवती त्रिपुर सुन्दरी के दिव्य स्वरूप का ध्यान करें।

पीठ पूजा

ध्यान के पश्चात् यंत्र पर अक्षत चढ़ाते हुए नव शक्तियों का क्रम से पूजन करें -

ॐ विभूत्यै नमः। *ॐ उन्मन्यै नमः।*
ॐ कान्त्यै नमः। *ॐ सृष्टयै नमः।*
ॐ कीर्त्यै नमः। *ॐ सन्मत्यै नमः।*
ॐ पुष्टयै नमः। *ॐ उत्कृष्टयै नमः।*
ॐ ऋष्टयै नमः।

अष्ट देवी पूजा

अपने बायें हाथ में आठ पुष्प लेकर मंत्रोच्चार करते हुए, यंत्र पर अर्पित करते हुए अष्ट देवियों की पूजा करें -

ॐ बलाक्यै नमः। बालाकी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ विमलायै नमः। विमला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ कमलायै नमः। कमला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ वनमालिकायै नमः। वनमालिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ विभीषिकायै नमः। विभीषिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ मालिकायै नमः। मालिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ शांकर्यै नमः। शांकरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ वसुमालिकायै नमः। वसुमालिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुष्पांजलि

पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या सवर्पये तुभ्यं पुष्पाञ्जलिं तवार्चनम्॥

पुष्प को यंत्र पर चढ़ावें तथा नैवेद्य अर्पित करें।

अष्टदेवी पूजा के पश्चात् **'त्रिपुर सुन्दरी माला'** से मूल मंत्र की 11 माला जप सम्पन्न करें -

मंत्र

॥ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं॥

मंत्र जप के पश्चात् विनम्र भाव से भगवती को प्रणाम कर अपनी मनोकामना को अतिशीघ्र पूर्ण करने की प्रार्थना करें तथा निम्न स्तोत्र का पाठ करें -

ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी॥
आग्नेयां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते।
वायव्यां पातु चामुंडा इन्द्राणी पातु ईशके॥
जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमंगला।
आकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी॥

स्तोत्र पाठ के बाद पुनः गुरुदेव को प्रणाम करें तथा देवी को चढ़ाया गया नैवेद्य पूरे परिवार में वितरित करें।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने वाले साधक की दरिद्रता समाप्त होती है तथा विपुल धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

पांच दिन तक इसी क्रम से पूजन करें तथा छठे दिन यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

इस प्रयोग में उपयोग होने वाली त्रिपुर सुन्दरी माला के प्रत्येक मनके को अलग-अलग मंत्रों से सिद्ध किया गया है और प्राण-प्रतिष्ठा की गई है, इस दृष्टि से यह माला साधकों के लिए अत्यंत उच्चकोटि की बन गई है। माला को पूजा स्थान में ही रहने दें तथा नित्य धूप दीप दिखायें।

'जीवन की दुर्लभ एवं अद्वितीय राज राजेश्वरी त्रिपुर साधना मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप है।'

अतः विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 490/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आपके गुरु परिवार में दो नये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप 490/- की न्यौछावर राशि भेज कर नवरात्रि साधना सामग्री-पैकेट प्राप्त कर सकते है।

तंत्र बाधा निवारण मंत्रः *ॐ ऐं ह्रीं तंत्र निवारणाय फट्*

नक्षत्रों की वाणी

मेष -

पहले की अपेक्षा अब आप अपनी योग्यताओं को अधिक क्रियान्वित कर पाएंगे क्योंकि इस माह ग्रह-नक्षत्र आपके पूर्णतः अनुकूल हैं। किसी नए कार्य को आरंभ करने की सोच रहे है तो उसके लिए यही समय सर्वथा उपयुक्त रहेगा। यात्रा का योग भी प्रबल है तथा यात्राओं से आपको आशातीत लाभ होगा। मित्र एवं संबधी आपकी सहायता करेंगे। आध्यात्मिक और धार्मिक आयोजनों में आप भाग लेंगे। किसी मित्र या परिचित से मिलकर प्रसन्नता होगी। आप **'लीलावती अप्सरा साधना'** (जुलाई 2007) करें। विशेष तिथियां - 1, 4, 7, 16, 22, 25 हैं।

वृष-

'कोई भी कार्य करने से पहले भली भांति सोच विचार कर लें तथा अपने परिचितों से परामर्श अवश्य कर ले। पारिवारिक उत्सवों और समारोहों में आप व्यस्त रह सकते है। जीवन साथी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। आप अपने व्यवहार द्वारा दूसरों का दिल जीत लेने में सफल होगें तथा आपको इससे बहुत लाभ भी होगा। इस माह साधनाओं तथा अध्यात्म में भी आपकी अधिक रूचि रहेगी। कला तथा संचार क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय उत्तम रहेगा तथा उन्हें आर्थिक सफलता प्राप्त होगी। आप **'वीर वैताल सिद्धि साधना'** (जून 2007) करें। तिथियां - 1, 3, 6, 8, 18, 27, 28 हैं।

मिथुन-

कार्य क्षेत्र एवं व्यवसाय में कुछ संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होगी। समस्याओं का समाधान अपनी सूझबुझ से ही करें, दूसरों पर निर्भर रहे तो घाटे में रह सकते हैं। परिवार के किसी सदस्य से मतभेद होने पर संयम से काम लें अन्यथा स्थिति बिगड़ सकती है। महिलाएं अपने उच्च अधिकारियों से अनबन न करें। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए समय ठीक रहेगा। परीश्रम से अच्छी नौकरी प्राप्त होने की संभावना है। इस माह अविवाहित युवक-युवतियों के लिये विवाह के प्रबल योग बन रहे है। आप **'अमृतो साधना'** (जून 2007) करें। तिथियां - 1, 4, 8, 13, 20, 23, 27 हैं।

कर्क-

आप तीव्रता से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आप इसी तरह से प्रयास करते रहे तो शीघ्र ही सफलता आपके कदम चूमेगी तथा आप अपने सपनों और योजनाओं को साकार रूप दें पाएंगे। परंतु अपने प्रयासों में शिथिलता न आने दें और प्रतिकूल से प्रतिकूल स्थिति का डट कर मुकाबला करें। पिछले कुछ समय से चली आ रही धन की तंगी में सुधार होगा तथा आपको आकस्मिक लाभ होगा। कार्यकारी वर्ग के लिए समय उत्तम है। आप **'अक्षय पात्र साधना'** (अप्रैल 2007) करें। तिथियां - 2, 5, 9, 14, 18, 25 हैं।

सिंह-

पूरे माह भर कार्य में आपका मन नहीं लगेगा तथा आप चाहेंगे कि सब छोड़कर कहीं यात्रा पर निकल जाएं। अच्छा रहेगा कि आप कुछ दिन का अवकाश लेकर कहीं घूम आएं। तीर्थ यात्रा पर जाएंगे तो और भी अच्छा होगा, इससे न केवल मन शांत होगा अपितु स्वास्थ्य लाभ भी होगा। अगर आप बेरोजगार है तो आपको कुछ अवसर तो प्राप्त होंगे परन्तु काम बनते-बनते रह जाएगा, जिससे खिन्नता होगी। धैर्य न खाएं, जल्द ही समय अनुकूल होगा। विद्यार्थीयों के लिये समय उत्तम है। आप **'नवग्रह साधना'** (मई 2007) करें। शुभ तिथियां - 2, 7, 11, 17, 22, 25 हैं।

कन्या-

कुछ अज्ञात शत्रु इस माह सक्रिय रहेंगे तथा आप को हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे। बहुत संभव है कि अपने आपको मित्र और शुभ चिंतक दिखलाने वाले ही कुछ व्यक्ति आपका अहित करने की चेष्टा करें। अतः आप सावधान रहें। प्रतिकूल परिस्थितियों में संयम न खोएं और न ही क्रोधित हों। सामाजिक कार्यों में आप सक्रिय रहेंगे तथा आपकी उदारता के कारण लोग आपकी प्रशंसा करते नहीं थकेंगे। शेयर बाजार में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय लाभदायक सिद्ध हो सकता है। आप **'हनुमान साधना'** (मार्च 2007) करें। तिथियां - 1, 4, 7, 19, 23, 25, 30 हैं।

तुला -

नौकरी में परिवर्तन या नया व्यवसाय आरंभ करने के लिए समय अभी अनुकूल नहीं। अगर आप अभी ऐसा कुछ सोच रहे है तो थोड़ा धैर्य रखें तथा अनुकूल समय की प्रतीक्षा करें। ठीक समय पर किये गये कार्य से आप लाभ उठा पाएंगे। प्रेम प्रसंग में सावधान रहें अन्यथा बदनामी हो सकती है। संतान की उपेक्षा न करें तथा उनकी इच्छाओं और अध्यापन में रुचि लें वे आपके सुझावों को सराहेगे तथा सही मार्ग चुनने में सक्षम होंगे। परिवार में नये मेहमान के आगमन से उत्सव जैसा वातवारण रहेगा। आप **'भगवती विंध्यवासिनी साधना'** (मार्च 2007) करें। तिथियां - 7, 12, 17, 20, 23, 29 हैं।

वृश्चिक -

यह माह आपके लिए प्रसन्नता तथा उमंगों से भरा सिद्ध होगा। आप अपने कार्य से कुछ समय निकाल कर मनोरंजन तथा यात्राओं में बिताएंगे। कार्यक्षेत्र में भी वातावरण सुखद होगा तथा आप अपने मौलिक विचारों द्वारा कुछ बहुत अच्छी योजनाएं बना पाएंगे जिसकी सभी लोग सराहना करते नहीं थकेंगे। परंतु कहीं कोई बाधा उत्पन्न हो जाए तो धैर्य न खोए। वह समस्या स्वयं ही सुलझ जाएगी। प्रेम प्रसंगों में सफलता प्राप्त होगी और यदि आप अविवाहित है तो इस माह संबन्ध संपन्न हो सकता है। आप **'सम्मोहन साधना'** (जून 2007) करें। तिथियां - 4, 8, 12, 19, 21, 25, 30 हैं।

धनु -

कोई भी कदम उठाने से पहले भली भांति उसके परिणाम के विषय में सोच विचार कर लें। इस माह किसी व्यक्ति पर बहुत अधिक विश्वास न करें अन्यथा वह आपको धोखा दे सकता है। कला जगत से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय विशेष शुभ रहेगा। उनकी कला प्रतिभा की सराहना होगी तथा उन्हें कोई पुरस्कार भी मिल सकता है। जमीन जायदाद या वाहन के क्रय-विक्रय में धोखा हो सकता है अतः सावधान रहें। स्त्रियां अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। इस माह परिस्थितयों को अनुकूल बनाने के लिए आप **'हनुमान साधना'** (मार्च 2007) करें। तिथियां - 7, 9, 13, 16, 22, 24, 29 हैं।

मकर -

अपनी जिम्मेवारियों से मुंह मोड़ना ठीक नहीं भले ही दूसरे अपने कर्त्तव्यों के प्रति कितने भी लापरवाह क्यों न हो आप भली प्रकार से अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करें। कोई व्यक्ति आपको इस माह धोखा दे सकता है, इसलिए धन उधार देते समय या किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करने से पूर्व भली भांति सोच समझ लें। किसी की मीठी मीठी बातों में आकर अपना नुकसान न कर बैठे। बहुत पुराने किसी मित्र से भेंट होने से मन प्रसन्न होगा। आप **'लक्ष्मी विनायक साधना'** (मई 2007) करें। तिथियां - 1, 2, 6, 10, 17, 23, 28 हैं।

योगः सिद्ध योग - 1, 4, 6, 7, 15 सितम्बर/3, 11, 12, 20 अक्टूबर

☆ सर्वार्थ सिद्ध योग - 15, 28 सितम्बर/13, 15, 20, 29 अक्टूबर

☆ द्विपुष्कर योग - 23 अक्टूबर ☆

कुंभ -

इस माह कुछ संघर्ष के बाद आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती है तथा आपके प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने का प्रयास कर सकते है। परंतु आप उनकी ओर ध्यान न दें और अपने कार्य में लगे रहें। आप धैर्य से काम लेंगे तो उनके प्रयास स्वयं ही विफल हो जाएंगे। व्यापारियों के लिए आवश्यक है कि किसी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे भली-भांति पढ़ लें। विद्यार्थी इस समय में सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप **'लीलावती अप्सरा साधना'** (जुलाई 2007) करें। तिथियां - 5, 9, 15, 19, 22, 29 हैं।

मीन -

अगर आप नौकरी पेशा हैं तो हो सकता है इस माह आपका पुरानी नौकरी छोड़नी पड़े और नई करनी पड़े। आरंभ में हो सकता है कि परिस्थितियां आपके प्रतिकूल हों परंतु अगर आप धैर्य और संयम से काम लेंगे तो शीघ्र ही वातावरण आपके अनुकूल हो जाएगा। घर भी बदलने के योग हैं। यात्राओं पर भी जा सकते है। उनसे आपको लाभ ही होगा। परिवार के किसी सदस्य के अस्वस्थ होने से चिंता हो सकती है। वाहन का प्रयोग करते समय सावधान रहें। संतान की ओर से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। आप **'नवग्रह साधना'** (मई 2007) करें। तिथियां - 2, 6, 10, 13, 19, 24, 26 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

16 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल - **05**	रविवार	ऋषि पंचमी
24 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल - **12**	सोमवार	सोम प्रदोष व्रत
25 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल - **13**	मंगलवार	अनन्त चतुर्दशी व्रत
26 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल - **15**	बुधवार	पूर्णिमा/श्राद्ध पक्ष प्रा.
27 सितम्बर	आश्विन कृष्ण- **01**	गुरुवार	श्राद्ध प्रतिपदा
06 अक्टूबर	आश्विन कृष्ण- **11**	शनिवार	श्राद्ध एकादशी
11 अक्टूबर	आश्विन कृष्ण- **30**	गुरुवार	अमावस्या/माता श्राद्ध
12 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल- **01**	शुक्रवार	नवरात्रि प्रा./घट स्थापन

दीपावली साधना कैसे करें?

हम भेज रहे हैं आपको

मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त

अष्टमहालक्ष्मी साधना पैकेट



चिन्ता मत करिये, गुरुदेव आपका पल-पल ध्यान रखते हैं।
कौन से कौन समय क्या साधना करनी है?
वे जानते हैं कि महालक्ष्मी पर्व दीपावली कितना महत्वपूर्ण तांत्रोक्त साधना पर्व है।

लक्ष्मी जीवन का सर्वाधिक अभिन्न स्वरूप है

दीपावली की रात्रि में महालक्ष्मी पूजन होना ही चाहिए

जिस घर में महालक्ष्मी पूजन नहीं होता है वहां लक्ष्मी की बड़ी बहन अलक्ष्मी का आगमन होता है।

अलक्ष्मी का तात्पर्य है दरिद्रता, शोक, धन-हानि, श्रीहानि। कैसी भी स्थिति हो दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन अवश्य करना चाहिए।

पूजन का तात्पर्य कोई बहुत बड़ी खुशी अथवा उत्सव नहीं है। पूजन का तात्पर्य देवी का आह्वान और साधना है, इसलिये हर स्थिति में यह पूजन सम्पन्न किया जाना चाहिए।

जो बीत गया सो बीत गया उसे याद कर कभी अपने पूजन साधना से नहीं भटकना चाहिए।

यह साधना लक्ष्मी की साधना है। जिसे बाल, युवा, वृद्ध, नर-नारी प्रत्येक को सम्पन्न करनी चाहिए।

इस दीपावली पर्व पर गिड़गिड़ाकर रोते हुए, भीख मांगते हुए साधना नहीं करनी है अपितु दृढ़ मन, स्वस्थ चित्त, कर्मठता के साथ अष्ट लक्ष्मी साधना सम्पन्न करनी है। ये दीपावली का पर्व ''श्री'' तंत्र सिद्धि दिवस है और तंत्र का तात्पर्य है कठिन से कठिन काम को भी सरलता से सम्पन्न कर देना। इसलिये इस बार पूर्ण विधिविधान सहित केवल सायं काल ही नहीं अपितु पूरी रात्रि वृषभ लग्न और सिंह लग्न दोनों में ही अष्ट महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करनी है। यह दीपावली का पूजन नहीं है, यह साधना है और जहां साधना है वहां सत्य है, और जहां सत्य है वहां कर्म निष्ठा है। याद रखिये भाग्य भी उनका साथ देता है जो पूर्ण निष्ठा के साथ कर्म करते हैं। इसलिये इस दीपावली के शुभ अवसर पर हमें कर्मशील, निष्ठावान, चैतन्य बनना है। एक संकल्प लेना है कि मैं अपने ऊपर से गरीबी, निर्धनता का बोझ उतार फेंकूगा, एक संकल्प लेना है कि मैं अपने ऊपर से कर्ज का बोझ समाप्त कर दूंगा। एक संकल्प लेना है कि मैं अपने जीवन में श्री और वृद्धि, सम्मान प्राप्त करने का इच्छुक हूं और वह मुझे साधना के माध्यम से प्राप्त हो।

महालक्ष्मी सभी शक्तियों का केन्द्र बिन्दु है। इस एक शक्ति से ही सारी शक्तियों का, महाविद्याओं का तत्व छुपा हुआ है। दीपावली के अवसर पर महालक्ष्मी का विशेष पूजन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी भगवान विष्णु की सेवा से अवकाश लेकर धरती पर आती है, और वर्ष की इस रात्रि को प्रत्येक घर में जाती है जहां उसकी पूजा होती है, जहां उसकी आराधना-अर्चना होती है और फिर यदि उस महालक्ष्मी की विशेष तांत्रोक्त पद्धति से पूजा करते हुए इस रात्रि को साधना की जाए, तो लक्ष्मी को मात्र इस रात्रि को घर में आना ही नहीं पड़ता अपितु वर्ष भर के लिए घर में ही रह जाने के लिए बाध्य हो जाना पड़ता है। तांत्रोक्त पूजन का यही तात्पर्य होता है।

दीपावली का पर्व केवल इसलिए नहीं मनाया जाता है कि भगवान राम लंका विजय कर वापस अयोध्या पधारे थे। यह तो महापूजा की रात्रि होती है, जिसमें जलाई गई ज्योति पूरे वर्ष भर साधक के घर को जगमग करती रहती है। इस दिन जो प्रसन्नता

का वातावरण बने वह पूरे वर्ष बना रहे, इस दिन जो संकल्प लें, आराध्या महालक्ष्मी का जो आह्वान करें, वह पूर्ण हो।

पूर्ण साधना का तात्पर्य है महालक्ष्मी अपनी सभी शक्तियों के साथ आपके घर में विराजमान हो, वह महालक्ष्मी आपके व्यक्तित्व में स्पष्ट हो। इसीलिये लक्ष्मी के सर्वश्रेष्ठ स्वरूप को यंत्र रूप में जब परिवर्तित किया जाता है तो उसे अष्ट लक्ष्मी यंत्र कहा जाता है। यह यंत्र लक्ष्मी की अष्ट शक्तियों से युक्त होता है। लक्ष्मी पूजन का तात्पर्य लक्ष्मी चित्र को स्थापित कर केवल आरती करना नहीं है अपितु उसके साथ कीर्ति के लिये सौभाग्यवर्द्धक तांत्रोक्त नारियल का पूजन आवश्यक है।

सरस्वती सिद्धि के लिये हेरम्ब गणपति का पूजन आवश्यक है। शक्ति एवं गुरु कृपा के लिये निखिल सिद्धि गुटिका का पूजन आवश्यक है। लक्ष्मी का श्रेष्ठ रूप भूमि है, इस हेतु भू-लक्ष्मी स्वरूप वसुधा गोमती चक्र का पूजन अति आवश्यक है। तृष्टि और पुष्टि के लिये ऋद्धि-सिद्धि चैतन्य बीजों का मंत्र जप आवश्यक है। सम्पूर्ण सौन्दर्य के लिये कामदायनी मुद्रिका धारण करना आवश्यक है, जिससे गृहस्थ जीवन पूर्ण रूप से आनन्द, आलोकित हो सके, लक्ष्मी रत्न के रूप में मंत्रसिद्ध लक्ष्मी हकीक का अर्पण यंत्र पर आवश्यक है। इसी के साथ अपने कार्य में सफलता एवं सिद्धि के लिये तांत्रोक्त सिद्धि फल का समर्पण आवश्यक है। जब इस प्रकार लक्ष्मी की साधना की जाती है तो पूरे वर्ष घर में मां लक्ष्मी विराजमान रहती है।

आपने ध्यान दिया होगा गुरुदेव दीपावली के शुभ अवसर पर अपने शिष्यों को गुरुधाम में इसीलिये आमंत्रित करते हैं, जिससे वह पूर्ण विधि विधान से वृष लग्न और सिंह लग्न दोनों में पूजन कर सकें।

आपको मालूम है कि आज से दो महीने बाद दीपावली है और दीपावली के 5 दिनों में धन-त्रयोदशी से द्वितीया तक विशेष साधनाएं कर पूरे वर्ष को नवीनता से युक्त करना है। लेकिन शायद आपने आलस्य को अपना सर्वश्रेष्ठ मित्र बनाया हुआ है। इस कारण समय रहते मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री नहीं मंगा पाते और जैसे-तैसे पूजन कर लेते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए।

यह आलेख आपको सूचना देने के लिये है कि 'मंत्र-तंत्र-यंत्र' विज्ञान कार्यालय में आपकी साधना के लिये आवश्यक **''दीपावली अष्ट महालक्ष्मी साधना पैकेट''** पर मंत्र-प्राणप्रतिष्ठा एवं यज्ञ का कार्य प्रारम्भ हो गया है और कुछ ही दिनों में आपके पास सामग्री भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

शास्त्रों में लिखा है, कि भाग्य लेखन विधाता करता है और इसको मानव अपने प्रयत्न या परिश्रम से नहीं बदल सकता। केवल एक ही मार्ग ऐसा है, जिससे भाग्य में परिवर्तन किया जा सकता है, अशुभ लेखन को शुभ में परिवर्तित किया जा सकता है, यदि भाग्य में दरिद्रता लिखी है, तब भी उसे परिवर्तित कर श्री सम्पन्नता लिखी जा सकती है और यह मार्ग है - साधना।

इस साधना पैकेट में - **प्राण प्रतिष्ठित अष्ट महालक्ष्मी यंत्र, सिद्ध लक्ष्मी हकीक, वसुधा गोमती चक्र, दारिद्र्य शमन हेरम्ब, कामदायिनी मुद्रिका, सौभाग्यवर्धन नारियल, निखिल सिद्धि गुटिका, लक्ष्मी सिद्धि फल, ऋद्धि-सिद्धि बीज।**

आपके लिये यह उचित रहेगा कि अभी से आप कार्यालय को सूचना भेज दें। आप पत्रिका के इस अंग में पोस्टकार्ड सं. 5 जिससे समय पर आपको यह सामग्री प्राप्त हो जाएं और जब यह सामग्री आपको प्राप्त हो तो इसे पीले वस्त्र में बांध कर घर में किसी विशेष स्थान अथवा किसी बॉक्स में रख दें तथा धन त्रयोदशी को यह सामग्री निकाल कर अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। धन-त्रयोदशी और रूप चुतदर्शी को केवल अगरबत्ती और दीपक जलायें। पूर्ण विधि विधान से पूजन दीपावली की रात्रि को वृषभ लग्न और सिंह लग्न में ही करना है।

दीपावली पर्व अर्थात् कार्तिक कृष्ण अमावस्या जब घनघोर स्याह अंधेरी रात होती है और यह रात्रि कालरात्रि कहलाती है। तब दीपावली जलाकर काल रूपी अन्धकार को हटाकर जीवन में चतुर्वर्ग प्रकाश हेतु भगवती महालक्ष्मी 'श्री' का आह्वान किया जाता है। लेकिन क्या दीपक जलाकर, अगरबत्ती धूप कर आरती करने मात्र से ही लक्ष्मी प्रसन्न हो जाती है? शास्त्रों के अनुसार तो कदापि नहीं, इस रात्रि को विधि-विधान सहित लक्ष्मी साधना करने से लक्ष्मी अपने अष्टरूपों में प्रकट होकर सिद्धि, भूमि, अर्थ, काम, सौभाग्य, ऋषि-सिद्धि और देव कृपा, गुरु कृपा प्रदान करती है, इस प्रकार लक्ष्मी साधना पूजन आवश्यक है जो जीवन के सब पक्षों को जाग्रत करता हो।

यह याद रखें कि समुद्र मंथन के पश्चात् लक्ष्मी ने स्वयं ऋषियों मुनियों को कहा कि देवताओं में तो मैं निवास करूंगी, पर मृत्युलोक में मैं भ्रमण करूंगी, इसका तात्पर्य यहहै कि जहां लक्ष्मी का स्वागत होगा, जहां उसकी पूजा होगी जहां उसकी कामना होगी, वहां लक्ष्मी अवश्य आयेगी, जहां-जहां पाप दोष से युक्त होकर व्यक्ति इच्छाहीन, क्रियाहीन, ज्ञानहीन हो जायेगा, गर्व, घमण्ड, अभिमान के मद में लक्ष्मी की उपेक्षा करेगा, वहां से लक्ष्मी निकल जायेगी, क्योंकि लक्ष्मी तो चंचला है।

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है ह्न जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रात: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर 16, 23, 30)	दिन **06:00 से 10:00 तक** रात **06:48 से 07:36 तक** **08:24 से 10:00 तक** **03:36 से 06:00 तक**
सोमवार (सितम्बर 17, 24)	दिन **06:00 से 07:30 तक** **10:48 से 01:12 तक** **03:36 से 05:12 तक** रात **07:36 से 10:00 तक** **01:12 से 02:48 तक**
मंगलवार (सितम्बर 18, 25)	दिन **06:00 से 08:24 तक** **10:00 से 12:24 तक** **04:30 से 05:12 तक** रात **07:36 से 10:00 तक** **12:24 से 02:00 तक** **03:36 से 06:00 तक**
बुधवार (सितम्बर 19, 26)	दिन **07:36 से 09:12 तक** **11:36 से 12:00 तक** **03:36 से 06:00 तक** रात **06:48 से 10:48 तक** **02:00 से 06:00 तक**
गुरुवार (सितम्बर 20, 27)	दिन **06:00 से 08:24 तक** **10:48 से 01:12 तक** **04:24 से 06:00 तक** रात **07:36 से 10:00 तक** **01:12 से 02:48 तक** **04:24 से 06:00 तक**
शुक्रवार (सितम्बर 21, 28)	दिन **06:48 से 10:30 तक** **12:00 से 01:12 तक** **04:24 से 05:12 तक** रात **08:24 से 10:48 तक** **01:12 से 03:36 तक** **04:24 से 06:00 तक**
शनिवार (सितम्बर 15, 22, 29)	दिन **10:30 से 12:24 तक** **03:36 से 05:12 तक** रात **08:24 से 10:48 तक** **02:00 से 03:36 तक** **04:24 से 06:00 तक**

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अक्टूबर

1. भगवान शिव को आक के पुष्प अर्पित करें।
2. प्रातः बिस्तर से उठते समय पहले दाहिना पैर नीचे रखें।
3. गणेश जी को पीले पुष्प अर्पित करें।
4. आज गुरु आरती सम्पन्न करके सद्गुरुदेव को खीर का भोग लगाए तथा प्रसाद परिवार में वितरित करें।
5. **'सौंदर्य तेजस'** (न्यौछावर 60/-) को शरीर से स्पर्श करके जल में प्रवाहित कर दें। शारीरिक तेज में वृद्धि होगी।
6. आटे से बने दीये में सरसों का तेल डालकर प्रज्ज्वलित करें। पूरे घर में घूमाकर किसी निर्जन स्थान रख दें।
7. किसी निर्धन को सफेद वस्त्र एवं सफेद अनाज दान करें।
8. प्रातः 51 बार ***'ॐ ह्रौं जूं सः'*** मंत्र का जप करें।
9. सरसों के तेल का दीपक लगाकर 5 बार **हनुमान बाण** का पाठ करें। विघ्न समाप्त होंगे।
10. **'धूमावती गुटिका'** (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर दक्षिणा सहित देवी मंदिर में अर्पित करें। शुभ रहेगा।
11. आज पितरों को नमस्कार कर उन्हें जल अर्पित करते हुए ***'ॐ ऐं सर्व पितृभ्यो स्वधा'*** का 21 बार जप करें।
12. आज नवरात्रि प्रारम्भ हो रही है कलश स्थापन करें तथा दुर्गा पूजन एवं दुर्गा साधना करें।
13. घर से बाहर जाते समय दही खा लें। सफलता प्राप्त होगी।
14. ***'ॐ भास्कराय विदमहे महातेजेस धीमहि, तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्'*** मंत्र का 11 बार उच्चारण करते हुए, उगते सूर्य को जल अर्पित करें।
15. **'शिवा'** (न्यौछावर 60/-) का पूजन बिल्व पत्र, कुंकुम एवं सफेद पुष्पों से करके किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।
16. हनुमान जी को चूरमें का भोग लगाएं।
17. प्रातः काल भगवति लक्ष्मी को कमल पुष्प अर्पित करते हुए 21 बार निम्न मंत्र का जप करें।

ॐ सर्वबाधा विनिर्मुक्ताः धनधान्य समन्वितः मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।।

18. प्रातः सद्गुरुदेव के चित्र पर श्वेत पुष्प अर्पित करें।
19. संभव हो तो यज्ञ करें अथवा नवार्ण मंत्र का ५ माला जप अवश्य करें।
20. **'कामदा'** (न्यौछावर 60/-) का कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें। फिर किसी कामना की पूर्ति हेतु प्रार्थना करें। कामदा को जल में प्रवाहित कर दें।
21. गुरु-जन्म दिवस के रूप में निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पाठ करें। आज विजयादशमी के दिन कोई विशेष साधना का संकल्प अवश्य लें।
22. ध्यानावस्था में बैठकर मन ही मन दस मिनट तक ***'सोऽहं'*** मंत्र का जप करें।
23. पांच लौंग को एक कागज में बांधकर, कार्य की सफलता की प्रार्थना करें, फिर उसे जल में प्रवाहित कर दें।
24. कार्य को आरम्भ करने से पहले गणपति ध्यान करते हुए ***'ॐ गं गणपतये नमः'*** का 5 बार जप करें।
25. आज **'निखिलेश्वर शतकम्'** का पाठ करें।
26. तुलसी के पौधे पर दीपक जलायें करें। शुभत्व प्राप्त होगा।
27. **'तांत्रोक्त नारियल'** (न्यौछावर 60/-) पर सरसों के तेल एवं कुंकुम से लेपन कर उसे निर्जन स्थान में गाढ़ दें।
28. सूर्य भगवान को अर्घ्य समर्पित करके ही भोजन करें।
29. आज सुहाग की चीजें अर्थात् बिंदी, कुंकुम, साड़ी आदि किसी निर्धन स्त्री को दान में दें।
30. प्रातः काल ***'ॐ वज्र वीर हनुमंताय हुं फट्'*** मंत्र का 27 बार उच्चारण करें। अनिष्ट टलेगा।
31. गणेश जी को लड्डू का भोग लगाएं।

धधकती है ज्वाला जब हृदय में
तो अंगारे धधकर कर बन जाते हैं अग्नि
अग्नि जाग्रत होती है; भस्म होते हैं दोष
तब समाप्त होते हैं जीवन के शत्रु रोष

शक्ति आपकी चेरी है और जीवन अग्निमय है

समाप्त कर दीजिये

रोग शोक दुःख पीड़ा सन्ताप शत्रु और कीजीए

ज्वालामालिनी साधना

ऐसी देवी की साधना करने के लिए उच्चकोटि के ऋषि एवं तांत्रिक, भी प्रयासरत रहते हैं, यह एक अत्यन्त ही दुर्लभ एवं गुप्त साधना है, जिसको सिद्ध करना असम्भव है, किन्तु इस साधना को सम्पन्न करने पर, उस साधक को इस दैवी-शक्ति का कुछ अंश तो प्राप्त होता ही है और वह अंश मात्र ही, साधक को सुखमय जीवन प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है।

ज्वालामालिनी, जिसकी उत्पत्ति, जिसका निर्माण शिव के तेज से हुआ और जो शिव का ही एक अंश स्वरूप है।

कहा जाता है कि एक बार शिव बहुत समय तक एक शिला पर ध्यानस्थ बैठे रहे। बहुत दिनों के पश्चात् भी जब वे पार्वती के पास नहीं लौटे, तो पार्वती ने उनकी ध्यानावस्था को भंग करने के लिए देवताओं का सहारा लेना चाहा, लेकिन कोई भी देवता शिव के क्रोध का सामना करने का साहस नहीं जुटा सका, तब ऐसे समय में पार्वती ने कामदेव को आज्ञा दी वहां जाने की, कामदेव पार्वती की आज्ञा को सर्वोपरि मान कर वहां से उनका आशीर्वाद प्राप्त कर उस शिला के पास पहुंचे, जहां शिव पूर्णरूप से ध्यान मग्न बैठे थे, केवल मात्र कामदेव ही थे जिन्होंने शिव की ध्यानावस्था को भंग करने का दुस्साहस किया, और जब उन्होंने ऐसा किया तो शिव उन पर अत्यन्त क्रोधित हो उठे, तब उनके त्रिनेत्र से निकली धधकती ज्वाला ने उसी क्षण उसे भस्म कर दिया, किन्तु तब भी वह ज्वाला शांत नहीं हुई। इस क्रोधाग्नि में कई और देवी-देवता जलकर भस्म हो जाते, इसी कारणवश उस तीक्ष्ण ज्वाला को शांत करने के लिए, उस ज्वाला से शिव ने एक शक्ति स्वरूप का निर्माण किया, जिससे कि कुछ अनिष्ट न घटित हो... इस प्रकार शिव की क्रोधाग्नि से एक तेजपुञ्ज प्रकट हुआ और देखते ही देखते समस्त देवी-देवताओं के समक्ष **'ज्वालामालिनी'** नामक शक्ति स्वरूपा का जन्म हो गया।

ज्वालामालिनी, जो शिव की ऊर्जा शक्ति है, पूर्ण शक्तिशालिनी है, और जिसको समस्त देवी-देवता भी नमन करते हैं।

ऐसी देवी की साधना करने के लिए उच्चकोटि के ऋषि एवं तांत्रिक भी प्रयासरत रहते हैं, यह एक अत्यन्त ही दुर्लभ एवं गुप्त साधना है, जिसको सिद्ध करना असम्भव है किन्तु इस साधना को सम्पन्न करने पर, उस साधक को इस दैवी-शक्ति का कुछ अंश तो प्राप्त होता ही है और वह अंश मात्र ही साधक को

भुवनेश्वरी मंत्रः ॐ ह्रीं ॐ

सुखमय जीवन प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है।

ज्वालामालिनी तंत्र साधना का प्रभाव अपने-आप में अचूक होता ही है, और जब कोई साधक साधना सम्पन्न करता है, तो उसे उस देवी या देवता की ऊर्जा शक्ति प्राप्त होती ही है। उसका प्रभाव कभी व्यर्थ नहीं जाता, आवश्यकता है, तो श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की।

क्योंकि शब्द **'पूर्ण ब्रह्म'** है और प्रत्येक शब्द का अपने-आप में प्रभाव होता है, ऐसा कोई शब्द नहीं है, जिसका हम उच्चारण करें और उसका प्रभाव न हो, यह अलग बात है कि हम सही प्रकार से उच्चारण न कर सकें या हमें उन शब्दों पर विश्वास न हो, एक ऐसा ही प्रयोग है यह, जिसका प्रभाव होता ही है।

ज्वालामालिनी साधना सम्पन्न करने से भले सिद्धि प्राप्त न होती हो, पर इस अद्वितीय साधना को प्रत्येक साधक को बार-बार अपने जीवन में सम्पन्न करते ही रहना चाहिए, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने पर उस साधक के ऊपर विपरीत परिस्थितियां हावी नहीं होती हैं। वे साधना के प्रभाव से उसके अनुरूप होती चली जाती है।

ज्वालामालिनी साधना द्वारा व्यक्ति अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति शीघ्र ही कर सकता है, क्योंकि साधना के द्वारा उसके मन के अनुरूप ही कार्य घटित होने लग जाते हैं, जिससे कि वह साधक अपना मनचाहा कार्य पूर्ण कर लेता है।

यह किसी भी प्रकार के विघ्न-बाधाओं को दूर करने में सहायक तथा शत्रुनाशक साधना है।

इस विशिष्ट साधना को सम्पन्न कर साधक ओज, बल सभी कुछ प्राप्त कर लेता है, और उसकी कांतिहीन देह दिव्य आभा लिए लालिमा युक्त प्रतीत होने लगती है।

धीरे-धीरे उसकी सुन्दर देह यष्टि एवं उसका प्रभाव युक्त व्यक्तित्व दूसरों के आकर्षण का केन्द्र बनने लगता है, और सबसे बड़ी बात तो यह है, कि वह जब चाहे विपरीत होती परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर लेने में पूर्णतः सक्षम हो जाता है।

और तब वह हर क्षण उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता हुआ श्रेष्ठ एवं सफल जीवन प्राप्त कर लेता है।

यह एक ऐसा ही गोपनीय एवं तीक्ष्ण प्रभावकारी प्रयोग है, जिससे प्राप्त ऊर्जा-शक्ति के द्वारा शत्रु का विनाश हो जाता है।

समय-समय पर इस अद्वितीय प्रयोग को करते रहने से किसी भी प्रकार से शत्रु द्वारा किए गए टोने-टोटकों का प्रभाव व्यर्थ हो जाता है। यदि किसी व्यक्ति ने शत्रुतावश किसी व्यक्ति पर मूठ का प्रयोग किया हो, तो इस साधना द्वारा इस मूठ को विपरीत दिशा दी जा सकती है।

यह ऐसा ही प्रभावकारी एवं तेजस्वी प्रयोग है, जिसे प्रत्येक को सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधि

साधक किसी भी **शनिवार की रात्रि** को इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, और उसे एक बार ही नहीं अपितु बार-बार सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधना सामग्री को पहले से ही साधक एकत्र करके रख ले, जिसमें कुंकुम, अक्षत, घी का दीपक, पुष्पहार तथा **ज्वाला यंत्र, गुरु चित्र तथा ज्वाला माला**। यंत्र और माला प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए। साधक का मुख उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए, या पीले आसन का प्रयोग इस साधना में करना चाहिए।

इस प्रकार इस सामग्री को एकत्र कर साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर, पीली धोती पहन कर और ऊपर से गुरु चादर ओढ़ कर पूजा स्थान में वीरासन अथवा सिद्धासन में बैठ जाएं, और अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर, उस पर **'ज्वालामालिनी यंत्र'** और गुरुचित्र को स्थापित कर, फिर घी का दीपक प्रज्ज्वलित कर कुंकुम, अक्षत पुष्प से उनका पूजन करें। पूजन पश्चात् हाथ में जल लेकर संकल्प करें और अपना नाम तथा गोत्र का उच्चारण करें, जिस कार्य के लिए साधना कर रहे हैं, उसे बोलकर जल जमीन पर छोड़ दें।

साधक को सबसे पहले उस देवी का चिन्तन एवं ध्यान करना चाहिए, और उसके बाद **कर न्यास** और **अंग न्यास** का उच्चारण करें।

कर न्यास

ॐ नमो अंगुष्ठाभ्याम् नमः
भगवती तर्जनीभ्याम् स्वाहा
ज्वालामालिनी मध्यमाभ्याम् वषट्
गृध्र गण-परिवृते अनामिकाभ्याम् हुं
हुं फट् कनिष्ठिकाभ्याम् वौषट्
स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्याम् फट्

अंग न्यास

ॐ हृदयाय नमः
भगवती शिरसे स्वाहाः

छिन्नमस्ता मंत्रः *ॐ ह्रीं क्लीं बज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा*

ज्वालामालिनी शिखायै वषट्
गृध्र गण-परिवृते कवचाय हुं
हुं फट् नेत्रयाय वौषट्
स्वाहा अस्त्राय फट्

और फिर **ज्वाला माला** से गुरु मंत्र की 4 माला जप करें और फिर **ज्वाला माला** से ही निम्न मंत्र की 5 माला जप सम्पन्न करें –

मंत्र

॥ॐ व्रं व्रं ज्वाला मालिन्यै फट्॥

मंत्र-जप पूर्ण करने के पश्चात् 11 दिन तक उस माला को धारण करके रखें और इसके पश्चात् उस यंत्र एवं माला को किसी नदी अथवा तालाब में विसर्जित करें।

इस साधना काल में साधक को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, तथा भूमि पर ही शयन करना चाहिए तथा बिना भोजन किये ही श्रद्धा पूर्वक इस मंत्र का जप करने से उस साधक को विजय प्राप्त होती ही है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर इसका तीक्ष्ण प्रभाव साधक को प्राप्त होता ही है, इसके द्वारा शत्रुनाश तो होता ही है, साथ ही साथ साधक की प्रत्येक इच्छा भी पूर्ण होने लग जाती है, और यही नहीं अपितु क्रोध पर भी पूर्ण नियन्त्रण करने के लिए यह श्रेष्ठ साधना है।

अतः इसे प्रत्येक साधक को समय-समय पर सम्पन्न करते ही रहना चाहिए। जिससे कि साधक आने वाली विपत्तियों का सामना निर्भय हो, कर पाता है।

साधना सामग्री - 390/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गृहस्थ साधकों के लिये

भूत-प्रेत बाधा निवारण
तीव्र तांत्रोक्त ज्वालामालिनी साधना

ज्वालामालिनी शक्ति की उग्ररूपा देवी हैं, परन्तु अपने साधक के लिए अभयकारिणी हैं। इनकी साधना मुख्य रूप से उन साधकों द्वारा की जाती है, जिससे वे शक्ति सम्पन्न होकर पूर्ण पौरुष को प्राप्त कर सकें तथा उन्हें भूत-प्रेत आदि योनियों से भय न लगे। यह मूलतः इतर योनियां से भय मुक्त होने तथा उनके अपने ऊपर किए गए किसी आघात को निष्फल करने की साधना है।

ज्वालामालिनी की पूजा साधना गृहस्थों के मध्य भूत-प्रेत बाधा, तंत्र बाधा आदि के लिए, शत्रुओं द्वारा किए गए मूठ आदि प्राणघातक प्रयोगों को समाप्त करने के लिए की जाती है।

इस साधना को **मंगलवार** या **अमावस्या** को प्रारम्भ किया जा सकता है। यह तीन रात्रि की साधना है। संक्षिप्त गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र जप के बाद अपने सामने स्टील की थाली रख कर उसे अन्दर की तरफ से काजल द्वारा रंग दें। थाली के मध्य में साफ उंगली द्वारा काजल हटाते हुए अपना (या जिसके ऊपर भूत-प्रेत या तंत्र बाधा हो उसका) पूरा नाम अंकित कर दें। नाम के ऊपर कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प चढ़ाएं और धूप दिखाएं। फिर उस नाम के ऊपर **'ज्वालामालिनी यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र के ऊपर एक **'तांत्रोक्त नारियल'** स्थापित कर दें। अब अपने मस्तक पर काजल से तिलक करें और दोनों हाथ जोड़कर ज्वांलामालिनी का निम्न ध्यान करें –

तारं नमो भगवति ज्वालमालिनि तत्परम्,
दीप्यन्ते सर्वभूतान्ते संहारान्ते तु कारिके।
जातवेदसिवर्णान्ते ज्वलन्ति प्रज्ज्वलन्ति च,
ज्वलद्वयं प्रज्ज्वलान्ते कवचं पावकद्वयम्॥

इसके बाद नारियल और यंत्र दोनों पर कुंकुम व अक्षत अर्पित करते हुए निम्न मंत्र बोलें –

ॐ सर्वसंक्षोभिणी नमः। ॐ सर्वविद्राविणी नमः। ॐ सर्वाकर्षिणी नमः। ॐ सर्वाह्लादकरी नमः। ॐ सर्वसम्मोहिनी नमः। ॐ सर्वस्तम्भनकारिणी नमः। ॐ सर्वजृम्भणिका नमः। ॐ सर्ववशंकरी नमः। ॐ सर्वरञ्जिका नमः। ॐ सर्वोनमादिनिका नमः। ॐ सवार्थसाधिनी नमः। ॐ सर्वसंपत्पूरिणी नमः। ॐ सर्वमंत्रमयी नमः। ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी नमः।

यंत्र पर रखा नारियल भूत-प्रेत या तंत्र बाधा का प्रतीक है। नारियल को क्रोध दृष्टि से देखते हुए वीरासन में बैठकर **'काली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 7 माला जप करें –

ज्वालामालिनी मंत्र

॥ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्॥

तीसरी रात्रि को मंत्र जप के बाद काले तिल और घी द्वारा उपरोक्त मंत्र (अंत में स्वाहा लगाकर) से 108 आहुतियां दें। इसके बाद उपरोक्त मंत्र से ही तांत्रोक्त नारियल को भी अग्नि में भेंट कर दें, जिससे सभी बाधाएं भस्मीभूत हो जाएं।

साधना सामग्री - 450/-

धूमावती मंत्रः धूं धूं धूमावती ठः ठः

तंत्रोक्त षट्कर्म

मोहन वशीकरण उच्चाटन विद्वेषण स्तम्भन मारण

वर्तमान जीवन में आवश्यक हैं

शत्रु स्तम्भन

जिससे शत्रु की बुद्धि भ्रमित हो जाए और वह आपके विरुद्ध किसी प्रकार का कुचक्र षड्यंत्र नहीं रच सके। शत्रु को पराजय ही मिले, ऐसी तीव्र साधना जिसे इतिहास पुरुष 'चाणक्य' ने सम्पन्न किया।

चाणक्य एक विद्वान व्यक्ति था, जिसने भली-भांति इन प्रयोगों को सम्पन्न किया, मात्र अपने सुख हेतु नहीं, वरन् जनकल्याण की भावना से प्रेरित हो कर। चाणक्य द्वारा प्रयुक्त किये गये प्रयोगों में से यह 'स्तम्भन प्रयोग' पाठकों के लिए प्रस्तुत है -

अध्ययनशील प्रकृति रही है मेरी प्रारम्भ से ही। आध्यात्मिक व तांत्रिक प्रकृति के कारण मेरा रुझान ऐसे साहित्य में प्रमुख है, जिनमें तंत्र और अध्यात्म का समन्वय होता है। अत्यधिक चिंतनशील प्रकृति का होने के कारण मेरा मस्तिष्क शोधशाला बन गया था।

अपनी इसी प्रकृति के कारण मैं अनेक लाइब्रेरियों में जाता रहता हूं और इसी तरह मैं एक दिन ऐसे ग्रन्थागार में पहुंचा, जहां बहुत सी प्राचीन पुस्तकें और हस्तलिखित पाण्डुलिपियां रखी थीं। मैं अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण वहां उन पुस्तकों के मध्य बैठ उनको पढ़ने लगा। वहां मेरे हाथ में अत्यन्त जर्जर अवस्था में एक किताब आई, जो चाणक्य के विषय में थी, उसमें चाणक्य के आध्यात्मिक जीवन का विवरण था। चूंकि चाणक्य एक ऐसा पात्र है, जिसने आध्यात्मिक जीवन जीते हुए राजनीति और अर्थशास्त्र पर ग्रंथ लिखा; आज भी उसका लिखा ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ है, अतः मुझमें इस किताब को पढ़ने की उत्सुकता बढ़ गई।

मैं पन्ने पलटता रहा, तो ऐसा अनुभव किया, कि वर्तमान राजनीतिक दशा और चाणक्य के काल की राजनीतिक दशा में काफी हद तक समानता है; बस फर्क है, तो सिर्फ शताब्दियों का। तब भी राजनीतिक उतार-चढ़ाव आते रहते थे और आज भी राजनीति उसी प्रकार की है। ऐसा प्रतीत हुआ, कि राजनीति तो प्रारम्भ से ही एक समान ही चलती आई है, बस समानुसार पात्र बदलते रहते हैं।

चाणक्य अपने राजनीतिक जीवन में एक सफल व्यक्तित्व था, इसके पीछे उसकी तपस्या, उसका आध्यात्मिक जीवन ही था, परन्तु इसके साथ वह एक सफल तथा श्रेष्ठ तांत्रिक भी था, जिसका वर्णन अत्यल्प मिलता है; ऐसा मैं इसलिए कहा रहा हूं, क्योंकि उस पुस्तक में जो वर्णित था, उसके अनुसार चाणक्य ने अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कुछ तांत्रिक व मांत्रिक साधनाएं भी सम्पन्न की थीं।

इससे पता चलता है, कि चाणक्य ने अपने राजनीतिक जीवन

राहु सात्विक मंत्रः *ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः*

को सफल बनाने के लिए साधनाओं का सहारा लिया और उसने निश्चय ही अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कुछ प्रयोगों को सम्पन्न किया था और प्रत्यक्ष तो नहीं, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उसने ही पूरा राजकार्य चलाया, चन्द्रगुप्त तो मात्र उसका शिष्य था।

मुझे ऐसा लगा, कि इस पाण्डुलिपि में कुछ विशेष क्रियाओं का वर्णन है, किन्तु पाण्डुलिपि स्पष्टतः नहीं समझ पाने के कारण मैं कुछ श्लोकों को उतार कर घर ले आया और एक श्रेष्ठ विद्वान से उनका सरलीकरण करवाया, तो पता चला कि यह एक तांत्रिक प्रयोग है, जिससे गति-मति का स्तम्भन हो सकता है। इस स्तम्भन प्रयोग को करने से शत्रु की गति-मति बंध जाती है तथा वह पूर्णतः प्रयोगकर्ता के अनुकूल बन कार्य करने लगता है।

यह देखकर मैं चाणक्य के चरित्र पर अपनी आदतानुसार शोधरत हो गया, फिर मेरी समझ-रहस्य की परत-दर-परत खुलती चली गई और मैं अचम्भित हो चाणक्य के व्यक्तित्व को गहनता के साथ पढ़ने लगा और उसके प्रयोगों को पढ़ने पर एहसास किया कि वास्तव में उसकी सफलताओं के पीछे उसकी बौद्धिकता के साथ-साथ तंत्र भी समन्वित था।

उसने अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कई प्रयोगों का सहारा लिया और वास्तव में इतिहास साक्षी है कि उसने अपने संकल्प को पूर्ण कर दिखाया, उसने अपने शत्रुओं की यह स्थिति बना दी कि शत्रु उसके समक्ष कुछ सोचने-समझने की शक्ति से च्युत हो जाते थे और वह निरन्तर सफलता की ओर ही अग्रसर रहा।

आज भी, चाहे वह राजनीतिक जीवन हो या सामाजिक जीवन, प्रतिस्पर्धा तो बढ़ ही रही है। प्रत्येक व्यक्ति सफलता प्राप्त करने को लालायित है। इसके लिए यदि उन्हें गैरकानूनी तत्त्वों का भी सहारा लेना पड़ता है, तो वे हिचकते नहीं, वरन् ऐसे तत्त्वों का उपयोग कर सफलता को हर सम्भव प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, और इस बेताबी में लोग अच्छे-बुरे का भी ज्ञान भूल जाते हैं।

...परन्तु चाणक्य ने इन प्रयोगों का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं किया था, वरन् जब देश की दशा अत्यधिक गंभीर हो गई और राज्य परिवार के सदस्य आपस में सत्ता के लिए युद्ध कर रहे थे, बाह्य देश भी इस स्थिति से लाभ उठाने की नीयत से आक्रमण करने के लिए तैयार हो गये थे, ऐसी विषम परिस्थितियों में चाणक्य ने साधनाओं का सहारा लिया और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

यह प्रयोग अत्यधिक तीक्ष्ण है, अतः इसे कभी हास्य के रूप में अथवा आजमाने के रूप में नहीं करें, वरन् अत्यन्त विषम परिस्थितियों में इस प्रयोग को सम्पन्न करें। यह प्रयोग सम्पन्न कर अपने शत्रु की गति-मति को बांधकर अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। इसके बाद जब भी शत्रु आपके सामने आयेगा, उसमें कुछ सोचने-समझने की क्षमता नहीं रहेगी और आप अपना मनोवांछित कार्य उससे सिद्ध करवा सकते हैं।

साधना विधान

☆ इस प्रयोग में साधक को '**नीली हकीक माला**' तथा '**शत्रु स्तम्भन यंत्र**' का प्रयोग करना है।

☆ यह प्रयोग **शनिवार या किसी भी अमावस्या** को सम्पन्न करें। यह रात्रिकालीन प्रयोग है।

☆ साधक शुद्ध स्वच्छ पीले वस्त्र पहन कर आसन पर बैठें। गुरु पीताम्बर अवश्य ओढ़ें।

☆ लकड़ी के बाजोट पर सफेद रंग का वस्त्र बिछावें, उस पर हल्दी और रक्त चंदन के घोल से अष्टदल कमल बनायें तथा प्रत्येक आठ दलों में निम्न आठ अक्षरों को लिखें ***ॐ, ॐ, ग्लौं, ग्लौं, चं, टं, चं, टं।***

☆ अष्टदल के मध्य शत्रु का नाम लिखकर उस पर यंत्र को स्थापित करें।

☆ यंत्र का पूजन करें, पुष्प, चंदन, कुंकुम, अक्षत चढ़ावें।

☆ यंत्र के सामने तेल का दीप लगायें और सात लोहे की कीलें भी रख दें।

☆ पश्चिमाभिमुख होकर '**नीली हकीक माला**' से निम्न मंत्र की 51 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं कामाक्षि! मायारूपिणि सर्वमनोहारिणि स्तम्भय स्तम्भय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लां क्लीं क्लूं कामाक्षि! कान्हेश्वरि! हुं हुं हुं।

☆ प्रयोग समाप्त होने पर पीले धागे से सभी लोहे की कीलों को बांधकर यंत्र तथा माला भी बाजोट पर बिछे कपड़े में रखकर बांध लें और किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मजाक के लिए या मन में दुर्भावना रखकर इस मंत्र की साधना नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति आपकी प्रगति में बाधक बन रहा है और आपको दूसरा सुगम मार्ग नहीं मिल रहा है, तो ही उसे रोकने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें।

साधना सामग्री - 375/-

केतु सात्विक मंत्रः *ॐ के केतवे नमः*

श्मशानलयवासिनी

अष्ट महाकाली

जिसके चारों ओर भैरव-भैरवियां नृत्य करते हैं
भूत-प्रेत-पिशाच अनहत नाद करते हैं
अनोखी तांत्रिक-अघोरी दुनिया है श्मसाना

काली की कई साधनाएं प्रचलित हैं, सभी की सभी तीक्ष्ण...क्योंकि काल स्वरूपा काली को अपने सामने प्रकट करना साक्षात् मृत्यु से पंजा लड़ाना है; काली को उसकी इच्छा के विपरीत जाग्रत करना मानो भूखे सिंह के मुख में गर्दन डालना है, पर फिर भी कोई न कोई पौरुषवान साधक ऐसा करने में सफल हो ही जाता है...

तांत्रिक संसार की अनूठी घटना -

श्मशान उद्दाम यौवन की तरह अंगड़ाई लेता हुआ जाग्रत हो गया था। अमावस्या की भयावह रात, चतुर्दिक तिमिर फैला हुआ, मानो सभी को लीलने की चेष्टा कर रहा था। यह था बाणगंगा का बहुचर्चित महाश्मशान, जो अघोरियों एवं कापालिकों की प्रिय क्रीड़ास्थली है। यही वह मोहक उपवन है, जहां पर दसों महाविद्याएं रात्रि को मदमस्त हो विचरती रहती हैं। तारा यहीं पर मुण्डमालाएं धारण करती हैं, षोडशी यहीं अपनी बाल क्रीड़ाओं में निमग्न रहती हैं, जगज्जनी भुवनेश्वरी का यही सिद्ध पीठ है, छिन्नमस्ता मस्त होकर यहीं अपना नृत्य प्रस्तुत करती हैं; धूमावती, बगला एवं मातंगी का यही विहार-स्थल है एवं परम सिद्धा महाकाली यहीं पर ही अपने पूर्ण स्वरूप के साथ महाकाल का सायुज्य किये हुए अनुभव होती है।

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीम्।
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूव।।
अनादिं सुरादिं मखदिं भवादिं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

वास्तव में श्मशान की माया भी विचित्र है, जब समस्त संसार जागता है, तो यह सुप्त सा पड़ा रहता है, परन्तु रात्रि होते ही, जब सारा संसार मीठी नींद में निमग्न हो जाता है, तो यह जीवित हो उठता है... ऐसा लगता है, मानो अभी बोल उठेगा... और श्मशान के साथ एक व्यक्ति और जागता है... अघोरी, तांत्रिक।

कहीं दूर...., हवा के शीतल झोकों के साथ एक ध्वनि तैरती हुई, सारे वातावरण को चैतन्य करती हुई प्रतीत हो रही थी...

जगन्मोहिनींय तु वाग्वादिनीयम्।
सुहृद्पोषिणीं शत्रुसंहारणीयम्।।
वचस्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयम्।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

यह ध्वनि, यह आवाज कहीं श्मशान के मध्य से उठ रही है। एक तांत्रिक श्मशान के बीचों-बीच वाली चिता के आगे पद्मासन में बैठा काली की स्तुति कर रहा है... देखने में अघोरी मालूम होता है,... पर उसके व्यक्तित्व में एक स्पष्ट कठोरता एवं दृढ़ता

के साथ-साथ एक अनिवर्चनीय कोमलता भी दृष्टिगोचर हो रही है... यह कैसा अघोरी है... कैसा तांत्रिक है...?

थोड़ा और पास जाने पर स्पष्ट होता है - अरे! यह तो विख्यात **'कपाल शंकर'** है, अघोरियों में सर्वश्रेष्ठ, कापालिकों का पूजनीय, महान कपाल शंकर..., तो वह यहां किसी महान् साधना हेतु ही आया होगा, इसमें संशय नहीं। निश्चय ही वह यहां **'अष्ट काली'** की सिद्धि हेतु आया है। काली की कई साधनाएं प्रचलित हैं, सभी की सभी तीक्ष्ण...क्योंकि काल स्वरूपा काली को अपने सामने प्रकट करना साक्षात् मृत्यु से पंजा लड़ाना है; काली को उसकी इच्छा के विपरीत जाग्रत करना मानो भूखे सिंह के मुख में गर्दन डालना है, पर फिर भी कोई न कोई पौरुषवान साधक ऐसा करने में सफल हो ही जाता है... **परन्तु यह कपाल शंकर...** यह तो अष्ट काली, अर्थात् काली के आठों स्वरूपों को एक साथ सिद्ध करने को संकल्पबद्ध हो उठा है... कहीं इसकी मति तो नहीं मारी गई? यह अपने होश में है भी? क्या यह इस बात से अनभिज्ञ है, कि अष्ट काली को एक साथ अपने समक्ष बुलाना मृत्यु को न्यौता देना है? क्या उसे अपने चारों तरफ यम-पाश दिखाई नहीं दे रहा?

निश्चय ही बड़ा जीवटवान एवं दृढ़ संकल्पी है यह अघोरी... पर इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं, कि आग से खेला जाये... अभी कुछ ही दिन पहले तो इसी साधना के दौरान कापालिक ब्रजेश्वर ने अपने प्राण गंवाए थे... वह हठ पूर्वक काली को अपने समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था...

'तू क्या तेरा बाप भी आयेगा, बहुत घूम ली तू इधर-उधर, अब आ! महाकाल तुझे बुला रहा है'... क्यों था तू इतना अहंकारी रे ब्रजेश्वर, जो तुझे इतनी कम उम्र में ही अपनी जान से हाथ धोना पड़ा! क्षण भर में उस कापालिक के हजारों-हजारों टुकड़े होकर चिता के चारों ओर बिखर गए थे और उसका शव स्वतः ही कटे पेड़ की तरह चिता पर धम्म से गिर पड़ा था... उसके मुण्ड को काली ने अपनी माला में जोड़ लिया था और वह मदमस्त हो, ठहाका मारकर हंस पड़ी थी... ह ह ह ह ह ह

'इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली।
मनोजास्तु कामान्यथार्थं प्रकुर्यात्।।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

कपाल शंकर तन्मयता के साथ **'कालिकाष्टक'** गा रहा है। आज साधना का अन्तिम दिवस है, क्योंकि अमावस्या से आरम्भ होकर यह साधना अमावस्या को ही खत्म होती है... पूरे एक मास की कठोर साधना..., और क्या-क्या बाधाएं और परीक्षाएं नहीं आई थीं उसकी राह पर... पर कपाल शंकर तो कपाल शंकर ही ठहरा... जैसा नाम, वैसे ही उज्जवल कर्म, वह तो जैसे समस्त अघोरियों का शिरोमणि है...

'हुं' कापालिक ब्रज का तीसरा, हृदय को भेदने वाला व्यंग्य स्मरण कर कपाल शंकर श्मशान में चिता के समक्ष बैठा-बैठा तिलमिला उठा और उसके मुख से दसों दिशाओं को गुञ्जाने वाली हुंकार प्रस्फुटित हो गई परन्तु अब वह संयत है और पुनः साधना में लीन दिखाई पड़ रहा है...

साधना के पंद्रहवें दिन भूत, पिशाच, राक्षसों ने उसकी साधना में विघ्न डालने का भरसक प्रयत्न किया था... पर उस अवधूत को भूत, प्रेतों एवं ब्रह्म राक्षसों से क्या भय... उन्होंने नाना प्रकार से उसको भयभीत करने की चेष्टा की थी, उसे डराने की कोशिश की थी... परन्तु कपाल शंकर तो बड़ी ही मुश्किल से अपनी हंसी दबाए बैठा था... यदि अपनी ही धुन में मस्त गजराज को कुत्तों का समूह भयभीत करने की चेष्टा करे, तो यह बात हास्यास्पद ही है... इसमें दो राय नहीं... कुछ क्षण तो मग्न हो इन इतर योनियों की वीभत्स क्रीड़ा देखता रहा... पर फिर कुछ जल हाथ में लिया और ***'ॐ अंजनी समुदाय प्रकट विक्रम वीर...'*** कहते-कहते उसने वह जल चारों ओर छिड़क दिया... भय की चीखों के साथ कुछ ही क्षण में सारा त्रिवर्गात्मक समूह कहीं विलुप्त हो गया था...

चिदानन्द कन्दं हसन्मन्द मन्दं।
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

एक अद्वितीय लय के साथ कपाल शंकर के मुख से निकल रहे हैं और वह भी पूर्ण रूप से इसमें डूबा हुआ है... फिर तो हर दिन साधना के दौरान कोई न कोई बाधा अथवा कठिनाई प्रस्तुत होती... कपाल शंकर भी एक पहुंचे हुए सिद्ध की भांति इन सब परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता गया और समस्त बाधाओं को सरलता से लांघता गया... पर जो अभी पिछली रात थी, वह तो अति विचित्र थी, उससे निकल पाना तो नंगी तलवार पर चलने से भी अधिक कठिन था... पर चूंकि आज तीसवां दिन है और कपाल शंकर हमारे समक्ष है, इसका अर्थ तो यही निकलता है, कि उसने सफलता पूर्वक उस मुख्य बाधा को भी पार कर लिया है।

वह बाधा थी चौसठ योगिनियों के रूप में, जो कि जगज्जनी महाकाली की दासियां हैं... रात के समय अचानक ही वे अति मनोहर, कामोत्तेजक रूप में कपाल शंकर के समक्ष प्रस्तुत हुई थीं और नाना प्रकार की नृत्य मुद्राओं से उसे उत्तेजित करने का

प्रयत्न कर रही थीं...

'शंकर! क्यों अपने यौवन को इस तपती भट्ठी में जला रहा है? छोड़ दे यह सब कुछ और आ कर देह का सुख भोग...' - एक ने कहा।

'कपाल! तू कहे, तो तुझे अद्वितीय सुन्दर बना दूं, अजर-अमर कर दूं, फिर हम हमेशा के लिए प्रेम के अमृत का पान कर सकेंगे' - दूसरी बोली।

तीसरी ने कहा - 'तू अटूट सम्पत्ति मांग ले, यश, वैभव, सब कुछ... हमको अंगीकार कर और निश्चिन्तता के साथ जीवन व्यतीत कर। क्यों अकारण मृत्यु को निमन्त्रण दे रहा है? जो कुछ भी तुझे चाहिए, हमें कहो, हम भी तुझे वह सब प्रदान करने में समर्थ हैं।'

परन्तु यह कपाल शंकर की ही तेजस्विता थी, कि वह इतने प्रलोभनों एवं मोहक निमंत्रणों के बीच भी संयत रह सका। काम तो देवताओं को भी डिगा देता है, पर यह साधक तो अद्भुत है, इसमें कोई और ही बात है... यह एक चिंगारी लिये हुए है। इसके बाद योगिनियों ने विभिन्न प्रकार से माया रची और कपाल शंकर को डिगाने के लिए 'साम, दाम, दण्ड, भेद' का उपयोग किया। अंततः अब उन्हें इस बात का एहसास हो गया, कि उसको विचलित करना संभव नहीं, तो वे **'साधु कपाल शंकर, साधु!'** कहती हुई शून्य में विलीन हो गई...



महामेघ काली सुरक्तापि शुभ्रा।
कदाचिद्विचित्रा कृतिर्योगमाया।।
न बाला न वृद्धा न कामातुरापि।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

यह आखिरी दिवस है और वह सुदृढ़ तीव्र गति के साथ सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है - तभी एक तीव्र विस्फोट हुआ और चतुर्दिक धुंआ ही धुंआ फैल गया... हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा... गंध भी बड़ी विचित्र सी उठ रही है...

'मूढ़मते!' - तभी एक स्त्री का स्वर गूंजा - तू क्या हठ कर रहा है? क्या तुझे अपनी जान की जरा भी परवाह नहीं...? हठ छोड़ और भाग जा, मुझे क्रोध मत दिला...।

कपाल शंकर तुरन्त समझ गया, कि न तो यह किसी योगिनी की आवाज है, न भैरवी की, यह तो कुछ और ही है, यह तो मात्र उसी की मधुर आवाज हो सकती है... उसने तुरन्त हाथ जोड़ लिए और बोला -

'मां! हठ तो शिशु का मूल धर्म होता है। वह हठ छोड़ दे, तो मां उसकी ओर ध्यान ही न दे... मेरे हठ से आपको क्रोध आ रहा है, इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं... पर अब और नहीं रहा जाता... हे मां! हे जगज्जनी अपने सुन्दर अष्ट स्वरूप को मुझे दिखलाइए...'

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं।
त्रयलोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।

उसकी आंखों से प्रेम की अश्रुधार बहती हुई आसपास की जमीन सिक्त कर रही है...

'इसी क्षण, 'रुक जा दुष्ट, नहीं तो मैं तेरी भी बलि ले लूंगी और तेरे मुण्ड को अपनी माला में पिरो लूंगी... एक मौका और देती हूं, भाग जा, नहीं तो मैं तुझे भी भक्ष्य लूंगी... ह... ह.. ह... ह... ह...' आवाज सुनाई दी।

कपाल शंकर बालक की तरह रुदन कर रहा है, उसकी हिचकियां बंधी हुई हैं - 'यदि आप मुझे भक्ष्य ही लें, तो इससे बड़े सौभाग्य की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है? पर मां

आप क्यों कष्ट करती हैं? मैं स्वयं ही अपने हाथों से अपना मस्तक काट कर चरणों में समर्पित कर देता हूं...।'

'तो बोल क्या रहा है, काटता क्यों नहीं...' - उस स्त्री ने कहा और तभी अचानक एक प्रचण्ड खड्ग कपाल शंकर के सम्मुख पृथ्वी पर आ गिरा...

कपाल शंकर ने खड्ग की तरफ हाथ बढ़ा दिया, उसे उठा लिया... उफ्। सही कहते थे सभी अघोरी और कापालिक बज्र, कि अब उसे फिर उसे देख सकने की आशा नहीं है... अलविदा कपाल शंकर! निश्चय ही तू अद्वितीय है... महान है... पर क्या घोर आश्चर्य! इससे पहले कि खड्ग गर्दन को छुए, एक विकराल, श्याम वर्ण की स्त्री ने प्रकट हो उसका हाथ झटक दिया... और खड्ग छिटक कर दूर गिरा... उस स्त्री के स्वरूप से आठ स्वरूप प्रकट हुए - दक्षिण काली, स्पर्शमणि काली, संतप्रिदा काली, सिद्धि काली, चिन्तामणि काली, कामकला काली, हंस काली, गुह्य काली... और पुनः उसमें विलीन हो गए। जो देवी अब कपाल शंकर के समक्ष हैं, वही हैं श्मशान की अधिष्ठात्री देवी महाकाली।

कपाल शंकर इस दिव्य छटा को देखकर आत्मविभोर हो गया और 'मां! मां! पुकारता हुआ उसके चरणों में गिर गया, काली का ममतामय हाथ उसके केशों में घूम रहा है... 'आह!... कितनी सुन्दर है मेरी मां! मेरी काली मां... कितनी ममतामयी, कितनी कोमल...'

'अरे पगले! जिस दिन मां अपने पुत्र की बलि ले लेगी, उस दिन तो समस्त ब्रह्माण्ड प्रलय से नष्ट हो जायेगा... ब्रजेश्वर तो खुद अपने निन्दित कर्मों द्वारा मारा गया, उसके संकल्प तुच्छ थे... खैर वह भी अगले जन्म में मुझे प्राप्त कर पाएगा...'

'कपाल शंकर! पुत्र! मैं तुझसे अति प्रसन्न हूं, तूने तो मुझे विवश कर दिया... मां को पुत्र की तरह ही जीता जा सकता है... और कोई तरीका नहीं। मैं हमेशा तेरे पास रहूंगी, जब भी तू पुकारेगा, मैं चली आऊंगी... निश्चय ही तू धन्य है कपाल शंकर!... और यह तेरे गुरु का ही प्रताप है कि तुझे कि मेरे वह दर्शन प्राप्त हुए, जो कि अति दुर्लभ एवं गोपनीय है।'

'जा, अब तू जा रे और निर्भय हो विचरण कर... और जाते-जाते भी महादेवी का हास्य सुनाई पड़ रहा है...'

'ह... ह... ह... ह... ह... ह..'

कपाल शंकर ने हाथ जोड़ लिए हैं, वह अपने आप में खोया हुआ कुछ बुदबुदा रहा है...

यदि ध्यान युक्तं पठेद् यो मनुष्यः।
तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च॥
गृहे चाष्ट सिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥

अगर समस्त ब्रह्माण्ड को मुट्ठी में बांधना है और शत्रुओं पर इन्द्र वज्र की तरह गिर कर उन्हें नेस्तानाबूत करना है... तो इस साधना को तो कर ही डालिये

साधना विधान

अघोरी कपाल शंकर ने जिस विधि से महाकाली के अष्ट स्वरूप को सिद्ध किया था, उसने उसकी एक तीव्र तथा लघु विधि को मेरे समक्ष रख कर मुझे सिद्ध कराया। महाकाली साधना सम्पन्न करने के पश्चात साधक की समस्त भौतिक और आध्यात्मिक इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं, जिनकी उसे इच्छा होती है। वह अपने जीवन में अपूर्ण नहीं रह जाता। उसकी सभी प्रकार की कामनाएं पूर्ण होती हैं। महाकाली की यह साधना **अमावस्या अथवा किसी भी शनिवार** से आरम्भ करें। यह साधना रात्रि में ही सम्पन्न करें।

- साधक रात्रि में स्नान कर काले रंग के वस्त्र धारण करें। जिस स्थान पर साधना करें उस स्थान पर अन्य किसी की उपस्थिति वर्जित है।
- साधक अपने सामने बाजोट पर काले रंग का वस्त्र बिछाएं, उस पर **'अष्टकाली यंत्र'** को स्थापित कर **'महाकाली साधना'** पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार महाकाली का पूजन करें।
- पुस्तक के अनुसार पवित्रीकरण, आचमन, दिग् बन्धन, गणपति स्मरण, गुरु पूजन, ध्यान, कुंकुम, सिन्दूर, अक्षत, पुष्पमाला, धूप, दीप फल तथा नैवेद्य अर्पित करें।
- इसके पश्चात् **'काली हकीक माला'** से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ क्रीं क्रीं महा कालिके क्रीं क्रीं फट्॥

- मंत्र जप के पश्चात् उपरोक्त का 11 बार उच्चारण करते हुए यंत्र पर काली मिर्च के दाने चढ़ाएं। इससे आपके जीवन में आने वाली बाधाएं, चाहे वे शत्रु रूप में हों या तनाव या मानसिक क्लेश के रूप में हों, समाप्त होंगी और निर्भयता की प्राप्ति होगी।
- इसके पश्चात् आप समस्त सामग्री को एकत्र कर नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 260/-

राम ने तो विजयादशमी को एक रावण मारा

क्या आपको ध्यान है

आपके जीवन में कितने रावण है?

दुःख, बीमारी, मुकदमा, शत्रुता, हानि, निर्धनता ये सब आपके जीवन के रावण रूपी राक्षस ही है इन्हें आपको ही परास्त करना है

सम्पन्न कीजीए

विजयादशमी के तांत्रोक्त पर्व पर

विजय सिद्धि

विजय प्रदाता भैरव साधना

शत्रु बाधा निवारण उच्छिष्ट चाण्डालिनी साधना

विजयादशमी एक ऐसा मुहूर्त सिद्ध पर्व है, जो आपके प्राणों में ऐसी शक्ति भर सकता है, कि आप स्वयं पूर्ण चैतन्यमय होकर क्रियाशील हो सकते हैं। विजयादशमी विजय का आह्वान करने का दिवस है, जिससे आपको अपने प्रत्येक कार्य में विजय ही प्राप्त हो, शत्रुओं पर आपका ऐसा तेजस्वी प्रभाव पड़े, कि वे आपके सामने झुके ही रहें, पूरे वर्ष में स्तम्भन, शत्रु बाधा निवारण, तांत्रिक दोष निवारण हेतु इस दिवस को की गई साधना अत्यंत शीघ्र फलदायक रहती है।

पराजय का तात्पर्य है, पीड़ा, हानि, नुकसान, बाधा, विरोध, कार्य में अपूर्णता, अपमान इत्यादि। यदि कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है तो वह आपकी पराजय है, और बार-बार पराजय मिलती है तो उत्साह भी समाप्त हो जाता है। पराजित होना अथवा न होना आप पर ही निर्भर करता है क्योंकि आपमें स्वयं में ही कोई कमी रहती है, अथवा दोष होता है, चाहे वह दोष किसी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग से हो, अथवा ग्रहदोष, पराजित होने का तात्पर्य है, आप पर कोई हावी हो रहा है, आप दब कर जी रहे हैं और ऐसा जीवन में होता है। अपराजेय होने का तात्पर्य है कि आपके दोष दूर हो जायें, आप स्वयं पहचान सकें, अपने संकल्प के अनुसार कार्य कर सकें, दूसरे यदि आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करें, तो आपको हानि न पहुंचे, जो भी शत्रु आप पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग करे वह उलट पड़ जाय, आपको प्रभावित करने की बजाय उलटा उसे ही हानि दे दे, तभी तो विशेषता है, जीवन का आनन्द है।

मनुष्य को यह जीवन इसलिए प्राप्त हुआ है, कि वह इस जीवन में पूर्णता प्राप्त करे, अपने जीवन में इन्द्रधनुष के समान सभी रंगों को देखे, उन्हें अनुभव करे, और इन अनुभवों को ग्रहण करने के पश्चात जीवन में प्रगति के उस स्तर पर पहुंच जाये, कि उसे पूर्ण संतुष्टि प्राप्त हो सके। जीवन इसलिए नहीं मिला है, कि आप एक लीक पर चलते जाएं, अपितु कुछ ऐसा करते रहें जिससे कि आगे बढ़ने का मार्ग निरंतर खुलता रहे। इस सफल मार्ग को, जो केवल उन्नति की ओर ले जाता है, उसका आधार निश्चय ही कुछ सहयोगी, कुछ प्रेरणा प्रभूत व्यक्तित्व अवश्य होते हैं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति यह पहचान नहीं पाता है, कि कौन उसके लिए कितना सहयोगी है, कौन उसका

भला कर सकता है, उसे किसको कितना सहयोग देना है, किसके प्रति पूर्ण आस्था से कार्य करना है। साधारण व्यक्ति तो कोल्हू के बैल की तरह एक ही लीक पर चक्कर लगाता रहता है और उसका जीवन पूरा हो जाता हैं, तब बुढ़ापे में वह सोचना है, चिन्ता करता है कि अरे, यह जीवन तो पूरा होने आ गया, कुछ कर ही नहीं पाया, मेरे साथ के लोग कितना बढ़ गये!

यह सब क्या है? यह कोई बुद्धि का चमत्कार नहीं है, यह तो केवल एक साधारण समझ है, जिसको समय पर उचित प्रयोग में लानें से व्यक्ति उन्नति की एक-एक सीढ़ी निरन्तर चढ़ता रहता है। जीवन भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही स्थितियों का संगम है, दोनों क्षेत्र पूर्णतः अलग-अलग नहीं हैं, कहीं न कहीं एक दूसरे से अवश्य ही मिलते हैं, आवश्यकता केवल इस बात की है कि दोनों ही स्थितियों में सामंजस्य रखा जाये। वे व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें अच्छे मित्र मिलते हैं, अच्छे सहयोगी मिलते हैं, और सबसे बड़ी बात; उन्हें पूर्ण योग्य गुरु प्राप्त होते हैं, जिनके एक आशीर्वाद से ही, जिनकी कृपा से ही उनके हृदय में हर समय उत्साह बना रहता है।

नवरात्रि के नौ दिवस शक्ति के वे नौ दिवस हैं, जो आपके भीतर पूर्ण आत्मविश्वास भरने में सहायक हैं, आपके एक-एक अणु को क्रियाशील करने में समर्थ हैं, और इस शक्ति का सही उपयोग आपको पूर्ण क्रियाशील बना कर उन्नति के विशेष मार्ग की ओर ले जाता है, लेकिन ऐसा क्यों होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को सफलता नहीं मिल पाती, वह प्रतिदिन जी तोड़ परिश्रम करता है, नौकरी करता है, व्यापार करता है, लेकिन पूर्ण परिश्रम करने के बाद भी व्यापार में सफलता नहीं मिलती। जिस हिसाब से प्रति वर्ष उन्नति होनी चाहिए, नहीं हो पाती है, केवल व्यापार प्रारंभ कर देने से ही भौतिक सम्पन्नता सम्भव नहीं है।

उन्नति में बाधाएं

जब आप अपने जीवन में कुछ करने की सोच लेते हैं, तो उस हेतु आपको कार्य करना पड़ेगा, केवल स्वप्न देखने से कार्य नहीं होता, लेकिन यह भी आवश्यक है, कि आप जितना परिश्रम करें, उस परिश्रम का उतना फल अवश्य प्राप्त हो। कार्य के मार्ग में निरन्तर बाधाएं क्यों आती हैं? इस सम्बन्ध में विवेचन अत्यन्त आवश्यक है। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने के उपरांत भी आर्थिक दृष्टि से लाभ नहीं हो पाता है, लाभ होता है, तो पैसा रुक जाता है, दूसरे आप से उधार लेते हैं तो वापस धन समय पर नहीं आ पाता है, अथवा आप अपने कार्य के लिए अथवा व्यापार के लिए किसी से आर्थिक सहयोग अथवा उधार लेने जाते हैं, तो आपको धन नहीं मिल पाता है, जबकि आप में बुद्धि, चातुर्य, कार्य क्षमता पूर्ण रूप से है, इन सब के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य रहता है।

आप में कुछ महानुभाव अपनी बाधाओं को अपने भाग्य का दोष मान कर शांत हो कर बैठ जाते हैं, कुछ लोग ग्रहों का दोष ग्रह चक्र, दशा मान कर शांत हो जाते हैं और धीरे-धीरे अवनति की भावना भरती जाती है, जबकि ऐसा बिल्कुल ही नहीं होना चाहिए, क्या भाग्य बदला नहीं जा सकता, क्या ग्रह दोषों को मिटाया नहीं जा सकता है, क्या आपके विरुद्ध किये गये तांत्रिक प्रयोगों को समाप्त नहीं किया जा सकता है? ये सब संभव हैं, इसके लिए चाहे जिस कार्य को अपनाना पड़े, चाहे जितनी साधना करनी पड़े, अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

तंत्र साधना - सिद्धि साधना

तंत्र और मंत्र का संसार अत्यंत विशाल है, और हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने इन सभी स्थितियों को देखकर, भोग कर अपने अनुभव के आधार पर, जो ज्ञान ग्रंथों में दिया है, वह अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक एंव सिद्ध है। उन साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए हृदय में पूर्ण आस्था आवश्यक है, वहीं गुरु का पूर्ण आशीर्वाद एवं निर्देश भी। यदि आपको साधना का तत्व प्राप्त है और आप अपने कर्म पथ पर अग्रसर हैं, तो उन्नति अवश्य प्राप्त होगी। आपका जीवन साधारण जीवन से अलग होगा, इस हेतु यह आवश्यक है कि आपके जीवन में बाधाएं नहीं रहें, आप जो भी कार्य करना चाहें वह आपके एक ही बार के प्रयास से पूर्ण हो जाय ताकि जीवन में विजय श्री प्राप्त हो।

प्रत्येक साधना का विशेष समय अवश्य होता है, और उस समय साधना सम्पन्न करने से सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है, क्योंकि उस समय ग्रहों की गति, वायुमण्डल में चेतना उसी प्रकार की होती है जो कि आपके मंत्रों के जाप के माध्यम से, आपकी साधना के माध्यम से होती है, और आपका कार्य सफल होता है।

विजय सिद्धि

जीवन में अपराजित अर्थात् विजयी रहने का तात्पर्य है, प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना, अपनी क्षमता तथा सामर्थ्य के अनुसार जो काम हाथ में लें, उसमें लक्ष्य सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाय। शास्त्रों के अनुसार अपराजिता के छः अर्थ हैं -

1. किसी भी प्रकार के शत्रु को परास्त करना, और शत्रुओं पर हावी रहना।
2. जीवन में किसी भी प्रकार का भय, बाधा, रोग, कष्ट या परेशानी न होना, सर्वथा रोग मुक्त होकर जीवन व्यतीत

करना।

3. वाद-विवाद तथा मुकदमे इत्यादि में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करना।
4. जीवन में अपनी आजीविका के सम्बन्ध में आने वाली बाधाओं की शांति और कार्य सिद्धि।
5. किसी भी प्रकार की राज्य बाधा से पूर्णतः बचाव और कोई विपत्ति आये तो उसकी निवृत्ति।
6. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपराजित रहते हुए पूर्ण आनन्द के साथ जीवन की यात्रा।

विजयादशमी एक ऐसा मुहूर्त सिद्ध पर्व है, जो आपके प्राणों में ऐसी शक्ति भर सकता है, कि आप स्वयं पूर्ण चैतन्यमय होकर क्रियाशील हो सकते हैं। विजयादशमी विजय का आह्वान करने का दिवस है, जिससे आपको अपने प्रत्येक कार्य में विजय ही प्राप्त हो, शत्रुओं पर आपका ऐसा तेजस्वी प्रभाव पड़े, कि वे आपके सामने झुके ही रहें, पूरे वर्ष में स्तम्भन, शत्रु बाधा निवारण। तांत्रिक दोष निवारण हेतु इस दिवस को की गई साधना अत्यंत शीघ्र फलदायक रहती है।

विजयादशमी के दिन की जाने वाली कुछ विशेष साधनाओं का विवरण नीचे दिया जा रहा है, आप आवश्यकता के अनुसार कोई एक प्रयोग अथवा सभी प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, इस हेतु केवल आवश्यकता इस बात की है, कि आप में साधना के प्रति दृढ़ निश्चय हो, व पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सम्पन्न करें।

विजय प्रदाता भैरव साधना

जब कार्य में निरन्तर बाधांए आ रही हों, साथ ही साथ शत्रु आप पर जरूरत से ज्यादा हावी हो रहे हों, अर्थात् आप कार्य को जिस रूप से सम्पन्न करना चाहते हैं, उस रूप में सम्पन्न नहीं कर पा रहे हों, अथवा छोटी-छोटी बातों पर लोग आपके शत्रु बन जाते हों, तो उन शत्रुओं से सम्बन्धित जो बाधा, मानसिक क्लेश प्राप्त होता है, उसके निवारण हेतु विजयादशमी की रात्रि को यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। यह भैरव का एक विशेष प्रयोग है, जो कि विशेष तंत्र ग्रंथों में ही दिया गया है, इस हेतु आप कुछ विशेष सामग्री की व्यवस्था पहले से ही अवश्य कर लें, क्योंकि साधना में बैठने के पश्चात् उठ नहीं सकते हैं।

इस साधना में आठ मिट्टी के दीपक, सिन्दूर, काजल, चावल, पुष्प, मौली, काला धागा, **'चार भैरव चक्र'**, **'विजय माला'**, काला वस्त्र, धूप, दीप, अगरबत्ती, सरसों, अष्टगंध के अतिरिक्त अन्य सामान्य पूजा सामग्री आवश्यक है, यह साधना शांत मन से, धैर्य चित्त से, प्रबल आत्म विश्वास के साथ सम्पन्न करनी चाहिए, देवता भी उसी साधक पर प्रसन्न होते हैं, जो कि अपने आप में पूर्ण विश्वास रखते हैं।

सर्वप्रथम स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने-सामने लकड़ी के तख्ते पर काला वस्त्र बिछा कर बीचो-बीच 'भैरवमूर्ति' स्थापित करें, अथवा **'शालिग्राम की मूर्ति'** में भैरव का आह्वान कर स्थापित करें। इस पर सिन्दूर, चावल, पुष्प, अष्टगन्ध आदि चढ़ाएं। चारों कोनों में दो दीपकों को जोड़ कर काले डोरे से बन्द कर दें और उसमें सरसों तथा एक-एक सुपारी अवश्य रखें इनके पास ही बाहर प्रत्येक मिट्टी के दीपक के पास भैरव चक्र स्थापित करें, अब सारी तैयारी हो जाने के पश्चात दीपक जलाएं, एक बार दीपक जलाने के पश्चात इस साधना में स्थान से उठना वर्जित है।

सर्वप्रथम गुरु ध्यान कर गणेश पूजा करें, इसके पश्चात भैरव पूजा कर अपनी बाधाओं के शमन एवं नाश हेतु प्रार्थना करें, यदि भैरव का चित्र प्राप्त हो सके, तो उसे भी अवश्य स्थापित करें, एवं बांया घुटना जमीन पर टिकायें, तथा दांया पैर जमीन पर रखते हुए सीधे बैठें और इस वज्र मुद्रा से तथा इस विजय माला से नीचे दिये गये बीज मंत्र की पांच मालाएं जप करें, इस पूरे समय में दीपक निरंतर जलते रहने चाहिए।

बीज मंत्र

॥ॐ भ्रं ह्रीं क्लीं शत्रुहन्तायै भैरवाय फट् ॐ॥

अन्तिम माला के जप के समय अपने पास एक बर्तन में सरसों लेकर प्रत्येक मंत्र के जप के समय प्रत्येक दिशा में निरन्तर सरसों फेंकते रहें, इससे सभी दिशाओं में भैरव जाग्रत होकर किसी भी दिशा में स्थित शत्रु तथा कार्य बाधा दूर कर देते हैं, जैसा कि ऊपर लिखा है, यह साधना रात्रि 10 बजे के बाद ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना के पश्चात् साधक उसी स्थान पर सो जाय, और दीपक को रात भर अवश्य जलता रहने दें, और प्रातः जल्दी उठ कर चारों मिट्टी के दीपक जो कि बन्द हैं, तथा उनमें सरसों है तथा भैरव चक्र किसी चौराहे पर ले जाकर रख दें, रखने के पश्चात् पुनः मुड़ कर उस तरफ न देखें।

यह साधना सिद्ध हो जाने के पश्चात साधक के कार्य में बाधाएं एकदम दूर होनी प्रारंभ हो जाती हैं तथा शत्रुओं का बुद्धिबल क्षीण होने लगता है।

साधना सामग्री - 390/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

उच्छिष्ट चाण्डालिनी प्रयोग

उच्छिष्ट चाण्डालिनी, देवी का तीव्रतम स्वरूप है, जिसमें देवी अपने शत्रुओं का नाश तीव्र गति से करते हुए उन्हें शत्रु से शव बना देती है। जीवन में रोग, दुःख पीड़ा, बन्धन, दुर्भाग्य शत्रु ही हो तो हैं, और जब तक इन शत्रुओं को पूर्णतः मार ही नहीं दिया जाता, तब तक जीवन में पाप नष्ट नहीं होते और जीवन में सुख, मुक्ति सौभाग्य तथा पराक्रम की प्राप्ति नहीं होती। यह अभीष्ट सिद्धि की साधना है। इसमें तीन प्रकार के मंत्र हैं -

1. सर्व पाप दोष नाश हेतु

ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठ मातंगी नमामि उच्छिष्ट चाचण्डालिनी त्रैलोक्यं वशंकरी स्वाहा हूं।

2. शत्रु नाश हेतु

उच्छिष्ट चाण्डालिनी सुमतुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः॥

3. सर्व सिद्धि हेतु

उच्छिष्ट चाण्डालिनी मातंगी सर्व वशंकरी नमः स्वाहा॥

साधना रहस्य

यह साधना तात्कालिक सफलता की, विजय की, महाविद्या साधना है। इसमें विशेष प्रकार की सामग्री का प्रयोग होता है। साधक लाल वस्त्र धारण करें तथा रात्रि में विजया दशमी का सिद्ध मुहूर्त सांय 4.12 से रात्रि 9.48 मिनट के मध्य यह साधना प्रारंभ कर दें। इस साधना में मुख्य रूप से तीन वस्तुओं की आवश्यकता रहती है।

1. आठ उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र, 2. तंत्र विजय यंत्र, 3.तांत्रोक्त सिद्धि चक्र।

इसके अतिरिक्त आठ लोहे की कीलें, तिल, तेज का दीपक, सिन्दूर तथा नैवेद्य के रूप में लड्डू के अतिरिक्त सायंकाल किये गये भोजन का अंश भोग के रूप में रखें। इस साधना में साधक को कैंची अपने पास अवश्य रखनी चाहिए।

दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने सामने एक बाजोट पर लोहे की थाली में त्रिकोण सिन्दूर से बनावें, सिन्दूर से स्वयं के तिलक करें।

तत्पश्चात् अपने सामने उस थाली में त्रिकोण के मध्य में **'तंत्र विजय यंत्र'** स्थापित कर बाजोट पर आठ दिशाओं में उच्छिष्ट चाण्डालिनी की आठ शक्तियों का ध्यान करते हुए प्रत्येक उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र को कैंची से स्पर्श कराकर आठ दिशाओं में स्थापित कर दें। तांत्रोक्त सिद्धि चक्र को सिन्दूर से लेपन कर उसके साथ एक सुपारी रख कर लाल कपड़े में बांध कर अपनी बांई दिशा में रख दें। साधना प्रारंभ करने से पहले ही साधक तेल का दीपक तथा धूप अवश्य जला दें, जब तक अनुष्ठान चल रहा हो कमरे के भीतर प्रवेश न करें।

अब अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक कार्य हेतु अथवा अमुक कार्य में विजय प्राप्त करने हेतु, अमुक मुकदमे में सफलता प्राप्त करने हेतु अथवा अमुक बाधा हटाने हेतु। (जिस प्रकार का भी कार्य हो), उसका संकल्प लेते हुए उच्छिष्ट चाण्डालिनी देवी को साक्षी रखते हुए यह जल भूमि पर छोड़ दें। अब आठ लोहे की कीलें, आठ चाण्डालिनी चक्र को ऊपर रख दें तथा वीर मुद्रा में बैठ कर उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करें।

ध्यान मंत्र

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर-परिच्छदाम्।
रक्तालंकार-संयुक्तां गुंजा-हार-विभूषिताम्॥
षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत-पयोधरम्।
कपाल-कर्तृ का-हस्तां पराज्योतिः स्वरूपणीम्॥

शवासन पर स्थित रक्त वर्ण के वस्त्र पहिनें तथा रक्त वर्ण आभूषणों से विभूषित देवी उच्छिष्ट चाण्डालिनी षोडश वर्षीय, ज्योति अलंकृत गुंजाहार से सुभोभित बाएं हाथ में नर कपाल तथा दाहिने हाथ में कैंची लिये हुए, पूर्ण ज्योति स्वरूपा एवं अपने साधक पर पूर्ण कृपा कर विजय प्रदात्री देवी को इस साधक का प्रणाम।

अब साधक नैवेद्य का अर्पण कर दोनों हाथ जोड़ कर शांत मुद्रा में बैठें, तत्पश्चात् अपने कार्य के अनुसार पीछे दिये गये मंत्र का उच्चारण प्रारंभ करें। इस सिद्ध विद्या हेतु एक हजारं आठ बार मंत्र का जप आवश्यक है, मंत्र जप करते समय वीर मुद्रा में बैठें और कैंची अपने आसन के नीचे रखें।

मंत्र जप अनुष्ठान पूर्ण होते ही अपने स्थान से उठ कर सामने जो सामग्रियां रखी हैं उनमें उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र लोहे के कीलों सहित तांत्रोक्त सिद्धि चक्र को घर के बाहर कहीं पर भी गड्ढा खोद कर गाड़ दें और उस पर एक भारी पत्थर रख दें तथा पीछे मुड़ कर न देखें।

घर आकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में जाकर **'तंत्र विजय यंत्र'** को धूप दीप लेकर काले डोरे से गले में या बांह में धारण कर लें। यह विजय प्रयोग प्रबल प्रयोग है, इससे भयंकर से भयंकर बाधा शांत हो जाती है।

ध्यान रखें कि अपनी तांत्रोक्त साधना की चर्चा किसी से भी न करें।

साधना सामग्री - 410/-

निःशुल्क उपहार

बल, बुद्धि, शौर्य, निडरता प्राप्ति हेतु
भूतप्रेत, निर्बलता, भय अनिष्ट निवारण हेतु

हनुमान सिद्धि यंत्र



यह सत्य है, कि जीवन सीधा-सादा नहीं है, जीवन में तो सैकड़ो परेशानियां हैं, संकट हैं, सैकड़ों अड़चनें हैं पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार हैं; वे जो हमें ऊंचा उठता देखकर पीठ पीछे से सैकड़ों प्रकार के षड्यंत्र तैयार कर लेते हैं और हमारा सारा जीवन विषाद, तनाव, बाधाओं, अड़चनों और परेशानियों से जूझते हुए व्यतीत होने लगता है... और हम जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते, और वह यदि नहीं कर पाते तो जीवन एक साधारण जीवन बन करके रह जाता है।

फिर किस प्रकार इस जीवन में तेजस्विता, उत्साह, प्रफुल्लता और जोश आये? कौन सा ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दिखा सकें कि एक सामान्य परिवार में उत्पन्न होकर भी बहुत कुछ कर सकते हैं - यह बहुत कुछ कर देने की क्षमता 'हनुमान सिद्धि' के माध्यम से संभव है।

साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर 'हनुमान सिद्धि यंत्र' स्थापित करें एवं स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के ही आसन पर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठें। सामने तेल का दीपक जलायें एवं गुड़ का भोग (घी में सान कर) लगायें तथा मूंगे की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें।

॥ ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा॥

इस प्रकार नित्य प्रति रात्रि में ही (दस बजे के बाद) 11 दिन तक करें। प्रतिदिन जो भोग लगाएं रात में मूर्ति के सामने ही रहने दें एवं दूसरे प्रातः यह भोग हनुमान के भक्तों में वितरित कर दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। यह अनुष्ठान 11 दिनों का है। बारहवें दिन यंत्र को किसी हनुमान मंदिर में दक्षिणा सहित अर्पित कर दें। साधना काल में साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान-'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि ''मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'हनुमान सिद्धि यंत्र'** 390/-(20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/-+ डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें'', आपका पत्र आने पर हम 300/-+ डाक व्यय 90/-=390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'हनुमान सिद्धि यंत्र'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

-: सम्पर्क :-

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

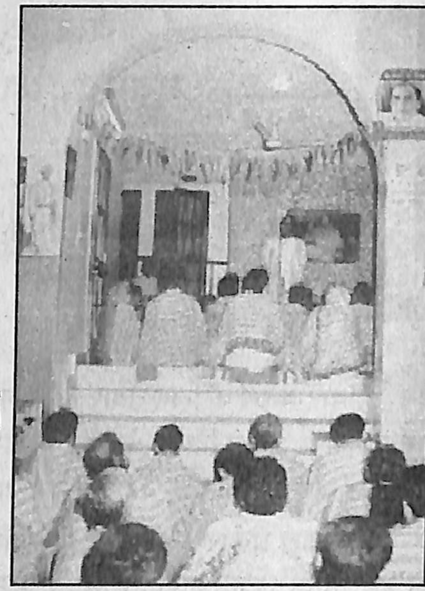
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती है जो कि उस दिन शाम **6** से **8** बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 26-10-07 — **षोडश योगिनी प्रयोग**

यह तो अपने आप में अद्वितीय प्रयोग है। इसे सिद्ध करने की प्रत्येक साधक के मन में इच्छा रहती ही है। षोडशी योगिनी साधना सम्पन्न करना अपने आप में तंत्र की ऊंचाईयों की ओर कदम बढ़ाना है। एक ही प्रयास में तंत्र की प्रचण्डता को अपने जीवन में उतार लेने की क्रिया सम्पन्न करना है, मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि के साथ-साथ वायुगमन, जल गमन, योग में पूर्णता, अदृश्य होने की क्षमता आदि अनेक अलौकिक शक्तियों को प्राप्त करना, अद्वितीयता व श्रेष्ठता को प्राप्त करने की क्रिया सम्पन्न करना है। जिसने भी यह अद्भुत और अद्वितीय साधना सम्पन्न कर ली, उसके जीवन के शब्दकोश में फिर असम्भव जैसा कोई शब्द रह ही नहीं सकता ... एक दुर्लभ और सर्वथा गोपनीय प्रयोग ... और इसे प्रत्येक साधक साधिका सिद्ध कर सकते हैं।

शनिवार, 27-10-07 — **साबर धनदा प्रयोग**

आयु, आरोग्य, उमंग, उत्साह, परम सौन्दर्य से सम्पन्न धर्म पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र और अन्य सभी सुख उस समय बेकार लगते हैं, जब धन का नितान्त अभाव हो। हमारे ऋषियों-महर्षियों ने ऐसे अनेक उपाय बताये हैं, जिनसे अर्थ का अभाव दूर किया जा सकता है। फिर जब परम पूज्य गुरुदेव स्वयं ही आकस्मिक धन प्राप्ति की विशिष्ट रश्मियों से युक्त साधना सामग्री पर यह प्रयोग साधकों को सम्पन्न करायें तो निश्चय ही यह ऐसा अवसर है जिसे किसी भी कीमत पर हासिल कर लेना ही चाहिए। आप अपने परिवार के अन्य सदस्य के लिये भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र भेंट में देकर उसे यह सुअवसर प्रदान कर सकते हैं।

रविवार, 28-10-07 — **व्यापार वृद्धि, कार्य सिद्धि प्रयोग**

क्या आप व्यापारी हैं और आपके अथक प्रयासों के उपरान्त भी आपके व्यापार में मनचाही वृद्धि नहीं हो पा रही है या किसी व्यापारिक कार्य में बाधा आ रही है और कार्य सिद्ध नहीं हो रहा है अथवा आप व्यापार करना चाहते हैं, परन्तु अनुकूल स्थितियां नहीं बन पा रही हैं, तो आपको निश्चय ही इस साधना में भाग लेना चाहिए, जिससे कि आपका मनोवांछित सिद्ध हो सके ... आप व्यापार करते हैं लेकिन आपको फायदा नहीं होता है बल्कि आपको घाटा हो जाता है तथा आपके व्यापार को किसी ने बांध दिया है इसलिए आप एक बार अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करें, फिर देखें कि आपके व्यापार में वृद्धि होती है या नहीं। साधना के द्वारा ही आप अपने व्यापार में प्रसिद्धि हासिल कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए आप कार्य सिद्धि प्रयोग को एक बार अवश्य ही करें।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्ही दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 240/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 460/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

<u>योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 26-27-28 अक्टूबर</u>

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकरा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट <u>मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान</u> के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

<u>शक्तिपात युक्त दीक्षा</u>

नवार्ण दीक्षा

यह मंत्र मात्र अपने भीतर विराट शक्तियों को समेटे हुए है। जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, शिव के मुख से निकली अग्नि एकाकार होकर विराट् शक्ति पुंज बन गई और उसने दुर्गा महाकाली का रूप धारण कर लिया, इसी प्रकार शक्ति के सभी मंत्रों का पूंजीभूत स्वरूप 'नवार्ण मंत्र' है, इसके प्रत्येक अक्षर में शक्ति के एक-एक रूप का विवेचन है, नवार्ण मंत्र जपने मात्र से शक्ति जाग्रत होती है, शरीर में ऊष्मा व्याप्त होने लगती है, रोम-रोम जाग्रत होने लगता है। ऐसे महामंत्र की साधना दीक्षा जब गुरु कृपा से प्राप्त होती है तो शक्ति का आह्वान होता ही है।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ....।
* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .
* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांय ७ बजे प्रदान की जाएगी।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700

Mahalakshmi Sadhana

I had reached an age where soon I had to burden the responsibilities of life. It is a sacred tradition in our family to seek the guidance and blessings of our revered Sadgurudev before starting anything. I too thought of doing so before launching my career. But a call to Jodhpur and I came to know that Sadgurudev was engaged in some Sadhana of his own and would not meet anybody for at least a few months.

Hence I had to begin my business without his blessings. I started off with great enthusiasm and courage. I had just about settled in business when problems started coming up. First I dealt them with courage but soon the onslaughts became so frequent that I started feeling helpless before them. Within a few months my business collapsed and I was filled with great disappointment so much so that I felt like giving up everything and running away.

One day without informing anybody I left for Jodhpur and reached Sadgurudev's Ashram. But there I was told that he would emerge from Sadhana only after two months. I decided to stay there and share the work in the Ashram. The in-charge of the Ashram knew me well and he allowed me to do so. I even started wearing ochre robes meant for ascetics.

After two months Sadgurudev came out of his Sadhana room finally. He looked a bit lean. When his eyes fell on me a look of disappointment came on his features. But he did not say anything. The next day he called me and asked me why I was there. I was unable to relate my misadventures to him so he asked me to write them on a paper and give it to him. This I did and having read it he said," I did not expect such cowardly behaviour from you. You are deceiving yourself. Do you think by wearing ochre robes you shall be free from your family responsibilities? True, ascetic life is wonderful but it is not for escapists. You have to go back."

He fell silent and then continued, "I know you are facing problems but there are solutions for them in Tantra. You shall have to accomplish Lakshmi Sadhana. Maybe you do not know but even the great Guru Shankaracharya had to accomplish Lakshmi Sadhana. Otherwise how would he have been able to establish four divine spiritual seats all over India? A real man never bows down before adversities. He attains victory over them through Sadhanas if need be."

Later he made me accomplish a very special Mahalakshmi Sadhana. I returned home and restarted my business and within a year I had achieved amazing success. If today I am so wealthy, prosperous and happy it is due to that powerful ritual. With Sadgurudev's permission I am revealing it here for benefit of others.

Start this ritual on a **Wednesday.** At night after 10 pm have a bath and wear clean red clothes. Make a mark with vermilion on the forehead. Sit on a red mat facing South. Cover a wooden seat with red cloth. In a plate draw a Swastik with saffron. On it place some rose petals. On them place a **Mahalakshmi Yantra**. Light a ghee lamp. Offer vermilion, rice grains, rose petals on the Yantra. Offer prayers to Lord Ganpati chanting **Om Gam Ganpataye Namah** five times. Thereafter chant one round of Guru Mantra and pray to Guru for success. Then with a **Kamalgatta rosary** chant 51 rounds of following divine Mantra –

Om Shreem Hreem Kleem Shreem Om Phat

Do this for two days. After that drop the rosary in a river or pond and place the Yantra in your worship place or your shop or business centre. Briefly worship it daily by lighting incense and chanting the above Mantra just 11 times.

Sadhana Articles – 360/-

Any Moonless Night

Remove Hurdles in Life

Remove Illeffects of Tantra

Vindhyavasini Sadhana

Life means walking on the sharp edge of a sword. There never is an end to the problems of life. Success means winning in the various ordeals of life in spite of the problems and travails that one has to go through.

Problems and hurdles in life never can be predicted. Nor do they announce their advent. Ailments, poverty, problems from the state side, obstacles in business – there is simply no end to the list of problems that one might have to face in life. And on top of all this if someone uses some evil ritual against you then you would have it.

Can Sadhanas help one get rid of and protect one self from the various problems of life? Sure they can! In the field of Sadhana the Goddess Vindhyavasini is most known for her protective powers. Ask any expert of the science of Tantra and he shall tell you that if a person has attained success in Vindhyavasini Sadhana then no problem could deter him, no obstacle could obstruct his way and no evil ritual or person could harm him.

Vindhyavasini Sadhana is a wonderful ritual for freeing oneself of all fears, problems, pains and anxiety. Due to the grace of the divine Mother Goddess one is filled with divine energy and then the problems of life fail to disturb one. It is a key that opens up the door to success in life for once one has no longer to worry about problems one could make remarkable progress in one's sphere whether it is in the material world or the spiritual.

This is a eleven day Sadhana that must be started in a **moonless night** or **Amavasya**.

At night after 10 pm have a bath and wear red clothes. Make a mark with vermilion on the forehead. Sit on a red mat facing South. Cover a wooden seat with red cloth. In a plate place some rose petals. On them place a ***Vindhyeshwari Yantra***. Light a ghee lamp. Offer vermilion, rice grains, rose petals on the Yantra.

Offer prayers to Lord Ganpati chanting ***Om Gam Ganpataye Namah*** five times. Then chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Next chant following Mantra concentrating on the divine form of the Goddess in your mind.

Arunn-chandan-vastra-vibhooshitaam, Sajal-toyad-tulyanarooruhaam. Smarkurangdrisham Vindhyavaasini Kramuknaaglataa-dal-pushpkaraam

Place seven betel nuts in a line before the Yantra and then offer vermilion on each chanting one of the following Mantras each time.

Om Kaamdaayei Namah, Om Maandaayei Namah, Om Naktaayei Namah, Om Madhuraayei Namah, Om Madhuraan-naayei Namah, Om Narmadaayei Namah, Om Bhogdaayei Namah.

Then with a ***rock crystal (sfatik) rosary*** chant 51 rounds of following divine Mantra –

Ehyehi Yakshi Mahaayakshi Vindhyavaasini Sheeghram Me Sarva Tantra Siddhim Kuru Kuru Swaahaa

Do this for eleven days. After that drop the Yantra and rosary in a river or pond. Tie the seven betel nuts in a black cloth and place the bundle in a sacred place in your house. This shall banish all problems from your house and make your life easier and smoother.

If tried with full faith and concentration there can be no better Sadhana for a householder to get rid of the various problems and obstacles of life.

Sadhana Articles – 300/-

Kaaldev Mrityunjay Sadhana

How could I forget those days? Each moment I would be in the grip of a strange, gut-wrenching fear! And what more for no reason at all. There was just a strange, unexplainable apprehension that something evil was about to happen. I was even then a very success-ful businessman. oney, property, a happy family life – I had everything one could ask for. But for past one month I was steadily losing my confidence for no ap-parent reason and every moment I felt as if some accident was about to occur and that I was about to die.

Early from my childhood I had been initiated into worship of Lord Shiva and constantly chanting the Mantra ***Om Namah Shivaay*** did calm my mind a bit. But I felt that I needed to do something more. I con-sulted many priests and had worships performed as sug-gested by them but with no great relief.

About two torturous months later I was travel-ling by air from Bombay to Delhi. My fear had be-come all the more strong during this time. As I took my seat I found a middle aged gentleman seated by my side. He was dressed in the traditional white *Dhoti Kurta*. There was something about his face that kept drawing my at-tention.

At last I asked him who he was. As he gave his intro-duction I realised I was before one of the great-est as-trologers of recent times – Dr. Narayan Dutt Shrimali. Then off course I knew him in only this ca-pacity. We got talking and about half an hour later I realised that the fear that had beset my mind for the past two months had somehow abated. A strange calm had overcome me.

I do not know what came over me but the relief was so immense that I started weeping. Right there in the aeroplane. Dr. Shrimali kindly asked me what it was and I let him know everything. Dr. Shrimali im-medi-ately opened his briefcase and took out a writing pad. He started writing on it and for the next few min-utes remained busy with it. Then he tore out the page and handed it over to me. He said, "Don't ask me how but I know you are an ardent devotee of Lord Shiva. Just try this Sadhana and all shall soon be fine." He also handed me a Yantra and a rosary.

Once in Delhi the first thing I did was try the Sadhana he had suggested, for I felt a strange surge of faith within. A month later I had a terrible accident when I was trav-elling in my car from Delhi to Agra. A truck rammed into my car. The car was crushed and very miraculously I was thrown out of it and escaped un-hurt. This was the danger I had been apprehending all along and Dr. Shrimali saved me from it by suggesting the Sadhana. Later of course I met him and came to know of his great work as a Guru to millions of Dis-ciples. He also told me that the first time we had met he had known that an accident was about to occur and that was why he had suggested the Sadhana to me. I took Diksha from him and have since been his ardent devotee. I am reproduc-ing this amazing Sadhana here for the benefit of the Sadhaks. Anyone who suffers from the fear of accidents, enemies, un-timely death can try this Sadhana with amazing results.

This Sadhana must be started on a **Monday**.

Early morning have a bath and wear white clothes. Sit on a white mat facing North. Cover a wooden seat with white cloth. On it place a picture of Sadgurudev and Lord Ganpati. Worship them by offering vermil-ion, flowers and rice grains. On a mound of rice grains in a plate place a ***Mrityunjay Yantra (amulet)***. On the Yantra place the ***Raksha Gutik***a. Take water in the right palm and speak thus – *I* (speak your name) *am per-forming this Sadhana for protection from all dangers.* Let the water flow to the floor. Offer rice grains and vermilion on the Yantra and Gutika. Light a ghee lamp and incense. Then chant one round of Guru Mantra. Thereafter chant five rounds of this Mantra with a ***Rudraksha rosary***.

Om Aagat Anaagat Kaaldevaay Preetyarthe Namah Om

Do this daily for twenty two days. Thus the Sadhana shall be completed on a Monday. On the 22nd day move the Gutika around your head and throw it in the South direction from your home. Wear the Yantra amulet in a string around your neck and keep the rosary in the wor-ship place.

Sadhana articles – 360/-

12-13 अक्टूबर 2007

त्रि-शक्ति जगदम्बा साधना, बोकारो

शिविर स्थल : मजदूर मैदान, सेक्टर-4, बोकारो (झारखंड)

बोकारोः पी.एन.पांडेय - 094311-27345 Oशुभेश्वर झा - 094317-39993 Oडॉ. एस.के.बरियार - 093347-77028 Oडॉ.ए.के.सिंह- 094317-38874 Oडॉ.आर.पी.सिंह - 094317-39106 Oमोहन सिंह - 093041-01742 Oविजय कुमार झा - 094313-79234 / 06542-246899 Oएस.के.सिंह - 099343-7199i Oए.के.सिन्हा - 0092343-02957 Oबी.एन.के.श्यामला - 098351-85477 Oलोकेश नाथ मिश्र - 098353-55388 Oसंतोष कुमार ठाकुर - 098355-31083 O गोपाल ठाकुर - 094311-45601 Oचिन्तामणि - 093341-02642 O डॉ.आर.एन.प्रसाद - 098351-47865 Oअनिल कुमार शर्मा O गेन्दू कपरदार - 099393-25775 Oजे.पी.लाल - 094311-45861 O महेश्वर प्रसाद 'ओंकार' - 092343-08411 Oमदन प्रसाद - 06542-270064 Oसिद्धेश्वर प्रसाद - 093342-30265 Oआर. पी.एस.देवगम - 06542-270768 Oआर.सी.प्रसाद - 06542-270458 Oश्रीमति नीलम सिंह Oसमरेन्द्र सिंह - 094313-23194 Oओम प्रकाश झा - 094310-66097 Oएन.के.दुबे - 0094317-75892 Oपी.एन.सिंह - 093340-46717 Oके.डी.प्रसाद - 093040-80710 Oअजय कुमार झा - 094301-54038 Oप्रो. श्रीकान्त सिन्हा - 098353-59018 Oइन्द्र कुमार झा - 099395-71906 Oके.के.सिंह - 094311-87895 Oनागेन्द्र तिवारी - 094313-23147 Oके.डी.प्रसाद - 093341-53249 Oअरुण वर्मा - 093342-31579 Oसदानंद साह - 094313-23538 Oअरुण कुमार शर्मा - 099554-63445 Oराम भूषण सिंह - 094317-35824 Oमनोरंजन मिश्रा - 093334-29693 O**चंदनक्यारीः** अमर बाउरी - 099315-40657 O**बोकारो थर्मलः** रमाकान्त चौधरी - 094315-10289 O**फुसरोः** भगवान दास - 099341-17533 Oसोहराय लोहार - 093041-34947 Oजय प्रकाश चौहान - 099343-25794 Oधनेश्वर सिंह - 099555-25249 Oतुलसी सिंह - 099315-38161 Oसुरेश नोनिया - 099345-55463 Oचांदू रतन बाउरी - 099341-79439 Oअमरेन्द्र मिश्र - 093045-55781 Oप्रह्लाद राम - 093342-18423 O**जमशेदपुरः** वाई.एम.मूर्ति - 0657-3209590 Oहरदीप सिंह - 098351-32336 Oअभय कुमार वर्मा - 098355-63288 Oरामबाबू सोनकर - 093348-04480 O**रांचीः** बालमुकुन्द नाथ शहदेव - 093348-02197 Oविनोद कुमार सिन्हा - 094315-79976 Oराजेश मिश्रा - 093344-24422 Oरंधीर कुमार सिन्हा -093347-26743 Oज्योति स्वरूप - 094311-05907 Oमोहन कुमार शर्मा - 094311-75892 O**बुण्डूः** अनूप O सिद्धाश्रम साधक परिवार - 094313-60296 O**जादूगोड़ाः** महावीर काउंटिया - 094313-74978 O**घाटशिलाः** डॉ.के.मिश्रा - 06585-225899 Oनंदलाल भूसाल - 098359-12234 O**विष्णुगढ़ः** डॉ.एस.एन.लाल - 093311-40675 O**केदलाः** डिले करमाली - 094319-17568 O**दनदनिया (खलारी)ः** रोहन सिंह - 094301-40957 O**आदरः** सुनील कुमार गुप्ता - 093340-54339 O**सिजुआ (धनबाद)ः** आर.के.राय - 094319-54268 Oअनुज सिन्हा - 098353-69456 O**कतरासः** सच्चिदानंद सिंह - 098355-27995 Oमन्नू चौधरी - 099057-16410 Oप्रदीप भदानी - 098355-62509 O**बलियापुरः** युधिष्ठर महतो - 093340-18453 O**तेतुलमारीः** अशोक चौहान - 093340-63213 O**बस्ताकोलाः** सुरेश साव - 094313-18453 O**चासनालाः** राजू साव - 03263-202950 O**पटनाः** योगेन्द्र कुमार सिंह - 0612-2550221 Oमधु श्रीवास्तव - 093341-64335 Oरामचन्द्र मिश्र - 094308-90517 O**मुजफ्फरपुरः** रामअनेक सिंह - 098350-48155 O**शिवहरः** प्रमोद गुप्ता - 093346-59590 Oपंकज कुमार - 093345-12375 O**दरभंगाः** उपनन्द यादव - 098354-32550 O**लौकहाः** गगनदेव यादव - 06277-287280 O**कोलकाताः** आनंद मिश्रा - 033-24008782 Oसत्यदेव पांडेय - 09811-46998 O**हावड़ाः** विजय शंकर दीक्षित - 033-26584003 O**न्यू बैरकपुरः** सपन दास - 092316-36018 O**कांचरापाड़ाः** कामेश्वर सिंह - 09811-90352 Oजगदीश सिंह O**वाराणासीः** आर.सी.सिंह - 094153-43066 Oएच.एन.सिंह बिसेन - 094153-18363 O**विराटनगर (नेपाल)ः** विशाल पांडेय Oसिद्धाश्रम साधक परिवार, नेपाल - 00977-9852023325/00977-21535425 O

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

17 अक्टूबर 2007

अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर, आगरा

शिविर स्थल : महाराजा अग्रसेन भवन, लोहा मण्डी, शाहगंज मार्ग, आगरा

जया-संजय - 094112-06768 Oराममीणा - 094127-50415 O जवाहरलाल गोयल **(गाजियाबाद)** - 0120-4108400 Oएस.के. कुल श्रेष्ठ - 098975-35587 Oदुर्गेश शर्मा - 098370-04234 O गोकर्ण सिंह-094127-05837Oसुभाष चन्द वर्मा-094118-36339

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

19-20 अक्टूबर 2007

नवदुर्गा चैतन्य साधना, बलांगीर

शिविर स्थल : कौशल कला मण्डप, बलांगीर (उड़ीसा)

सदानंद पंडा - 094371-58514 ○मनोज पात्र - 094371-66775 ○डॉ. सत्यवादी मंजदेव - 094373-66634 ○रामपाल सेनापती - 094370-60796 ○प्रमोद दास - 099381-70010 ○प्रहलाद दर्जी - 098610-94673 ○भीमसेन नंदा - 094375-78679 ○बासुदेव भोई - 094377-08021 ○रणरोज सिंहदेव - 094370-37605 ○प्रेमराज बहीदार - 09853-14399 ○बासुदेव रथ - 098612-06909 ○सानन्द बारिक - 094371-45983 ○संजीव वेदवाक - 094374-29027 ○शिवराम साहु - 099373-04628 ○शशांक शेखर राउत- 094372-07590 ○मुकेश अग्रवाल - 094371-54776 ○शुभ्रांशु दास - 094371-46388 ○अरूण मिश्रा - 099371-03692 ○जदुमणी दास - 099373-30248 ○श्रावन स्वांइ - 099385-52663 ○निरंजन छल - 098611-16000 ○पवन अग्रवाल ○अभीजीत मजमुदार ○प्रकाश नायक - 094371-59014 ○भीमसेन वेहेरा - 094374-48391 ○अच्युतानन्द - 094374-20052 ○ललीत परमार - 094371-21270 ○मोहनलाल शेचेवानी ○सुरथ धारूआ - 098614-41054 ○गंगाधरं महापात्र - 094370-47584 ○प्रेमनारायण मिश्रा - 094372-23989 ○सुमन्त भाई - 094371-19484 ○अरबिन्द पुरसेत - 094370-51506 ○अच्युत घोष - 094374-20052 ○रंजन कुमार महापात्रा ○राजेश राउत - 094370-97577 ○हनुमान जी ओसवाल - 06847-264736 ○सम्बलपुरः रघुनाथ मेहर ○ललित सारंगी ○

◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇

04 नवम्बर 2007

दस महाविद्या साधना शिविर, वलसाड

शिविर स्थल : राजपूत समाज हॉल, कस्तूरबा हॉस्पिटल के पास, वलसाड (गुजरात)

देवेन्द्र पंचाल - 099988-74612/093762-25004 ○शंकर भाई प्रजापति - 099781-96517 ○जयाबेन भण्डारी - 093279-51341 ○रंभा विनोद सिंह - 099691-05506 ○जयेश पंचाल - 094274-79275 ○जयेश बलसारा - 98984-77861○पी.जे.पटेल - 098247-33420 ○सुमन भाई भंडारी - 098241-97278 ○प्रवीण भाई भंडारी - 093748-66635 ○अखिलेश सिंह - 093774-16105 ○संजय शर्मा - 098241-31909 ○ईश्वर आर्ट - 098252-62272 ○ईश्वर भाई भंडारी - 092284-30065 ○चन्द्रप्रभा बेन कापड़ी - 098247-34230 ○जगदीश भाई - 093742-49519 ○पुष्पा पांडे - 093226-74321 ○डॉ. चौधरी - 093239-79318 ○एन.एम.सावंत - 094226-82145 ○अे.के.झा - 093717-20968 ○सुरेशभाई कोली - 093750-28169 ○आंकिन भंडारी - 093770-08475 ○दामुभाई पटेल - 099249-44404 ○

◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇

08-09 नवम्बर 2007

दीपावली महोत्सव, जोधपुर

शिविर स्थल : गुरुधाम, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर

हम सभी जोधपुर स्थित गुरु भाई- बहन गुरु परिवार एवं

◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇

09 दिसम्बर 2007

गणपति साधना शिविर, पुणे

शिविर स्थल : डांगे चौक, थेरगाव, चिंचवड, पुणे

अनिल सुपेकर – 098224-12665 ○हरिचंद्र कदम – 099226-40064 ○सुरचंद्र कुदळे – 098201-57161 ○वात्सल्य सक्सेना ○डॉ.शिल्पा भोकरे – 020-27460116/098819-68896 ○अशोक भागवत – 093734-35775 ○रविन्द्र लुगडे– 098607-05606/093710-20581 ○दुष्यंत नेसर्गि – 093731-40116 ○बालासाहेब बालवडकर – 093724-75449 ○बालासाहेब पाटिल – 098810-68206 ○विजय सुवर्णा – 092261-65939 ○दत्तात्रय कविस्कर – 099602-58116 ○सुनील गायकवाड – 098233-25950 ○आशुतोष मालवीय – 098810-90230 ○रवि पाटिल – 098902-24567 ○विनोद पंवार – 098814-70271 ○दिपक उम्बरकर – 098814-90385 ○संतोष सुपेकर – 098909-82411 ○लक्ष्मण डोंगरे – 098904-36907 ○शिवाजी देवकर – 098229-78382 ○सुरेश चव्हाण ○बसवराज कोली – 099709-08634 ○दिपक पंचबुद्धे – 099603-54484 ○कनुभाई वाला ○बगाराम राठोड ○**सताराः** विलास पंवार – 02378-285476 ○ एकनाथ कदम – 02168-241617 ○शिवाजी शिंगटे ○अनिल खटवकर – 098818-64909 ○**नगरः** प्रविण भांडेकर – 095241-2428572 ○**औरंगाबादः** व्हि.एस.जंगाले – 098900-14101 ○**सेलुः** सुनिल राउत – 099234-50493 ○**सोलापुरः** वैभव कराले – 099230-57229 ○**जालनाः** मनोज गिल्डा – 098230-34414 ○

◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇

23 दिसम्बर 2007

अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर, शिमला

शिविर स्थल : श्रीराम मन्दिर हॉल, नजदीक बस स्टैण्ड, शिमला (हि.प्र.)

◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇ ◇◇ ◇ ◇◇ ◇◇◇

पड़ा, कृष्ण को मथुरा छोड़ कर द्वारिका भागना पड़ा और वे 'रण छोड़' कहलाये ... कौन बच सका है नवग्रहों के अनिष्ट प्रभाव से ...?

इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएं, मानसिक परेशानियां, कार्य में विलम्ब, असफलता, मानहानि, आर्थिक क्षति, बीमारी और कई प्रकार की समस्याएं नित्य पैदा होती रहती हैं। जब इस प्रकार की स्थिति देखें, तो यह जान लें, कि किसी न किसी ग्रह का प्रभाव आपको विपरीत फल दे रहा है।

मेरे अनुसार तो प्रत्येक ग्रह की चेतना और उसका प्रभाव आपके शरीर में व्याप्त होना चाहिए और उसके लिये आवश्यक है कि हम उन ग्रहों के बीच में एक सामंजस्य बिठा सकें, जिससे जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके।

आपके लिये नवग्रह-मुद्रिका आवश्यकः-

आपको जीवन में नवरस चाहिए, आपको अपने जीवन में प्रत्येक ग्रह के गुण चाहिए। आपको अपने जीवन में घर, परिवार, व्यापार, नौकरी तथा शरीर की अनुकूलता भी चाहिए। सबके लिये रत्न खरीदना संभव नहीं। इसके लिये सबसे श्रेष्ठ उपाय है कि आप ''मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त नवरत्न मुद्रिका'' धारण करें, जिसमें सारे रत्न माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, गोमेद, लहसुनिया, पुखराज, हीरा और नीलम सब जड़े हुए हों। जब सब ग्रहों के रत्न से युक्त मुद्रिका होगी तो आकाशमण्डल स्थित ग्रह और आपके शरीर स्थित ग्रह अपने आप एक सामंजस्य स्थापित कर लेंगे।

आप अपने परिवार के मुखिया हैं, कमाने वाले हैं, घर के इञ्चार्ज हैं, आपसे आपके घर-परिवार को जाना जाता है न कि आपकी पत्नी या आपके बच्चों से आपको जाना जाता है। इसलिए यह नवरत्न मुद्रिका आपको धारण करनी आवश्यक है।

गुरुदेव अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि ''*एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाये*'' और ''*जो तू सींचे मूल को तो फल काहे न होय*'' अर्थात् एक को साधने से ही सब साधन सिद्ध हो जाते हैं और मूल अर्थात् जड़ को यदि हम पानी खाद देते हैं तो वृक्ष के फल लगते ही हैं। पत्तों को जल देने से वृक्ष पर फल नहीं लग सकते। हजार जगह भटकने से मन को शांति नहीं मिल सकती। हजार गुरु बनाने से शिष्यता नहीं आ सकती। हजार व्यक्तियों का कहना मानकर आप अपना कोई निर्णय नहीं ले सकते हैं, इससे तो आपका स्वयं का व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार बार-बार रत्न बदलने, से दस-दस अंगूठियाँ पहनने से ग्रह दोष शांत नहीं हो सकता, ग्रहों के गुण, तेजस्विता नहीं आ सकते। इसके लिये केवल एक ही उपाय है कि आप **'मंत्र-सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न मुद्रिका'** धारण करें।

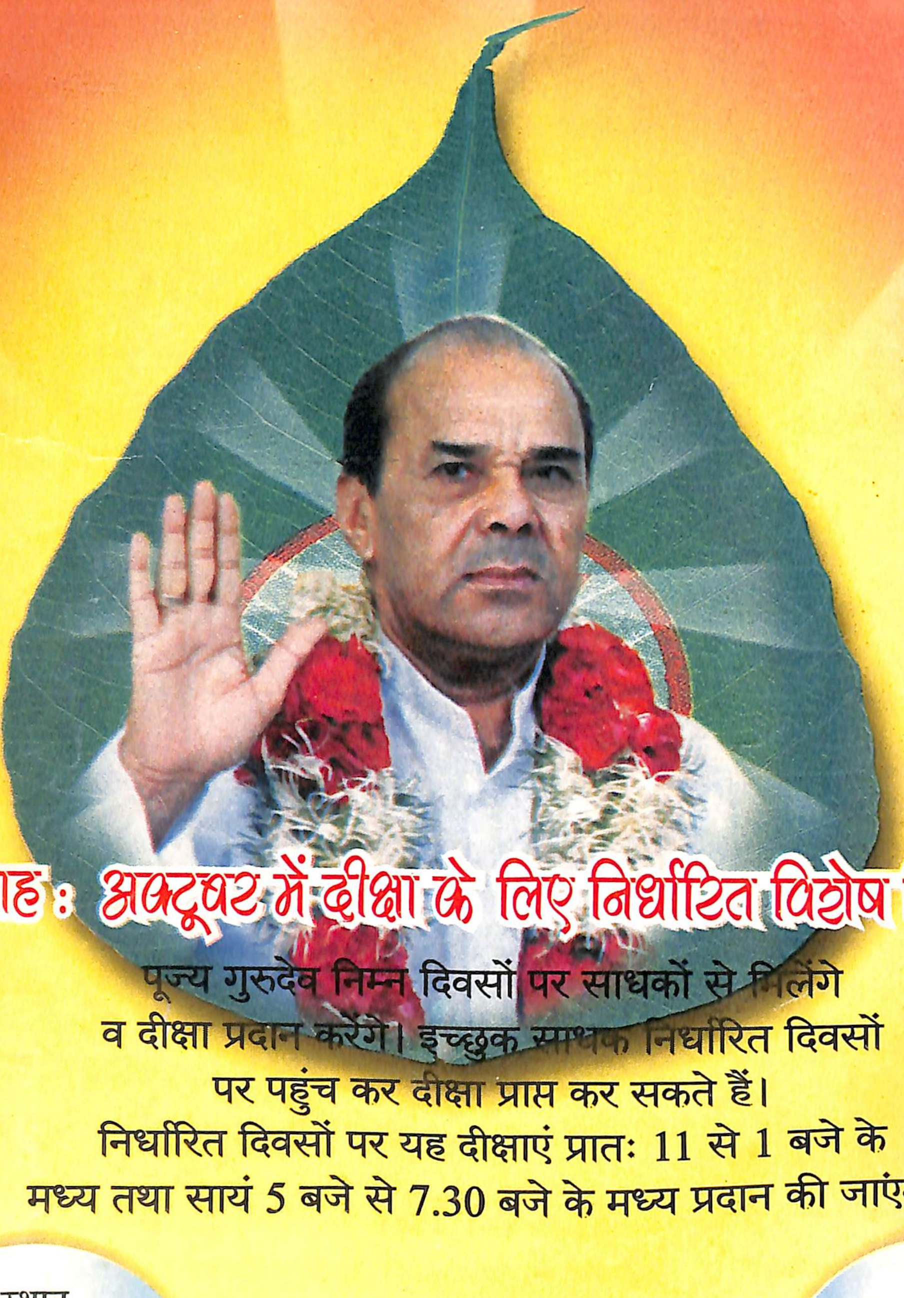
आवश्यकता इस बात की है कि यह नवरत्न मुद्रिका प्रत्येक ग्रह के मंत्रों से अभिमंत्रित हो, शिव-अभिषेक युक्त हो तथा शुद्ध मुहूर्त में निर्माण कर, शुद्ध मुहूर्त में ही धारण की जाए।

नवरत्न मुद्रिका एक मुद्रिका नहीं है, यह तो आपकी जन्म कुण्डली है, आपका जीवन चक्र है, जिसको धारण करते ही ग्रहों की गति और उनका प्रभाव आपके अनुकूल हो जाता है, और मेरा निश्चित विश्वास है कि आपको पहले दिन से ही अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन अनुभव होने लगेगा। आप नवरत्न मुद्रिका धारण करें और उसका प्रभाव नहीं हो, ऐसा हो ही नहीं सकता।

मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त नवरत्न मुद्रिका - 600/-

रजिस्ट्रेशन नं- **35305/81** A.H.W
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2006-08
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2006-08



माह : अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
दिनांक
07-08-09 अक्टूबर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
दिनांक
26-27-28 अक्टूबर

वर्ष - 27

अंक - 09

:: संपर्क ::
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209,2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700